मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 55 | अंक : 8 | फरवरी, 2015 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹10

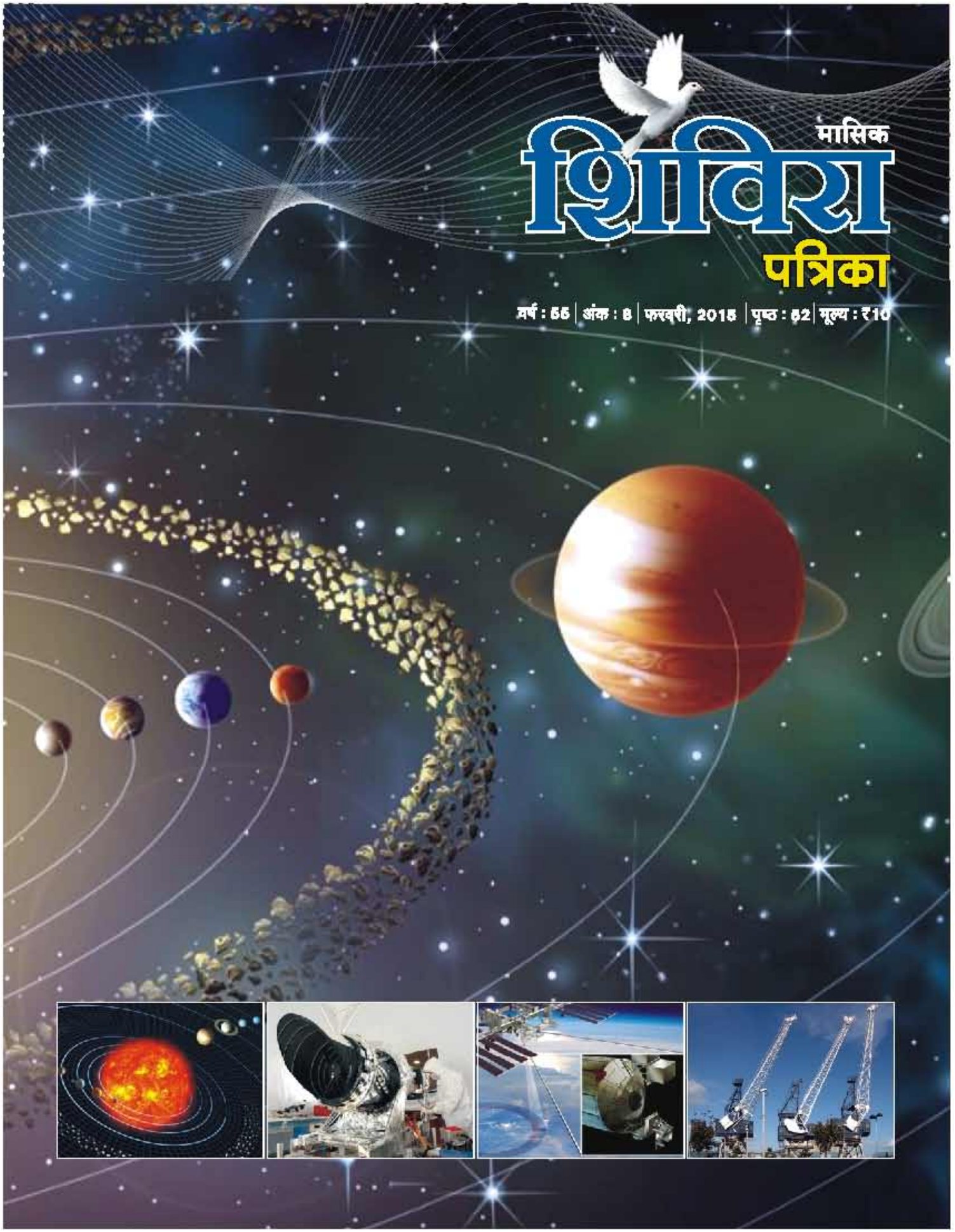

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 55 | अंक : 8 | माघ–फाल्गुन २०७१ | फरवरी, 2015

प्रधान सम्पादक
सुवालाल

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश शास्त्रवत

सहायक
एस. के. सिंह
मुकेश व्यास
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
फैक्स : 0151–2201861
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- नव विज्ञान, नव-नव विज्ञान — 5
  आलेख
- विज्ञान और आध्यात्म — 6
  सुभाष चन्द्र कस्वां
- विज्ञान शिक्षण की नई विधाएँ — 7
  हरीश कुमार वर्मा
- भारत रत्न : डॉ. चन्द्रशेखर वैंकटरमन — 8
  प्रहलाद शर्मा
- वैज्ञानिकों में संत और संतों में वैज्ञानिक — 9
  करणीदान कच्छावा
- महर्षि अरविन्द की अनुयायी श्री माँ — 10
  राजेश रंगा
- सद्गुरु दिनी रै बधाय, दलाली हीरा लालन की — 11
  मक्खन लाल पुरोहित
- उत्सव-पर्वों की सार्थकता सिद्ध करें स्कूल — 14
  गुरचीत सिंह बराड़
- परीक्षा क्यों और किसलिए — 15
  डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर
- एकात्म मानववाद के द्रष्टा : — 17
  पं. दीनदयाल उपाध्याय
  आत्माराम नवलगड़िया
- पाठ्येतर पुस्तकें पढ़ने की आदत — 18
  डॉ. चेतना उपाध्याय
- प्रेम और वैराग्य की मूर्ति : भक्त रविदासजी — 20
  हरजीत सिंह बंग
- आनन्द महल बनावे — 21
  बाल कृष्ण शर्मा
- दृष्टि-संयम के फलितार्थ — 22
  डॉ. एस. दयाल गुप्ता
- नशा नाश का कारण — 24
  नरोत्तम देवी
- स्वतंत्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है — 30
- विद्यालय जिसने रचा नूतन इतिहास — 31
  भंवर सिंह
- स्मरण शक्ति का वैज्ञानिक आधार — 33
  डॉ. एच.एन.एस. भटनागर
- स्पर्शों से जानिये रोगोपचार — 34
  शंकरलाल माहेश्वरी
- भारतीय शिक्षा के स्वरूप की संकल्पना — 35
  चतरंग प्रसाद मलेवी
- प्राथमिक स्तर पर नामांकन एवं ठहराव — 36
  सुनीता चावला
- नोडल विद्यालय : संकल्पना एवं संभावनाएं — 39
  संजय सैंगर
- सत्यार्थ प्रकाश में सत्य का बोध — 40
  डॉ. सुधीर कपानी
- लार्ड मैकॉले पब्लिकस्कूल आंदोलन के जनक — 41
  संजय सैंगर

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

- रोहावाटी का हृदय स्थल है सीकर — 43
  भगीरथ सिंह माहिच

स्तम्भ

- आदेश-परिपत्र — 25–28
- शिविरा पंचांग — 29
- मेरे अनुभव-मेरे विचार — 23, 38
- शाला प्रांगण से — 42
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम — 45

हम आह का गीत

- साधना का पथ कठिन है — 16

पुस्तक समीक्षा — 46–49

- राजस्थानी लोक संस्कृति के विविध आयाम :
  डॉ. बसन्ती हर्ष, समीक्षक : अंशु प्रभा श्रीमाली
- मूंधी वैश्विक कहानियां : पुष्पलता कश्यप
  समीक्षक : डॉ. आईदानसिंह भाटी
- मरुधरा और दूजी कहानियां : बुलाकी शर्मा
  समीक्षक : सरल विशारद
- कर्मिला : सत्यनारायण इन्दौरिया
  समीक्षक : वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी
- तात्पर्य : कुन्दन माली
  समीक्षक : डॉ. मदन गोपाल लढ़ा
- हँसो भी...हँसाओ भी... : हलीम 'आईना'
  समीक्षक : अली रॉकेट्स

प्रतिध्वनि

- गांधी का रामराज्य और राम का चरित्र — 50

आवरण :
अविनाश कुमावत, जयपुर मो. 09261355185

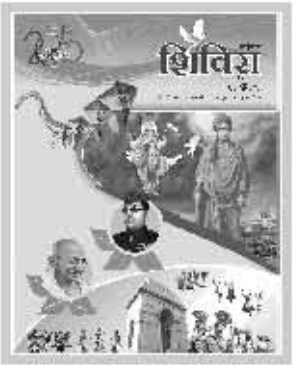

▼ **विचार**

"शिक्षा का सच्चा उद्देश्य यह है कि अपने चारों ओर के अद्भुत संसार को समझा जाए, आत्मसंयम को विकसित किया जाए और अपने घर और समाज की प्रसन्नता के लिए योगदान किया जाए। ऐसा करने से शिक्षा एक आनन्ददायी, अति उत्साहवर्धक और प्रेरणादायक अभियान बन जाती है।

-डॉ. डी. एस. कोठारी

(पौत्र आदित्य एवं प्रिंसु को 1991 में लिखे आशीर्वाद पोस्टकार्ड से)

- दिशाकल्प में निदेशक महोदय की ये पंक्तियां रेखांकित करते हुए बड़ा अच्छा लग रहा है- 'अनौपचारिक रूप से उनमें उत्तम संस्कारों का बीजारोपण शिक्षक ही करते हैं, मातृ-पितृ देवो भव:।' वर्तमान में इस आलेख से प्रेरणा लेने की अति आवश्यकता है। इसका अभाव एकाकी परिवारों में देखने को मिलता है जिससे बालकों में बड़ों के अनुभव और उनके प्रति सम्मान की भावना का ह्रास हो रहा है। प्रतिध्वनि के तहत बहुत सी अज्ञात जानकारियां दी है जो ज्ञानवर्धक है। साथ ही जब हम भारत को विश्व गुरु की बात करते अथवा सुनते हैं तो जो छवि प्रथमतः नयन मंडल से उभर कर आती है वह मोहक छवि विवेकानंद की ही होती है, किसी और की नहीं। वाक्य में वजनदार बात कहकर व.सं. महोदय ने प्रशंसनीय कार्य किया है। भारत ही तन-हृदय तिरंगा, प्रकाश स्तंभ बुझ गया, आओ सार्थक रंग भरें जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण आलेख है।

-मनमोहन अभिलाषी, भरतपुर

- मैं विद्यालय में शिविरा मासिक पत्रिका नियमित रूप से मँगवाता हूँ। मुझे हमारी सांस्कृतिक धरोहर लेख बहुत अच्छा लगता है तथा इसमें हमें हमारी संस्कृति के बारे में सीखने को मिलता है तथा हम युवा बेरोजगारों को जनरल नॉलेज की जानकारी भी हो जाती है यदि इसमें युवाओं के लिए रोजगार परक जानकारी व शिक्षा के बारे में जानकारी दी जाये तो शिविरा मासिक पत्रिका के प्रति युवाओं को आकर्षित किया जा सकता है तथा ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले बेरोजगार शिक्षितों का भला हो सकता है।

-गोविन्द कुमार शर्मा, चन्दवासी

- "सम्पूर्ण विश्व के लिये प्रासंगिक" जनवरी 2015 अंक में आलेख 'महासेतु थे स्वामी विवेकानंद' पढ़ा। स्वामी विवेकानंद वो महान विभूति थी जिनके विचार व आदर्श भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिये आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितना उस समय थे। विवेकानंद जी मानव नहीं महामानव थे उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व नई पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेंगे। उनका जन्मदिन राष्ट्रीय युवा दिवस के बजाय अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में भी मनाया जाये तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी क्योंकि वो सम्पूर्ण विश्व के युवाओं के लिये प्रेरणास्त्रोत है। शिविरा के इस अंक में दी गई विवेकानंद जी के जीवन एवं दर्शन के बारे में दी गई महत्वपूर्ण जानकारी प्रशंसनीय है। संपादक मंडल को बधाई।

-देवकीनन्दन शर्मा, भगोगा (सीकर)

- शिविरा जनवरी 2015 के अंक में "दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ" में माननीय निदेशक महोदय ने उत्तम संस्कारों का बीजारोपण शिक्षक ही करते हैं और विद्यार्थी अपने सफल व सुखदायी भविष्य के आधार बनते हैं। यह संदेश अनुकरणीय है। 'प्रतिध्वनि' के अन्तर्गत वरिष्ठ सम्पादक श्री ओमप्रकाश जी सारस्वत द्वारा प्रस्तुत स्वामी विवेकानन्द और राजस्थान की जानकारी अति प्रशंसनीय है। शिविरा पत्रिका का प्रत्येक शिक्षक ग्राहक बनना चाहिए व पढ़नी चाहिए तथा विद्यार्थियों को उनके योग्य जानकारी भी देनी चाहिए।

-मानसिंह कस्वाँ, दोबड़ा (झुन्झुनू)

- शिविरा जनवरी 2015 के अंक में 'महासेतु थे स्वामी विवेकानंद',प्रतिध्वनि के अंतर्गत स्वामी विवेकानंद और राजस्थान, सुभाष चन्द्र बोस के जीवन दर्शन में शिक्षा आदि अत्यंत सारगर्भित एवं उपयोगी आलेख है। इस हेतु लेखकगणों को हार्दिक साधुवाद। स्वामी विवेकानंद जी की पद्य रचना का भाव-रूपांतरण वीर हृदय दृढ़ रहो कभी मत विचलित होना, नयी आशा का संचार करता है। सुभाष चन्द्र बोस के ऐतिहासिक पत्र (दि. 22-4-21) का प्रकाशन दुर्लभ एवं उद्वेलन वाला है। शिक्षा विभाग द्वारा विभिन्न छात्रवृति योजनाओं की जानकारी उपयोगी सिद्ध होगी। वस्तुतः शिविरा जनवरी 2015 का यह अंक उपयोगी एवं संग्रहणीय है।

-मोहनलाल जांगिड़, नौकानेर

- जनवरी, 2015 नव वर्ष, नवीन सामग्री से संकलित अंक मिला। दिशाकल्प में निदेशक महोदय के विचार शिक्षकों की उज्ज्वल परम्परा दिल की गहराइयों को छूकर शिक्षकत्व का बोध कराने वाला है। स्तम्भ में नया आलेख मेरे अनुभव-मेरे विचार प्रेरणाप्रद, आत्मबोध जगाने वाला है। श्रीमान् रंगा जी का लेख महासेतु थे विवेकानंद प्रेरणाप्रद एवं नई-पुरानी जानकारी को अद्यतन करने वाला है। पत्रिका में समाहित सभी लेख उच्च कोटि के एवं शिक्षाप्रद है। प्रतिध्वनि में विवेकानंद और राजस्थान लेख में खेतड़ी महाराज द्वारा प्रदत्त सहायता से विश्वधर्म सम्मेलन में भागीदारी एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का फैलाव प्रेरणादायी है।

-हजारीराम बिश्नोई, देणोक (फलौदी)

सत्यमेव जयते

सुवालाल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

जय विज्ञान, जय-जय विज्ञान

वर्तमान युग विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का क्रान्तिकारी युग है। वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण हमारे जीवन में अनेक भौतिक सुविधाएं उपलब्ध हो गई है जिनकी हमारे पूर्वजों ने कदाचित कल्पना ही नहीं की होगी। परिवहन, संचार एवं चिकित्सा के क्षेत्र में हुए वैज्ञानिक आविष्कार किसी चमत्कार से कम नहीं लगते। विज्ञान के इन्हीं चमत्कारों को देखकर हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने जय जवान–जय किसान के साथ जय विज्ञान का नारा दिया था।

इस माह, 28 फरवरी, 2015 को हम राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाएंगे। लगभग नौ दशक पूर्व 1928 में आज ही के दिन भारत के महान वैज्ञानिक डा. चन्द्रशेखर वेंकटरमन ने रमन प्रभाव की खोज की थी। डॉ. रमन द्वारा 2000 से भी अधिक यौगिकों के अणुओं का अध्ययन कर जो निष्कर्ष दिये गये, उनके परिणाम को रमन प्रभाव (Raman effects) नाम से पहचान व प्रतिष्ठा मिली एवं उन्होंने 1930 में नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया। विज्ञान दिवस के अवसर पर हमें रमन सर को स्मरण करते हुए उनके समर्पण एवं प्रतिबद्धता को याद करना चाहिए।

राज्य सरकार का संकल्प उच्चतर माध्यमिक स्तर के अध्ययन–अध्यापन में विज्ञान विषयों की सुविधा बढ़ाने का है। इस संकल्प को पूरा करने के लिए वर्ष 2015–16 में अधिकाधिक सीनियर सैकण्डरी स्कूलों में विज्ञान संकाय संचालित करने का प्रयास किया जा रहा है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की वर्ष 2015 की परीक्षाओं का आगाज प्रायोगिक परीक्षाओं की शुरूआत के साथ हो चुका है। अगले महीने सैद्धांतिक परीक्षाएं प्रारम्भ होंगी। ये दिन मनोयोगपूर्वक पढ़ने–पढ़ाने के हैं। परीक्षा पैटर्न के आधार पर सुनियोजित तैयारी करवाने के लिए विशेष उपचारात्मक कक्षाएं लगाकर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन शिक्षक करें, यह मेरी अपेक्षा है। मुझे विश्वास है कि शिक्षकों के समर्पण एवं प्रतिबद्धता से हम इस वर्ष बेहतर परीक्षा परिणाम दे सकेंगे।

इस माह में महाशिवरात्रि का महान पर्व होने के साथ ही महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं संत रविदास जयन्ती भी है। विद्यालयों में इन उत्सवों का उल्लासपूर्वक आयोजन कर समाज में समरसता, समन्वय एवं सहयोग का संदेश दिया जाना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर भावी पीढ़ी संस्कारमय आदर्शों पर चलने में समर्थ होवे, जिसका दारोमदार शिक्षकों के कार्य एवं व्यवहार में निहित है।

शुभकामनाओं के साथ,

(सुवालाल)

"ये दिन मनोयोगपूर्वक पढ़ने–पढ़ाने के हैं। परीक्षा पैटर्न के आधार पर सुनियोजित तैयारी करवाने के लिए विशेष उपचारात्मक कक्षाएं लगाकर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन शिक्षक करें, यह मेरी अपेक्षा है। मुझे विश्वास है कि शिक्षकों के समर्पण एवं प्रतिबद्धता से हम इस वर्ष बेहतर परीक्षा परिणाम दे सकेंगे।"

विज्ञान दिवस

विज्ञान और आध्यात्म

❒ सुभाष चन्द्र कस्वां

धर्म का शाश्वत उद्घोष 'सत्यमेव जयते' की संकल्पना पर ही विज्ञान उस सत्य को अनवरत खोजने में लगी हुई है। यह सही बात है कि विज्ञान हर जगह मुक्त चिंतन का पक्षपाती रहा है। वजह यह है मुक्त चिंतन ही बंधी-बंधाई सोच से बाहर निकाल कुछ नए की ओर आकर्षण पैदा करता है। सह-अस्तित्व एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग आज महज नैतिक आदर्श नहीं अपितु वैज्ञानिक आदर्श भी हैं। आज विज्ञान व धर्म में आपसी सहयोग साफ नजर आ रहा है क्योंकि विज्ञान जानता है कि विज्ञान को इस ऊँचाई तक पहुंचाने में प्रारम्भिक जो पायदान मिला उसका निर्माण धर्म ने ही किया। महाभारत के युद्ध के समय अंधा धृतराष्ट्र युद्ध का ताजा ब्यौरा जानने के लिए संजय से कहता है। बताते हैं संजय ने अपनी दिव्य-दृष्टि से मीलों दूर बैठे धृतराष्ट्र को युद्ध का आंखों देखा हाल सुनाया था। यद्यपि यह बात कोरी काल्पनिक होगी फिर भी दिव्य-दृष्टि की परिकल्पना ने बेयर्ड को टेलीविजन आविष्कार की वैज्ञानिक पहल के लिए प्रेरित अवश्य किया होगा।

पेड़ों व वन्य जीवों का हमारे धर्म एवं संस्कृति में पवित्र एवं पूजनीय स्थान रहा है। पेड़ों में पीपल एवं तुलसी का धर्म में सबसे बड़ा स्थान रहा है। पीपल जिसे धार्मिक आस्था में मनोकामना पूर्ण करने वाले वृक्ष दर्जा दिया गया है। यही कारण है कि औरतें पीपल की अर्चना करती है। तुलसी का पौधा हमारे आंगन की शोभा बढ़ाता है। धार्मिक आस्था के हिसाब से तुलसी में देवी लक्ष्मी का निवास होता है जो परिवार की सुख-समृद्धि में इजाफा करती है। आज के हमारे विज्ञान ने पीपल एवं तुलसी की महता वैज्ञानिक दृष्टिकोण से की है वह तो और अधिक रोमांचकारी है। वैज्ञानिक अनुसंधानों ने जब पीपल की उपयोगिता को खंगाला तब पाया कि यही एक ऐसा वृक्ष है जो दिन-रात ऑक्सीजन को हवा में छोड़ता है। अनुसंधान में पाया तुलसी औषधियुक्त पौधा है। तुलसी की पत्तियों में पारा होता है जो व्यक्ति को कई प्रकार के रोगों से मुक्त करने की शक्ति देता हैं। विज्ञान ने इन धार्मिक मान्यताओं को अंधविश्वास कह कर नकारा नहीं बल्कि नजदीक जाकर अपने अन्वेषण से यह साबित कर दिया कि वास्तव में यह पूजनीय हैं।

धार्मिक आस्था में किसी भी प्रकार के जीव जंतु को मारा जाना एक बड़ा अपराध व हिंसा है। भले ही राजस्थान के विश्नोई समाज के हरिण शिकार में अपराधी को सजा दिलवाने जंगल से जज तक पहुंचने के सफर को हम धार्मिक आस्था का मसला कह संतुष्टि पाले पर विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि पारिस्थितिकी तंत्र को सहेजने के लिए वन्य जीवों का संरक्षण अति आवश्यक है। परिस्थितिकी तंत्र के असंतुलित होने से पृथ्वी की सुन्दरता समाप्त हो जाएगी।

हमारा सत्य, शिव और सौन्दर्य सनातन धर्म से ही खिला। किसी एक भगवान, देवदूत, ऋषि या ग्रन्थ के सूत्र निष्पादित नहीं माने गए। सनातन धर्म में अपनी ही निष्पत्तियों और प्रतीतियों को अतिक्रमित करने की सदाबहार वैज्ञानिक प्रवृत्ति रही है। महाभारत ने समसामयिक राष्ट्रीय चुनौतियों का यथार्थ रखा और साथ में धर्म परम्परा के सत्य तत्व का निरूपण भी। श्रुति, स्मृति, पुराण और ब्रह्म सूत्र जैसे अनेक प्रवाहों से युक्त धर्म व्यक्ति को ''और जान लेने'' की प्रेरणा देता रहा तथा यही और अधिक जानने की जिज्ञासा ही तो वैज्ञानिक प्रवृत्ति व प्रगति का खास लक्षण भी माना जाता है। गीता में धर्म को जनसमूह की आस्था नहीं बताया गया- गांधीजी संभवतः इसी पर मोहित थे। गीता अपने तरीके से धर्म की व्याख्या भी करती है। कृष्ण के धर्म में धर्म का तात्पर्य प्रकृति है। प्रकृति से विरक्त कोई भी व्यक्ति जीवन में खुशी व उमंग नहीं पाता, लेकिन प्रकृति से बंधकर भी कोई व्यक्ति मुक्ति नहीं पा सकता। गीता का कर्म सिद्धांत धर्म से मजबूती पाकर विज्ञान के उस रहस्य को प्रकट कर डाला जिससे बाद में विज्ञान की 'जीवन थॉरी' सामने आई।

धर्म में जागरूकता के पक्ष को न देखने वाले को धर्म निठेलेपन का पर्यायवाची नजर आ सकता है। धर्म के इस स्वरूप को न समझकर ही कार्ल मार्क्स ने धर्म को अफीम की संज्ञा तक दे डाली थी। पाकिस्तान के पेशावर शहर में 15 दिसम्बर, 2014 को जो सैनिक स्कूल के 123 बच्चों व 8 अध्यापकों के साथ जो निर्मम हत्याकाण्ड हुआ उसमें अफीम की बू ही आती है। जो हाथ किसी गिरते हुए को उठाने के लिए भगवान दिए हैं, उन्हीं हाथों में ए-के- 47 राइफल जो सुरक्षा के लिए विज्ञान की देन हैं ने निहत्थे व निर्दोष लोगों की हत्या की वे दहशत के सौदागर बन विज्ञान व धर्म दोनों की साथ-साथ हत्या भी कर डाली। सच पूछा जाए तो विज्ञान और धर्म को एक-दूजे से पृथक करना व्यावहारिक जीवन के लिए घातक सिद्ध होगा। आइंसटीन ने विज्ञान और धर्म के बीच समतामूलक तथ्य को खोजा है। उनके अनुसार धर्म अभाव में विज्ञान पंगु है तथा विज्ञान के अभाव में धर्म अंधा है। आइंसटीन के अनुसार धर्म हमारे गन्तव्य स्थान को निश्चित करता है तो विज्ञान हमारे समक्ष उन साधनों को रखता जो लक्ष्य की प्राप्ति निर्भरता का संबंध है। धर्म और विज्ञान में विरोध तभी होता है जब धर्म अपनी सीमा को त्यागकर संसार की वैज्ञानिक व्याख्या करने लग जाता है। विज्ञान धर्म को मुल्ला-मौलवी व धर्माचार्यों को ढकोसला मात्र ही न माने। उसमें छुपी अच्छाई व बुराई को वैज्ञानिक अन्वेषण का सहारा ले लोगों के सम्मुख रखे। विज्ञान व धर्म की अपनी सीमा रेखाएँ हैं जिसके अतिक्रमण का प्रयास वे कभी न करें। इससे दोनों में संतुलन व सहयोग हमेशा बना रहेगा।

यदि धर्मशास्त्र के आदि और अंत पर ध्यान दिया जाए तो ज्ञात होता है कि सृष्टि विज्ञान को जानना ही धर्मशास्त्र का आदि रूप था जिसका विकास धीरे-धीरे विज्ञान के रूप में हुआ। वास्तव में विज्ञान की प्रगति जिस विधि से हुई है, वह धर्म के अन्दर से ही हुई है। विज्ञान ज्ञान प्राप्त करने की विधि है। इस विधि में जो विषय चुना जाता था वह मूलतः धर्म का ही विषय रहा है। एक अर्थ में विज्ञान हमेशा धर्म का उन्नायक रहा है। विज्ञान लोक ज्ञान का ही विकसित एवं सुव्यवस्थित रूप है। इसलिए इसके विकास के साथ-साथ धर्म में भी तदनुरूप विकास होना जरूरी है।

विज्ञान ने एक बहुत बड़ा धर्म किया है वह यह कि दूरसंचार व यातायात के साधनों ने मनुष्य के बीच की दूरी को कम किया है पर दुखद बात यह है कि दिलों की दूरियां बढ़ती जा रही हैं। दिलों की दूरियों को कम करने का काम विज्ञान की बजाय धर्म ही अधिक बखूबी से निभा सकता है।

-व.अ., रा.मा.विद्यालय, हेतमसर, नूंआ (झुंझुनू)
मो. 9460841575

विज्ञान

विज्ञान शिक्षण की नई विधाएँ

❒ हरीश कुमार वर्मा

आज के इस वैज्ञानिक युग में नित्य नवीन आविष्कार एवं नूतन प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे हैं। कम्प्यूटर, ई-मेल एवं इन्टरनेट के क्षेत्र में विज्ञान कई गुना आगे प्रगति कर चुका है।

ऐसे वातावरण में हमारे विद्यालयों में शिक्षण कराने वाले शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को भी नूतन आयामों से अवगत होना अतिआवश्यक होगा। केवल सैद्धांतिक पक्ष को ही उपयोग में लेने से कक्षा में विज्ञान शिक्षण अधूरा कहलायेगा। कक्षा 9 व 10 में विज्ञान विषय विद्यार्थियों के लिए प्रायः कठिनाई भरा महसूस होता है। यदि प्रत्येक विज्ञान शिक्षक इस विषय को पूर्ण मनोयोग एवं बाल केन्द्रित शिक्षण के रूप में अध्यापन कराता है तो निश्चित ही बालकों को बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नत हो सकेगा।

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु कुछ सुझाव निम्न प्रकार से हैं, जिनका लाभ अध्यापन एवं विद्यार्थी वर्ग प्राप्त कर सकते हैं-

1. विद्यालयों में शिक्षक सामान्य विज्ञान विषय को प्रभावी एवं पूर्ण रुचिपूर्वक बनाकर शिक्षण कार्य करावें।
2. विज्ञान शिक्षण में अधिकतम सहायक सामग्री, जैसे-चार्ट्स, आशुरचित उपकरण मॉडल, स्वयं द्वारा निर्मित चार्ट्स व उपकरण, प्रयोगशाला एवं स्थानीय परिवेश में उपलब्ध वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा समय-समय पर प्रायोगिक कार्य कराना।
3. कक्षा-शिक्षण के अन्तर्गत अति लघु-उत्तरात्मक, लघु-उत्तरात्मक एवं अन्य रिक्त स्थान एवं निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर लिखा कर नियमित अभ्यास करना।
4. गृहकार्य/लिखित कार्य के अन्तर्गत निबन्धात्मक व निर्धारित भाग में पंक्तिबद्ध प्रश्न दिये जायें ताकि बालक स्वयं अपने घर पर उनके उत्तर लिखकर अभ्यास कर सकेगा।
5. विज्ञान शिक्षक स्वयं यदा-कदा विज्ञान के नवाचारों से जानकारी प्राप्त करते रहें, एवं अभिनव-प्रशिक्षण शिविरों से सम्पर्क बनायें रखे, ताकि बालक भी उनसे निरन्तर नवीन ज्ञान की प्राप्ति करते रहें।
6. कक्षा में अध्यापन के समय ही, विज्ञान शिक्षक, प्रत्येक पाठ में से परिभाषा सूत्र सिद्धांत व नियमों का चयन कर लिखा देवें, ताकि छात्रों की अवधारणा सुस्पष्ट हो जाये। यह आवश्यक है।
7. श्यामपट्ट पर स्वयं शिक्षक आवश्यक चित्र, उपकरणों की जानकारी व सम्बन्धित सूत्र को अंकित करें ताकि बालक भी उनका अभ्यास कर सकें।
8. गत 10 वर्षों के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षा के प्रश्न पत्र कक्षा में ही सभी बालकों द्वारा हल करावें एवं एक आदर्श प्रश्न पत्र का भी निर्माण करके प्री-बोर्ड परीक्षा की तरह जनवरी माह में छात्रों की परीक्षा लेकर जाँच करावें।
9. कक्षा में दल शिक्षण द्वारा विज्ञान के पाठ को समझाने का प्रयास करना, उदाहरण के लिए-आँख की सरंचना को जीवन विज्ञान का शिक्षण समझावे तथा नेत्रदोष व लेंस की जानकारी भौतिक विज्ञान से सम्बन्धित शिक्षक पढ़ावें। वायुमण्डल की संरचना, ग्रह-उपग्रह की जानकारी, अन्तरिक्ष से सम्बन्धित जानकारी भूगोल विषय से सम्बन्धित अध्यापक पूर्ण रुचि से पढ़ा सकते हैं।
10. वाचनालय, पुस्तकालय में उपलब्ध सन्दर्भ साहित्य, विज्ञान, प्रगति, विभिन्न विज्ञान की अन्य पत्र-पत्रिकाएँ एवं उपलब्ध सन्दर्भ साहित्य के द्वारा विज्ञान शिक्षक कक्षा में छात्रों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण अभिनिर्मित करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।
11. अर्द्धवार्षिक परीक्षा में परिणाम के आधार पर स्वयं विषयाध्यापक, कक्षा में अध्ययनरत् बालकों को तीन श्रेणी में वर्गीकृत करके उन्हें विधिवत् मार्गदर्शन प्रदान करावें, श्रेष्ठ, मध्य एवं औसत-स्तर के बालकों को पृथक-पृथक समूह में सहायता करें, ताकि वे निरन्तर पढ़ने में प्रगति कर सकें।
12. बोर्ड परीक्षा में विज्ञान विषय के चित्र बनाते समय रंगीन स्केच पेन का उपयोग भी अनिवार्यतः विद्यार्थी करें, तो सुन्दर व आकर्षक चित्रों द्वारा उन्हें अधिकतम अंक प्राप्त हो सकेंगे।
13. प्रत्येक विद्यालय में विज्ञान विषय में अभिरुचि रखने वाले शिक्षक एक विज्ञान भवन या परिषद का गठन करें एवं विभिन्न गतिविधियों से जुड़े, ताकि बालकों से विज्ञान विषय के प्रति रुचि जागृत हो सकेगी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण व एकाग्रता का विकास भी सहज हो सकेगा।
14. विद्यालय-स्तर पर, प्रार्थना सभा, शनिवारीय कार्यक्रम, बालचर प्रवृत्ति, शारीरिक शिक्षा प्रवृत्ति एवं समाजोपयोगी उत्पादन कार्य एवं समाज सेवा प्रवृत्ति के अन्तर्गत विज्ञान के आशुरचित उपकरणों, चार्ट्स एवं मॉडल की लघु प्रदर्शनी, पत्रवाचन, विज्ञान, क्विज प्रतियोगिताओं का आयोजन भी बालकों के लिए प्रेरणादायक सिद्ध हो सकेगा।
15. विद्यालय में विज्ञान विषय में अभिरूचि रखने वाले शिक्षक मिलकर अध्ययन वृत्त का निर्माण करें, एवं समय-समय पर होने वाले नवाचारों की जानकारी एक दूसरे को प्रदान करें, साथ ही विभिन्न विषय से सम्बन्धित कठिनाईयों का मिल-जुलकर समाधान करें।
16. विज्ञान शिक्षक को चाहिए कि कक्षा में अध्ययनरत, प्रत्येक बालक में अभिभावक के घर-घर जाकर व्यक्तिगत सम्पर्क करावें एवं निर्देशन कार्यक्रम व अभिभावक-सम्मेलन के माध्यम से उनकी कठिनाईयों का निवारण करावें, ताकि बालक अधिक-से-अधिक शिक्षक के प्रति लौह-चुम्बक की भाँति आकर्षित हो सकें। इससे परीक्षा परिणाम भी निश्चित ही उन्नत हो सकेगा।
17. कक्षा में विज्ञान शिक्षक प्रति सप्ताह, यूनिट समाप्ति के बाद एक लघु परीक्षा का आयोजन करें, ताकि बालक की प्रगति का

साप्ताहिक मूल्यांकन किया जा सके।

18. कक्षा में, प्रत्येक बालक से एक छोटी पॉकिट डायरी बनाने का प्रयास करावें जिसमें अतिलघु-उत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर पत्र वैज्ञानिकों की उपलब्धियाँ, सूत्र, सिद्धांत, नियम, परिभाषा एवं अन्य अवधारणाएँ लिखी हो, जिन्हें समय-समय पर बालक अपनी स्मृति-पटल पर पुनरावृति कर स्मरण कर सकने में बालक सिद्ध हस्त हो सकेगा।
19. प्रत्येक बालक के घर पर, स्वयं का पृथक से अध्ययन-कक्ष हो, जिसमें विज्ञान शिक्षण की सभी उपलब्ध सहायक सामग्री, चार्ट्स, चित्र एवं सूत्र-सिद्धांत लिखें हो, जिससे बालक निरन्तर अध्ययन शील रहेगा।
20. विज्ञान शिक्षक सदैव अपने साथ एक लघु विज्ञान सहायक सामग्री का मिनी किट भी रखें, जिसमें प्रयोग हेतु सामग्री, कैंची, चिमटा, परखनली, कीप, हाथ से बना स्टेथोस्कोप, फेफड़े का मॉडल, ग्लूकोज की रिक्त बॉटल से बना गुर्दे का मॉडल, तिपाई, स्टैण्ड एवं अन्य उपयोगी आशुरचित मॉडल निर्मित करें, ताकि शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बनाया जा सके।

अन्त में, मैं तो यही कहना चाहूँगा, कि आज की इन परिवर्तनशील परिस्थितियों में विज्ञान में क्रान्तिकारी, कम्प्यूटर क्षेत्र में नवीन उपलब्धियों को देखते हुए हम भी प्राचीनतम शिक्षण की विधियों का त्याग करके अब कुछ नवाचारों नवीनतम सहायक सामग्री के उपयोग से विज्ञान शिक्षण को रुचिशील बनावें, ताकि हमारे परीक्षा परिणाम उन्नत हो सकें।

"कोई भी मंजिल तुमसे
कब रह सकती है दूर,
साथियों कदम बढ़ाना होगा
इतनी शर्त है जरूर।"

तो आइये, कदम बढ़ाने के लिए पहले कदम मिलाएं और फिर एक साथ चलते हुए राष्ट्र एवं समाज को आगे बढ़ाएं।

-सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
15, न्यू त्रिमूर्ति कॉम्पलेक्स, हिरणमगरी, सेक्टर-4
वैशाली अपार्टमेन्ट के आगे, मनवाखेड़ा रोड, उदयपुर

व्यक्तित्व

भारत रत्न : डॉ. चन्द्रशेखर वैंकटरमन

□ प्रहलाद शर्मा

प्रकाश के प्रकीर्णन और रमन प्रभाव की 28 फरवरी 1928 के दिन की खोज के लिए नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले एशियाई और अश्वेत भौतिक वैज्ञानिक सर सी.वी. रमन आधुनिक भारत के महान वैज्ञानिक माने जाते हैं। 28 फरवरी, 1928 को इन्होंने 'रमन प्रभाव' की खोज की। इस खोज से इन्होंने सिद्ध कर दिखाया कि आँख के पीछे के परदे पर दृश्य किस प्रकार अंकित होता है तथा इसी अनुसंधान या खोज के कारण रमन पूरे विश्व में लोकप्रिय हो गए। इसीलिए 28 फरवरी का दिन हमारे देश में 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के रूप में मनाया जाता है। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी, 1987 से राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तत्वावधान में मनाया जा रहा है। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस तरल पदार्थ द्वारा प्रकाश में प्रकीर्णन पर प्रोफेसर सी.वी. रमन के काम की खोजन को चिह्नित करने के लिए मनाया जाता है।

डॉ. चन्द्रशेखर वैंकटरमन का जन्म 7 नवम्बर, 1888 को तमिलनाडू के तिरूचिरापल्ली जिले के एक गांव थिरूवैनकवल में हुआ था। उनके पिता का नाम चन्द्रशेखर अय्यर और माता का नाम पार्वती अम्मा था। इनके पिता ज्योतिष, संगीत, विद्या एवं गणित के बहुत अच्छे ज्ञाता थे। सन 1899 में रमन ने दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। उनकी असाधारण प्रतिभा को देखकर अध्यापकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। इतनी कम उम्र में दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले रमन भारत के प्रथम छात्र थे। मद्रास के प्रेसीडेंसी कॉलेज में बी.एस.सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1906 में उन्होंने एम.एस.सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

वैज्ञानिक के तौर पर दुनिया भर में जाने गये रमन की गणित विषय में जबरदस्त रुचि थी तथा इसी कारण उनकी पहली नौकरी कोलकाता में भारत सरकार के वित्त विभाग में सहायक महालेखाकार के रूप में लगी तथा देश की आजादी के बाद उन्हें राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी विभाग का निदेशक नियुक्त किया गया।

28 फरवरी, 1928 को रमन प्रभाव की खोज के लिये 1930 में उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अपनी खोज के लिये नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले वे पहले एशियाई एवं अश्वेत भारतीय वैज्ञानिक थे। 1934 में उन्हें बैंगलोर स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान का निदेशक बनाया गया तथा 1948 में सेवानिवृत्त होने के बाद उन्होंने 'रमन संस्थान' की स्थापना की। इन्होंने पहली बार तबले और मृदंग के हार्मोनिक की प्रकृति का पता लगाया था। 1954 में इन्हें भारत के सर्वोच्च पुरस्कार 'भारत रत्न' एवं 1957 में लेनिन शांति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

विज्ञान एवं देश की सेवा करते हुए 21 नवम्बर, 1970 को इस महान् वैज्ञानिक का बैंगलुरु में देहांत हो गया। डॉ. रमन के विज्ञान क्षेत्र में अतुलनीय योगदान को हम कभी नहीं भूल सकते। वैज्ञानिक विकास में उनके अपूर्व एवं अद्भुत योगदान से केवल भारत ही नहीं वरन समूचा विश्व उनके प्रति कृतज्ञ रहेगा।

5/279 एस.एफ.एस.
अग्रवाल फार्म, मानसरोवर जयपुर
मो. 9414795871

डॉ. दौलतसिंह कोठारी

वैज्ञानिकों में संत और संतों में वैज्ञानिक

❒ करणीदान कच्छावा

"मैं बिना हिचकिचाहट के इस नौजवान को कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर नियुक्त करना चाहता हूँ और यह है कि पढ़ाई पूरी करके तुरन्त अपने देश लौटना चाहता है।' यह कथन उस पत्र से उद्धृत किया गया है जो कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के महान शिक्षक एवं विख्यात वैज्ञानिक नोबल विजेता सर लार्ड रदरफोर्ड ने दिल्ली विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति सर मॉरिस ग्वायर को लिखा था और इस कथन का नायक नौजवान है डॉ. दौलतसिंह कोठारी। डॉ. कोठारी, जिन्हें महान वैज्ञानिक, प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के कुलपति, कोठारी शिक्षा आयोग के चेयरमेन और न जाने किन-किन उत्तरदायित्वों का यशपूर्वक निर्वहन करने वाले कर्मयोद्धा के रूप में हम पढ़ते-सुनते हैं। यह पिछली शताब्दी के तीसरे दशक की बात है।

यह कथन एक साथ कई महत्वपूर्ण संदेश प्रकट करता है जो आज की पीढ़ी के लिए चिन्तन एवं ग्रहण करने योग्य हैं :-

- भारतीय मेधा का डंका विश्व पटल पर डॉ. कोठारी बजा रहे हैं। भारतीय नौजवानों में बुद्धि, क्षमता एवं कौशल की कोई कमी नहीं हैं। तभी तो कैम्ब्रिज नियन्ता बिना हिचकिचाहट के भारतीय नौजवान को अपने विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के सम्मानजनक पद पर नियुक्त करना चाहता हैं। वह चाहता है कि यह नौजवान हामी भरें और इंग्लैण्ड में ही वास करें।
- Brain Drain की बात हम करते हैं और आज के दौर में भारत के युवकों को अमेरिका, इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया, कनाडा जैसे देशों के लिए भागते देख रहे हैं। ऐसा लग रहा है जैसे हमारे स्वाधीनता संग्राम के दौरान चले अभियान "अंग्रेजो भारत छोड़ो" की तरह आज के तथाकथित

सम्पन्न माता-पिता और युवाओं ने "युवको, भारत छोड़ो" अभियान चला रखा हो। उन्हें डॉ. कोठारी का उपरोक्त वृतान्त सीख देता है कि विदेश का कौशल सीखने तक ही वास्ता रखो और वहां सीखे ज्ञान व कौशल का उपयोग राष्ट्रोत्थान के लिए देश में देशवासियों के हित में करो।
- देश प्रेम, राष्ट्रीय भावना और मातृभूमि के प्रति आत्मीय लगाव का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। विदेशों का वैभव उन्हें किंचित भी नहीं ललचाता-**जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि।**

डॉ. दौलत सिंह कोठारी का जन्म राजस्थान के उदयपुर शहर में 06 जुलाई 1906 के दिन हुआ था। बचपन में ही पिता का साया सिर से उठ जाने पर धर्मपरायण माँ के संरक्षण में प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा हुई। जहां चाह-वहां राह वाली उक्ति सार्थक हुई और उन्हें आगे से आगे अध्ययन हेतु वृत्ति एवं सहयोग प्राप्त होता रहा। बीस वर्ष की अवस्था में सन् 1926 में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.एस.सी. की उपाधि प्राप्त की। तब उनके शिक्षक उस दौर के महान वैज्ञानिक मेघनाथ साहा थे। परिवार की विषम आर्थिक स्थिति यहां एक बार पुनः आड़े आई, मगर महाराणा मेवाड़ से आर्थिक सहायता प्राप्त होने पर 1930 में वे उच्च अध्ययन हेतु केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. करने इंग्लैण्ड गए। बस, यहीं उनका साक्षात्कार विश्व के महान वैज्ञानिक एवं नोबल विजेता सर रदर फोर्ड से होता है, जिसका दृष्टान्त इस आलेख के प्रारम्भ में दिया गया हैं।

रदर फोर्ड महोदय की समझाईश पर देश प्रेम भारी पड़ा और कोठारी केम्ब्रिज में अपना शोध कार्य पूर्ण कर भारत लौट आए और दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन शुरू कर दिया। वे शुरू से ही धर्म एवं अध्यात्म में रुचि रखते थे। माँ के चरित्र का व्यापक असर आप पर था। उनके लिए अल्बर्ट आइंस्टीन ने लिखा था, **"उत्कृष्ट सहयोग भावना रखोगे तथा विचारों में पूर्वाग्रह लाए बिना प्रेम से कार्य करोगे तो सदा प्रसन्न रहते हुए अपने कार्यों में सफल रहोगे।"** दिल्ली विश्वविद्यालय में उनकी प्रयोगशाला को तत्कालीन सिरे वैज्ञानिकों में सी.वी.रमन, होमी जहांगीर भाभा, मेघनाथ साहा, नील्स बोहर, डिराक आदि ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। डॉ. कोठारी द्वारा खोजे गए दबाव आयनीकरण सिद्धान्त को विश्व स्तर पर मान्यता मिली, प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। उनकी इस खोज के बारे में वैज्ञानिक ए.एस.एडिंग्टन ने टिप्पणी की थी, "आज तक हम यह जानते थे कि आयनीकरण केवल उच्च दबाव एवं उच्च ताप द्वारा ही सम्भव है। मगर डॉ. कोठारी संसार भर में एक मात्र ऐसे वैज्ञानिक हैं जिन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि उच्च ताप के मात्र दबाव से ही आयनीकरण सम्भव है।"

स्वतंत्रता पश्चात सन् 1949 में डॉ. कोठारी को रक्षा मंत्रालय में प्रति रक्षा विज्ञान संगठन का निदेशक बनाया गया। यहां बारह वर्ष तक लगातार कार्यरत रहते हुए आपने देश में शस्त्र विज्ञान, वैमानिकी, धातु कर्म, खाद्य संरक्षण जैसे विषयों पर प्रयोगशालाएं स्थापित करवाई। आप भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारतीय विज्ञान कांग्रेस, हिन्दी आयोग (तकनीकी), वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग जैसे महत्वपूर्ण कार्यों के अध्यक्ष रहे। आपके उत्तम अवदान से प्रभावित

होकर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रथम अध्यक्ष का उत्तरदायित्व आपको सौंपा गया जहां कार्य करते हुए आपने नूतन प्रतीमान स्थापित किए। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964-66) के अध्यक्ष के रूप में डॉ. कोठारी ने जो शिक्षा का स्वरूप प्रस्तुत किया, वह स्वयंमेव एक मिशाल हैं। स्कूली शिक्षा के लिए उनके द्वारा प्रदत्त नीति धर्म व आचार नीति की तरह है। आप ही ने महात्मा गांधी द्वारा घोषित जंतर/तालिस्मान को एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों में प्रथम पृष्ठ पर छापने की अनुशंसा कर उसे अमलीजामा प्रदान करवाया था। सिविल सेवा प्रतियोगिताओं में अंग्रेजी के साथ अन्य भाषाओं को मान्यता दिलाने का कार्य कोठारी आयोग की अनुशंसाओं के आधार पर सम्भव हुआ था। नैतिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, जीवनपर्यन्त शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा कोठारी साहब की ही देन हैं। उन्होंने कहा था, ''जीवन कुरुक्षेत्र के युद्ध के समान संग्राम है। हमें रणभूमि के लिए स्वयं को एक योद्धा के रूप में तैयार करना चाहिए। योद्धा बनने के लिए बचपन से ही आध्यात्मिक शिक्षा की शुरुआत होना आवश्यक है। बूढ़े होने का इंतजार नहीं करना है। अर्जुन ने भी युवावस्था में ही अपने आपको तैयार किया था।''

कोठारी जी शिक्षा को चरित्र निर्माण का वाहन समझते थे। शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन प्रकाशित होने के कुछ वर्षो बाद उन्होंने कहा था ''यदि यह रिपोर्ट मुझे पुनः प्रस्तुत करनी पड़े तो मैं इसका शीर्षक ''शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास'' के स्थान पर ''शिक्षा एवं चरित्र विकास'' रखना चाहूंगा। डॉ. दौलतसिंह कोठारी एक वैज्ञानिक ऋषि थे। वे वैज्ञानिकों में सन्त और सन्तों में वैज्ञानिक थे। उनका जीवन एवं कर्म हमें नैतिकता एवं मनोयोगपूर्वक कर्तव्यपरायणता का संदेश देता है। मरूभूमि राजस्थान के इस महान सपूत का स्वर्गवास 04 फरवरी 1993 को जयपुर में हुआ। शरीर रूप में भले ही कोठारी सर हमारे मध्य नहीं है लेकिन एक विचारधारा एवं सिद्धान्त के रूप में वे चिर जिन्दा रहेंगे।

-प्राध्यापक (भौतिक शास्त्र)
राज. फोर्ट उ.मा.विद्यालय, स्टेशन रोड, बीकानेर
मो. 9214633947

जन्म दिवस विशेष

महर्षि अरविन्द की अनुयायी श्री माँ

❒ राजेश रंगा

महर्षि अरविन्द के दर्शन की चर्चा करते समय जो नाम सहज ही में लिया जाता हैं, वह नाम है-श्री माँ। इन श्री माँ का जन्म 21 फरवरी 1878 के दिन फ्रांस के पेरिस नगर में हुआ था। इनका जन्म का नाम मिरा अल्फासा था। बाल्यकाल से ही प्रतिभाशाली रही मिरा अल्फासा को पेन्टिंग एवं म्यूजिक में महारत प्राप्त थी। बताते हैं कि अल्जीरिया में गुह्य विद्या सीखने के दौरान चेतना में उन्हें अरविन्द के दर्शन होते थे जिन्हें उन्होंने मन ही मन अपना गुरु मान लिया था। गुरु की खोज में मार्च 1914 में वह अपने पति पॉल रिचर्ड के साथ भारत आईं। भारत में पांडिचेरी में अरविन्द को देखते ही वह पहचान गई और आनन्दमगन होकर उनके मार्गदर्शन में अध्यात्म उन्नयन करने लगी।

महर्षि अरविन्द की पत्रिका आर्य एवं दिव्य जीवन, योग समन्वय, मानव चक्र आदि ग्रंथों के प्रकाशन में श्री माँ का अपूर्व सहयोग रहा था। ये प्रकाशन 1914 से 1921 के कालखण्ड में हुए थे। सन् 1926 (24 नवम्बर) में अरविन्द ने एकान्तवास में जाने से पूर्व अपनी शिष्यमंडली का उत्तरदायित्व श्री माँ को सौंप दिया। देखा जाए तो इसी मोड़ पर अरविन्द आश्रम का श्री गणेश होता है जो कालान्तर में आध्यात्मिक चिन्तन-मनन का लोकप्रिय केन्द्र बना। साठ के दशक में श्री अरविन्द सोसाइटी (1960) एवं औरीविले यानी उषानगरी (1968) की स्थापना का श्रेय श्री माँ को ही जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में श्री माँ का योगदान किसी वरदान से कम नहीं है। सन् 1943 में 02 दिसम्बर के दिन आपने 20 बच्चों से एक विद्यालय खोला जिसकी न केवल वह सार सम्भाल ही करतीं बल्कि स्वयं पढ़ाती भी थीं। आश्रम के समूह जीवन में उन्होंने शिक्षा को केन्द्रीय स्थान दिया। स्वस्थ मन का आधार स्वस्थ तन को मानकर उनके द्वारा करवाए जाने वाले क्रीड़ा कार्यक्रमों में आश्रम में उपस्थित सभी व्यक्तियों- बाल, युवा, प्रौढ, वृद्धों को शरीक होना अनिवार्य होता था।

शिक्षण संस्थाओं को रूपांकित करते हुए श्री माँ का कहना था कि विद्यालय ऐसे स्थान पर हों जहां बच्चे अपनी आत्मा के साथ सम्बन्ध बनाए रखते हुए समग्र रूप से पढ़ व बढ़ सकें। परीक्षा में उत्तीर्ण होना, प्रमाण-पत्र/उपाधि प्राप्त करना एवं नौकरी प्राप्त करना शिक्षा का उद्देश्य न होकर क्षमता अभिवृर्द्धन एवं माननीय गुणों को चरित्र में ढालना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षक को सृष्टा एवं सहायक के रूप में कार्य करने का संदेश देते हुए पूजनीया श्री माँ का कहना है कि शिक्षक का पहला काम यह सीखना है कि दूसरों के साथ सहयोग एवं समन्वय कैसे स्थापित किया जावे। शिक्षण कार्य में सफलता किसी साधना से कम नहीं होती। इस प्रकार एक शिक्षक को साधक एवं योगी बनना होता है। यह योग साधना शिक्षण कार्य करते समय आने वाली कठिनाइयों एवं तनावों से उसे मुक्ति दिलाती है।

श्री माँ शिक्षण एवं अधिगम कार्य में शिक्षक की चेतना को शीर्ष स्थान पर मानती है। शिक्षकीय चेतना शिक्षण कार्य में सफलता का आधार होती है। शिक्षक जितना अधिक विद्यार्थियों के साथ एकतत्व स्थापित कर पाएगा, उतनी ही कुशलता एवं विश्वास उसके शिक्षण कार्य को मिलेगा जो अन्ततः सफलता एवं कीर्ति दिलाने वाले हैं। शिक्षक के मन में सबसे पहले अपने व्यवसाय के प्रति सम्मान भाव होना चाहिए। **''शिक्षण से उत्तम अन्य कोई काम नहीं है तथा मैं शिक्षक हूं, यह मेरा सौभाग्य है''** जैसे उत्तम भाव वास्तविक रूप से शिक्षण कार्य करते समय आत्म विश्वास बढ़ाकर सफलता दिलाते हैं। उसे क्रोध, निद्रा, परनिन्दा, आलस्य दिखावे व आडम्बर से दूर रहना चाहिए। उसकी सरलता एवं विमलता ही उसके वास्तविक आभूषण होते हैं।

-प्रधानाचार्य,
नालन्दा पब्लिक सी.सै. स्कूल, बीकानेर
मो. 9414139198

गुरु-शिष्य संयोग-सुयोग

सद्गुरु दिनी रै बताय, दलाली हीरा लालन की

□ मदन लाल पुरोहित

गुरु जीवन की पूर्णता है। वह पवित्रता, शान्ति, प्रेम और ज्ञान की साक्षात प्रतिमूर्ति होता है। वही अंतःकरण के इन गुणों को प्रकट करने के उत्तरदायित्व को वहन करता है। जब कोई व्यक्ति इन विशेषताओं को अपने अंदर विकसित करना चाहता है, तब उसे गुरु की आवश्यकता महसूस होती है। गुरु अपने लक्ष्य की पवित्रता द्वारा शिष्य को अपने आंतरिक विकास की ओर अभिमुख करता है। इसके लिये सर्वप्रथम शिष्य को उसके अन्दर स्थित गुरुत्व के प्रति सजग बनाता है। गुरु तत्व प्रत्येक व्यक्ति के अंदर विद्यमान है। इसे आंतरिक गुरु भी कहते है। यह शिष्य के सम्पूर्ण जीवन के समस्त क्रिया-कलापों का साक्षी है। ऐसा समझा जाता है कि योग्य गुरु अपनी उपार्जित शक्ति का एक अंश शिष्य को देकर उसे समर्थ बना देने में सक्षम होते हैं, लेकिन आधार समर्थ होने पर ही यह सब संभव है। कोई यह अनुदान ग्रहण भी तो करे। गुरु पथ बड़ा पावन एवं महान लेकिन उतना ही चलने में कठिन होता है। गुरु पद पर चलने के लिए शिष्यों के प्रति सम्पूर्ण सद्भाव, शिक्षण के प्रति सच्चा अनुराग एवं स्वयं में शिष्य भाव की मौजूदगी परम आवश्यक होते हैं।

चर्चा गुरु शिष्य संयोग की हो रही है। इसमें प्रमुखता एवं विशेषता गुरु की है, क्योंकि इतिहास साक्षी है कि जहाँ कहीं और जब कभी कोई महत्वपूर्ण प्रसंग सामने आया है, तब उसमें गुरु की प्रत्यक्ष या परोक्ष भूमिका अपना चमत्कार प्रस्तुत करती दिखाई दी है। यद्यपि कुछ ऐसे शिष्य भी हुए हैं जो पूर्णतः गुरु के समर्पित नहीं हुए तथा सफल भी हुये किन्तु उन्हें शिखर का लक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ, जो गुरु और शिष्य के संयोग-सुयोग बनने पर संभव होता है। इस तथ्य को समझते हुए निराश एकलव्य को द्रोणाचार्य से कहीं अधिक सुयोग्य एवं सक्षम बना लिया था।

विश्वामित्र यज्ञ रक्षा के बहाने राम-लक्ष्मण को अपने तपोवन में ले गए थे। वहाँ उन्हें बला और अतिबला तथा गायत्री और सावित्री की रहस्यमयी जानकारी प्रदान की। फलतः सीता

स्वयंवर जीतने, लंका विजय करने, राम राज्य की प्रतिष्ठा करने एवं भगवान कहे जाने की स्थिति तक वे पहुंचे थे। ऐसा सुयोग भरत, शत्रुघ्न को नहीं मिला था। उन्हें सामान्य स्थिति में रहना पड़ा। वे विश्वविख्यात न बन सके। गुरुकुल विद्यालय की महत्ता भी इसी दृष्टि से थी कि वहाँ पुस्तके ही नहीं पढ़ाई जाती थी, वरन छात्र में नए प्राण फूंकने और तुच्छ से महान बनाने की प्रक्रिया भी सम्पन्न की जाती थी। भारती संस्कृति की पुण्य परम्परा में माता-पिता के अतिरिक्त संरक्षकों की तीसरी पदवी गुरु की है। यही प्रत्यक्ष त्रिदेव है। शिव के बिना जिस प्रकार देव समुच्चय अधूरा रहता है, उसी प्रकार उच्चस्तरीय शिक्षार्थी भी उपयुक्त गुरु के अभाव में अनाथ-अपंग की स्थिति में पड़ा रहता है। अभाव व अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाकर बरकत व ज्ञान रूपी आलोक से साक्षात्कार करने एवं सुरक्षित रूप से भव सागर पार करने के लिए जिस मजबूत पतवार वाले जहाज की जरूरत होती है, उसे ही गुरु कहा जाता है। महानता के पुरातन इतिहास में गुरु की गरिमा जितनी बड़ी भूमिका रही है, उतनी किसी और की नहीं। इसी लिए भावनाशील शिक्षार्थी गुरु दक्षिणा में आचार्य को मुँह माँगा अनुदान अपनी समूचे सामर्थ्य को भी न्यौछावर करते हुए हर संभावना को साकार कर दिखाते थे, किन्तु यह तब था जब गुरु की गरिमा को गुरुजन पूर्ण सुविचारों से अपने शिष्य को वह शिक्षा प्रदान की तभी से यह परम्परा अपने उच्च शिखर पर बनी रही है। गुरु ने अनुदानों को देखते हुए शिष्य के लिए उपयुक्त प्रतिदान प्रस्तुत करने में कभी कोई कोताही नहीं की थी। कुछ ही शताब्दियों के बीच घटित घटनाओं में कई ऐसी हैं जो रहस्यमय तथ्यों का उद्घाटन करती है। भगवान बुद्ध ने अपने तपोबल से अनेक को भागीदार बनाया और उनसे बड़े काम शिष्यों को प्रदान किये। कुमारजीव को उन्होंने समूचे चीन का धर्मगुरु बना दिया। मंचूरिया, मंगोलिया, कोरिया, जापान, ताक में वह दूसरा बुद्ध माना जाने लगा था। तथागत का कार्यक्रम एक केंद्र से धर्मचक्र प्रवर्तन की धुरी घुमाना था। वे स्वयं समूचे संसार एशिया महाद्वीप में किस प्रकार भ्रमण करते? उन्होंने अंगुलीमाल, आम्रपाली जैसों का कायाकल्प किया और उनके द्वारा पूर्वी- दक्षिणी एशिया में नवीन चेतना जगाई। एक दुर्दांत डाकू उच्चकोटि का धर्मप्रचारक बन गया और नर्तकी आम्रपाली ने सुविस्तृत क्षेत्र के नारी समुदाय में ऐसा प्राण फूँका मानो किसी ने उसे तपती जमीन पर अमृत बरसा दिया हो। क्या यह पतित समझा

लेखक परिचय

श्री मदन लाल पुरोहित बहुमुखी प्रतिभा के धनी संवेदनशील शिक्षक एवं कुशल शिक्षा अधिकारी हैं। बाल मनोविज्ञान को चरित्र में उतार कर भ्रातृवत मधुर व्यवहार करने के कारण विद्यार्थीवृन्द में आप अत्यन्त सम्माननीय हैं। अपने व्यापक सामाजिक सरोकारों के कारण विद्यालय में लाखों रुपयों के निर्माण एवं संसाधन जुटाने के कार्यों में आप सेतु बने हैं। प्रभावी वक्ता, सहज लेखक एवं कुशल संयोजक श्री पुरोहित जिला प्रशासन सहित अनेक संस्थाओं से सम्मानित हुए हैं।

जाने वाला मानव बिना गुरुकृपा के ऐसी स्थिति में पहुंच सकता था कि उनके चरणों में कोटि-कोटि जनसमुदाय के पलक पांवड़े बिछें। बिंबसार ने राजकोष बौद्ध विहार बनाने में लगा दिया और हर्षवर्धन ने तक्षशिला विश्वविद्यालय का समूचा भार उठाया। लगता है कि इन शिष्यों को घाटे में रहना पड़ा, पर उस घाटे पर अनेक रतन भंडारों को न्योछावर किया जा सकता है। उसने मनुष्यों को देवताओं से बढ़कर सम्माननीय बना दिया। कोटि-कोटि गद्‌गद् कंठों से जिनकी यशोगाथा गाई गई। बुद्ध के अवतार होने का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उन्होंने सामान्य स्तर के लोगों को लाखों की संख्या में महामानवों की पंक्ति में बिठाया। समर्थ गुरु के अभाव में लाखों भिक्षुओं और भिक्षुणियों की धर्मसेना विश्वमानस का नवनिर्माण करने के लिये निकल न पाती।

तपस्वी चाणक्य की तप-संपदा के दूध भरे थनों की तरह निस्सृत हो रही थी, पर प्रश्न यह था कि सत्पात्र ढूँढ़े बिना यह अमृत किस पर लुटाया जाए। आखिर चन्द्रगुप्त मिल गया। एक क्षुद्र जाति के बालक को राजपूतों के बीच वरिष्ठता कैसे मिलती? पर यह चाणक्य की योजना, दक्षता और तप सम्पदा थी, जिसे लेकर चंद्रगुप्त भारत के गौरव में चार चाँद लगा सका। इस प्रकार सद्‌गुरु का संयोग अद्‌भुत संयोग होता है, जो शिष्य को महानता प्रदान करती है। शिष्य को हीरा-पन्ना और माणक-मोती का कारोबार गुरु ही सिखाते हैं जो प्रतीक रूप में उच्च मानवीय गुणों के प्रतीक है। भारत में उत्तम गुरुजन की आदर्श परम्परा रही है जो स्वयं तप करके, स्वयं को खपा करके शिष्यों का मंगल करते हैं। वे जो भी साधन करते हैं उसका साध्य शिष्यों का कल्याण करता होता है। उनका अपना कोई स्वार्थ नहीं होता; वे तो बस शिष्य समुदाय के लिए समर्पित होते हैं। न केवल स्वयं गुरुजी हो, बल्कि गुरुभार्या भी शिष्यों से मातृवत दुलार करती है। गुरु दम्पती को गुरुकुल में अध्ययन कर रहे शिष्य अपनी सन्तान ही लगते और उनके हित साधन हेतु वे दिन-रात चिन्तनगमन रहते। एक प्रसिद्ध धार्मिक पद में इसी बात को उजागर करते हुए कहा गया है, ''म्हारे सद्‌गुरु दिनी रै बताय; दलाली हीरा लालन की।'' उत्तम गुरुजन अपने शिष्यों के लिए उत्तम गुणों एवं भव्य जीवन की कैसे अरदास करते रहते हैं।

जब कोई शिष्य पहली बार किसी गुरु के पास पहुँचता है तो वह अंधा-लंगड़ा दोनों होता है। उसके पास न तो ज्ञान की दृष्टि होती है और न गति। वह सम्पूर्ण यात्रा का एक छोर होता है और गुरु उसका दूसरा छोर। एक अधम है तो दूसरा उच्च है। एक कच्ची मिट्टी का घड़ा है तो दूसरा ज्ञान के सर्वोच्च बिन्दु पर प्रतिष्ठित देव।

गुरु जीवन की पूर्णता है। वह पवित्रता, शान्ति, प्रेम और ज्ञान की साक्षात प्रतिमूर्ति होता है। शिष्य चाहे जैसा भी हो गुरु अपने उपार्जित ज्ञान को उसमें भरने का भरसक प्रयास करता है और पूर्ण प्रयास करता है कि उसका शिष्य योग्य शिक्षार्थी बने किन्तु समय बदला गुरु और शिष्य के सार्थक प्रयास बदले, इतिहास इस बात का साक्षी है कि निष्ठावान शिष्य समर्पण की भावना से गुरु के पास नहीं आते, गुरु का निरादर करते हैं, किन्तु फिर भी गुरु अपने शिष्यों को सदैव क्षमा करने की भावना रखते हैं, शिष्य गुरु के ज्ञान का दुरुपयोग करते हैं, यह प्रक्रिया सदियों से निरन्तरता में है, किन्तु यदि गुरु ने अपने शिष्यों के साथ कोई भेदभाव किया या उन्हें सच्चे ज्ञान से वंचित रखा तो एक योग्य गुरु जीवन पर्यन्त जाने-अनजाने में किए गए उस अपराध बोध की पीड़ा से छटपटाता रहेगा। ऐसे ही एक अपराध बोध की सत्य घटना प्रस्तुत है, इस कथा, लेख लिखते समय मेरे मन में यही सोच हैं कि वर्तमान में जो गुरु अपने शिष्यों के साथ जो भेदभाव, वर्ग भेद, प्रभाव भेद करते हैं, किसी दिन उन्हें आर्यश्रेष्ठ द्रोणाचार्य की भान्ति दंश न झेलना पड़े। इस सत्य घटना का वृतान्त इस प्रकार है-

अस्त्र एवं शस्त्र के महान विशेषज्ञ आर्यश्रेष्ठ द्रोणाचार्य की आँखे बोझिल थीं, उनमें नींद नहीं थी। पलकें बंद कर सो जाने के सारे प्रयास निरर्थक साबित हो रहे थे। करवटें बदलकर भी देख लिया, पर नींद थी कि रूठ-सी गई थी। वे उठे और खड़ाऊ पहनकर विश्रामागार से बाहर निकले, थोड़ा टहले, रात की शीतल, शांत बयार बह रही थी, परंतु वह भी अंदर की भीष्ण ज्वाला को शांत नहीं कर पा रही थी। मन तब भी अशांत एवं अनमना हो रहा था। वे अंदर आए और ताम्रपत्र से एक ताम्र गिलास में जल लेकर पीने लगे। जल भी पिया नहीं गया। जल हलक में जाकर फँस गया और उसे निकालने में उनको खाँसी आ गई। खाँसी की आवाज से माता कृपि की नींद खुल गई। उन्होंने देखा कि उनके प्रिय पति द्रोणाचार्य उनकी बगल में नहीं थे। वे समझ गई कि खाँसने की आवाज उन्हीं की है। उठकर बाहर गई। देखा तो द्रोणाचार्य पाकशाला में विचरण कर रहे है। कृपि ने कहा ''आप यहाँ पाकशाला में क्या कर रहे हैं, जल तो शयनागार में भी रखा था, हमें बुला लेते'' द्रोणाचार्य ने कहा-''नहीं प्रिये! ऐसी कोई बात नहीं, बस, यों ही छिपा भी नहीं सके। उनकी पत्नी की अवस्था उस बच्चे के समान हो गई थी, जो अपनी प्रिय वस्तु को छिपा कर पा तो लेता, परंतु पकड़े जाने पर उसे न तो छोड़ पाता और नही रख पाता है। वे अपनी पीड़ा को न तो बता पा रहे थे और न ही दबा पा रहे थे। अजीब सी स्थिति हो गई थी उनकी। उनका चेहरा भीतर में छिपे किसी दर्द को बयां कर रहा था।

जिनकी शस्त्र विद्या के चमत्कार से योद्धा युद्ध में कभी पराजय की कडुआहट नहीं देखते थे, आज उन योद्धाओं के गुरु पता नहीं कहाँ पराजित हो गए थे और उनकी ऐसी दयनीय स्थिति कैसे हो गई थी। माता कृपि से उनकी यह दुर्दशा देखी नहीं गई। वे उन्हें कुछ और पूछतीं, इसके पहले उनको अपने शयनागार में लेकर धीरे से गई और सुलाने लगीं। माता कृपि ने कहा-''हे आर्यवर। आपको तो हमने ऐसी अवस्था में कभी नहीं देखा। आप तो निर्णय क्षमता में माहिर हैं; चक्रव्यूह बनाने में सिद्धहस्त हैं; शत्रुओं को पराजित करने में अग्रणी हैं। आप अपने आपमें बेनजीर है। आप तो धर्मयुद्ध में आस्था रखते हैं, परंतु आपसे कहाँ और कौन-सा ऐसा अधर्म हो गया, अपराध हो गया कि आप उससे इतने व्यथित एवं पीड़ित हो गए हैं।'' द्रोणाचार्य ने कहा ''हाँ देवी! मुझसे एक घोर अपराध हो गया है। वह अपराध ऐसा है कि नैतिक रूप से निरपराधी घोषित होने के बावजूद उसका दंश मुझे डसे जा रहा है। बलहीन, ऊर्जाहीन एवं शिथिल हो जाता हूँ। देह स्वेद-कणों से सरोबार हो जाती है और कंपन सा होने लगता है। जब आँखे खोलता हूँ तो वहीं दृश्य दिखाई पड़ता है, बंद करता हूँ तो वह दृश्य मुझ पर कटाक्ष एवं व्यंग्य करता प्रतीत होता है। हे देवी! मैं चाहकर और प्रयास करके भी उस अपराध को भूल नहीं पा रहा हूँ।''

कृपि ने धीरे से उनके केशों को चेहरे से अलग किया और स्नेहपूर्वक उनमें हाथ फेरने लगीं और कहा- ''कही आप धनुर्धारी उस भील बालक एकलव्य की तो बात नहीं कर रहे हैं। वह घटना तो बहुत पुरानी हो चुकी है, परंतु आज आप इस घटना से इतने उद्वेलित एवं परेशान क्यों नजर आ रहे है।'' हाँ देवी! आज ही तो मैं समझ पाया कि मैंने अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी बनाने के लिए किसी की बलि ले ली! कृपि ने कहा। ''पहेली न बुझाएँ आर्य! स्पष्ट करें कि आज ऐसा क्या हो गया जो एकलव्य वाली घटना ने आपको इतना पीड़ित किया है।'' आचार्य द्रोण कुछ पल निशब्द बने रहे, क्योंकि उनके रूँधे गले से कोई शब्द ही नहीं निकल रहे थे। अपने आप को संयत एवं संयमित कर वे बोलने लगे ''हे देवी! आज मैंने शर- संधान का अभ्यास कराते-कराते अपने प्रिय शिष्य अर्जुन को एक मृग के पीछे लगा दिया।'' इतना कहने के बाद वह फिर शांत हो गए। उनके कानों में भील के वे भयानक शब्द हथौड़ा बनकर बज रहे थे। माता कृपि ने कहा, आगे क्या हुआ आर्य! आचार्य ने कहा ''आज अर्जुन न तो सफल हो सका और न असफल, पर इस प्रक्रिया में हम घने जंगलो के बीच उलझ चुके थे। जहाँ न पीने के लिए जल था और न ही भोजन के लिए कोई कंदमूल या फल दृष्टिगोचर हो रहा था।'' आचार्य अपनी बात पूरीं नहीं कर पा रहे थे वे फिर से बोलते-बोलते रूक गए। उनकी आँखे डबडबा गई थीं।

आचार्य ने अपनी बात आगे बढ़ाई ''उस घने एवं बीहड़ जंगल में सूरज की रोशनी भी ठीक से नहीं आ रही थी। हम लोग जितना आगे बढ़ते, उतना ही उलझते जा रहे थे। भूख एवं प्यास से हम दोनों निढ़ाल हो चुके थे। अर्जुन की भी वही स्थिति थी। भूख तो बर्दाश्त भी हो जाती, परन्तु प्यास से गला सूखा जा रहा था। आखिर थक-हार कर दोनों एक घने पेड़ के नीचे निढ़ाल होकर लेट गए। दिन में रात के समान स्थिति थी। झींगुर बोल रहे थे। अब लगा कि प्राणान्त हो जाएगा, परंतु नियति को कुछ और ही मंजूर था। हमें अपनी ओर चलकर आने वाले एक समूह के कदमों की आहट सुनाई दी। उनके कदम सूखे पतों पर पड़ रहे थे और पतों की खड़खड़ाहट की आवाज आ रही थी। यह कोई मन का भ्रम नहीं था, सच्चाई थी। सचमुच में भीलों का एक समूह आ रहा था, जिसमें एक बुजुर्ग था। जिसके साथ तीन महिलाएं एवं दो बच्चे थे। उनके साथ में एक भील जो पीछे-पीछे चला आ रहा था, उस मटमैले पेड़ की छाल से बने एक थैले में कंदमूल-फल रखे हुए थे। भीलनी मटके में जल भरे हुयी थी। उन्होंने हमें देखा और हमें वही रुक गए। बुजुर्ग ने हमारी दयनीय स्थिति को भाँपकर हमें वे कंदमूल एवं फल खाने के लिए दिए और पीने के लिए मटके का पानी दिया। पानी इतना स्वच्छ-निर्मल एवं शीतल कि हमारे निकले प्राणों के लिए अमृत वरदान जैसा सिद्ध हुआ। हमारी आँखों में पुनः जीवन की चमक लौटने लगी। भूख-प्यास से बेसुध एवं बेहाल हम दोनों के अंदर प्राणों का संचार हुआ। कुछ देर बाद शेष लोग वहाँ से अपने गंतव्य की ओर चल दिए, परंतु बुजुर्ग हमारे पास बैठे रहे। उन्होंने कहा; ''आप लोग बीहड़ जंगल में राह भटक गए हैं। यह बहुत ही खतरनाक जंगल है। आप हमारे साथ हमारी बस्ती की ओर चलें। शाम होने को आई है। रात वहीं विश्राम करके दूसरे दिन प्रातः अपनी मंजिल की ओर प्रस्थान कर लें।'' अनचाहे एवं अनमने मन से हमें बुजुर्ग की बात माननी पड़ी और उनकी बताई राह पर चलते हुए हम भीलों की उसी बस्ती में पहुँच गए। उन्होंने हमारी खूब सेवा की, हमारे आतिथ्य में कोई कमी न रखकर हमारा पूरा ध्यान रखा।

आचार्य की बातें इतनी मुग्धकारी एवं रोमांचकारी थीं कि कृपि सुनती ही चली जा रही थीं, उन्हें लग रहा था जैसे वे एक नृत्यनाटिका देख रही हो। कृपि ने धीरे से कहा- ''आगे क्या हुआ आचार्य!'' आचार्य ने कहा- ''आगे की घटना ने ही तो मेरे अंतर्मन को झकझोर कर रख दिया। इसीलिए आगे कुछ बोलने का साहस नहीं हो रहा है। मेरा अंतर्मन जैसे रो रहा है, प्रिये।''

''सुनाएँ आचार्य! दुलारपूर्वक कृपि ने कहा। हाँ देवी, कहते हुए आचार्य उस पीड़ा को, जो चट्टान की तरह जमी हुई थी, बताने लगे कि कैसे उस भील बुजुर्ग ने उनको किरची-किरची तोड़कर धर दिया। बुजुर्ग ने आचार्य जी से कहा; ''हे आचार्य! आप ज्ञानी हैं, विद्वान हैं, आपकी युद्धविद्या तो तीनों लोकों में विख्यात है। आप धर्म युद्ध के भी महान जानकार हैं। ऐसे में मुझ अज्ञानी, अनपढ़ एवं एक अशिष्ट भील से यदि कोई भूल हो जाए तो उसे माफ कर देंगे। हमारे अज्ञान को आप माफ करें।''

बुजुर्ग भील ने आचार्य द्रोण से एक विदग्धकारी प्रश्न बाण किया- ''हे आचार्य! अर्जुन आपका परम प्रिय शिष्य है। इससे आपका भावनात्मक लगाव भी है। कहते हैं कि गुरु एवं शिष्य के बीच की डोर कर्तव्य से जुड़ी रहती है और कर्तव्य का पथ निस्संदेह इतना कंटकाकीर्ण होता है कि उसमें भावना छलनी होती रहती है। यदि गुरु शिष्य को कर्तव्य की धधकती भट्टठी में न झोंक सके तो शायद वह उसे गढ़ भी नहीं सकता।

जब शिष्य गुरु की हर परीक्षा में सर्वोत्तम अंक से उत्तीर्ण होता है तो गुरु का शिष्य के प्रति एक सहज ही भावनात्मक लगाव हो जाता है और यह भी संभव है इस लगाव की वजह से गुरु अपने शिष्य की कुछ चीजों को नजरअंदाज कर जाए, कुछ भी पक्षपात भी कर लें। यह तभी तक उचित है, जब उसमें किसी की अत्यधिक हानि न होती हो, परन्तु अपने शिष्य को सबसे श्रेष्ठ बनाए रखने के लिए, जगतविख्यात करने के लिए किसी का बलिदान लेना कहाँ उचित है! कैसा न्याय है! यह मेरी समझ में नहीं आ रहा।''

आचार्य द्रोण स्तब्ध थे, हतप्रभ थे, आश्चर्यचकित थे कि इस बीहड़ जंगल में भील की इस झोंपड़ी में ऐसा कोई होगा, जो उन्हें अंदर से झकझोर देगा। एकाएक उन्हें कुछ सूझा नहीं, वे कुछ बोलते, इसके पहले उस बुजुर्ग ने अपने प्रश्नों के तीर फिर चला दिए- ''हे आचार्य! आप अपने अन्तर से पूछकर बताएँ कि जब आपने भील बालक एकलव्य को यह कहकर दुत्कार कर भगा दिया था कि आपकी विद्या के हकदार केवल राजकुमार ही हैं और आप केवल राजगुरु हैं, परंतु जब उसने अपनी समस्त भावना एवं श्रद्धा आपकी मिट्टी की मूर्ति में डालकर सजीव करके उससे धनुर्विधा सीख ली तथा शब्दबेधी शर-संधान में पारंगत हो गया, तब उसने सारी बात आपसे स्पष्ट रूप से भोले मन से कह भी दी थी। क्या उसके प्रति आपके अंतस में थोड़ा सा भाव भी नहीं जागा, आप उससे जरा भी संवेदित नहीं हुए। वह तो एक निरा बालक था और अर्जुन के लिए चुनौती भी नहीं बन रहा था।

''हे आचार्य! आपको तो उसे पर अंतस

से प्रसन्न होना चाहिए था। सही कहें आचार्य! क्या उस पर आप प्रसन्न हो सके थे। क्या उसको लेकर आपके मन में शंका पैदा नहीं हुई थी कि कहीं यह बालक मेरे द्वारा अर्जुन को दी हुई धनुर्विद्या से आगे नहीं बढ़ जाएगा। क्या उस समय आपके मन में अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं आया! क्या अर्जुन को तीनों लोकों में सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी बनने की दिशा में एकलव्य चुनौती बनकर खड़ा नजर नहीं आ रहा था। कहिए आचार्य! यदि ऐसा नहीं है तो आपने गुरु दक्षिणा के बहाने उसके दाहिने हाथ का अंगुठा क्यों मांग लिया। क्या आप नहीं जानते कि एक धनुर्धारी के लिए अंगूठे का क्या महत्व है। यदि आपमें साहस होता तो आपने एकलव्य को अपना लिया होता। भील ने आगे कहा– ''माफ करें आचार्य द्रोण! इस मामले में आप कायर हैं, आपके उपदेश निरें ढोंग है– पर उपदेश कुशल बहुतेरे की भाँति आपको इतिहास कभी माफ नहीं करेगा। आपने छल से भील बालक को समाप्त किया, परंतु एकलव्य से आप कभी पीछा नहीं छुड़ा सकते, वह हमेशा आपका पीछा करता रहेगा, उसकी निश्छल, निर्मल आँखों के आँसू एवं धरती पर गिरा रक्तसनित अँगूठा आपके हृदय को छलनी करता रहेगा। जीवन आपको भार लगने लगेगा। कैसे करेंगे आप प्रायश्चित।

यह कहते हुए वह भील मूर्च्छित हो गया। मूर्च्छित होने से पहले उसने बताया था कि वह एकलव्य का दादा है और अँगूठा देने के पश्चात एकलव्य गुमसुम रहता है, वह कुछ नहीं बोलता है, जैसे अँगूठे के साथ उसके जीवन की आशा और सारी जिंदगी छिन गई हो। आचार्य ने माता कृपि से कहा– ''हे देवी! यही मेरे अपराध-बोध का कारण है।'' माता कृपि सुनती रही, उनके पास शब्द नहीं थे सांत्वना के, वे चुप रहीं। आचार्य द्रोण के सामने एकलव्य का मासूम चेहरा घूमता रहा और स्वयं को वे धिक्कारते रहे, परंतु घटना तो घट चुकी थी जिसके अपराधी कोई और नहीं, वे स्वयं थे।

इतिहास की इस घटना से आज के शिक्षकों को विचार करना चाहिए कि जो वह प्रतिदिन अपने शिष्यों के साथ कर रहें है क्या ये कृत्य उनका जीवन भर पीछा छोड़ेंगे।

द्रोणाचार्य का यह दृष्टान्त सर्वकालीन एवं सबके लिए विचारणीय है। हम अपने भीतर में बैठे शिक्षक का समय-समय पर निरपेक्ष भाव से अवलोकन करते हुए स्वयं का मूल्यांकन करें। जहाँ कहीं हमें स्वयं अपने चरित्र, वाणी-व्यवहार से कुछ छात्रों के प्रतिकूल अथवा यों कहे कि शिक्षकीय शिष्टाचार के विपरीत होता दिखाई दे; तत्काल उसे रोंके ताकि आपके आदर्श शिक्षक बन सकने के मार्ग में कोई विकार उत्पन्न न हो सके। इसी में एक इंसान के रूप में तथा एक शिक्षक के रूप में आपकी महानता का उद्घाटन होता है।

शिक्षक बनना किसी सौभाग्य से कम नहीं समझा जाना चाहिए। शिक्षक बनकर एक व्यक्ति न केवल इस लोक में अपनी तथा अपने परिवार की वृत्ति का इंतजाम कर लेता है; वरन अपने सद्कार्यों के बल पर परलोक-परिष्कार का भी प्रबन्ध कर लेता है। वह उस बाग का बागवां है जिसमें नन्हें-नन्हें बाल गोपालों के रूप में मन का हर्षित व उमंगित कर देने वाले पुष्प खिलते हैं जिन्हें खाद-पानी देकर सुगन्धित व परहितकारी पेड़-पौधों के रूप में इंसानों की रचना करता हैं वह उस पारस के सदृश होता है जिसका स्पर्श पाकर लोहा भी सोना बन जाता है, अर्थात् नितान्त अगढ़े व अपढ़े बालक ज्ञान व कौशल की दृष्टि से सिरमौर बन जाते हैं। यह अद्भुत विशेषता केवल शिक्षकों में ही है। शिक्षक की इन्हीं विशेषताओं से प्रभावित होकर भारत के प्रसिद्ध कवि श्री रघुवीरशरण मिश्र ने कदाचित इन खूबसूरत पंक्तियों की रचना ही होगी–

ऐसे सत्य सिखाना सब को,
अनाचार जग से मिट जाए।
मिटे स्वर्ग की असत कल्पना,
शाश्वत सत्य धरा पर आए।।
तुम भू के भगवान,
तुम्हारे चरणों में ईश्वर मिलते हैं।
तुम अन्तर के माली,
तुम से फूल जिन्दगी के खिलते हैं।।
मैं भूलूं पर तुम मेरी
भूलों पर उदास न होना।
तुम शिक्षक विद्वान,
तुम्हारी प्रतिभा से लोहा भी सोना।।

प्रधानाध्यापक, रा.मा.वि., फतेहपुर, संगरिया-हनुमानगढ़
मो. 9460688160

उत्सव-पर्व

उत्सव-पर्वों की सार्थकता सिद्ध करें स्कूल

❒ गुरजीत सिंह बरार

हर किसी समाज में कोई न कोई उत्सव-पर्व आए दिन मनाया जाता रहता है। हमारा देश भारत तो उत्सव-पर्वों का देश कहलाता ही हैं। यहां साल में 365 दिनों के मुकाबले यदि जायजा लें तो कहीं अधिक, सैंकड़ों-हजारों उत्सव मनते दिखाई दे जाएंगे। विभिन्न जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय के पर्व सब लोग मिलजुल कर मनाते हैं। अनेकता में एकता का महान सूत्र सहज ही में इन उत्सव-पर्वों को मनाते समय हम देख सकते हैं। दीवाली व ईद को मनाते समय कहीं हिन्दू -मुसलमान होना नहीं दिखाई देता बल्कि भारत और भारतीयता का भाव सर्वत्र खुश्बू फैला रहा होता है।

विद्यालय वस्तुतः समाज के लघु रूप होते हैं। जिस समाज में विद्यालय स्थित होता है, उसके अलग-अलग परिवारों के बच्चे वहां आकर पढ़ाई करते हैं। ये बच्चे न केवल भावी भारत के सपने हैं, अपितु आज भी अपने-अपने घर परिवार में उनके द्वारा विद्यालयों में ग्रहण की गई शिक्षा के उत्तम संस्कारों को व्यावहारिक जामा पहुंचाने वाले संस्कारदूत हैं। ऐसे में विद्यालयों का यह दायित्व बन जाता है कि वे वहां आयोजित होने वाले सभी उत्सव-पर्वों को उत्सव दर्शन (Festival Philosophy) एवं बाल मनोविज्ञान को दृष्टि में रखकर आयोजित करें ताकि उनसे प्राप्त शिक्षकों से बालक उत्तम राष्ट्र की संरचना कर स्वयं के नागरिक उत्तरदायित्वों को निर्वहन करें। उत्सव पर्वों के मंगल आयोजन का उद्देश्य सामाजिक समरसता, प्रेम एवं सद्भाव का बीजारोपण समकालीन समाज में करना है जो राष्ट्र एवं समाज की अनमोल संरचना (Valuable construction) का आधार बनता है।

इन उद्देश्यों की सम्प्राप्ति के लिए वर्ष भर के उत्वस-पर्वों की सूची अनुसार वार्षिक, मासिक एवं उत्सव-पर्ववार कार्य योजना बनाई जानी चाहिए। वैसे तो सांस्कृतिक रुचि एवं कार्यक्रमों के आयोजन की दृष्टि रखने वाले किसी शिक्षक को समग्र उत्सव-पर्व आयोजन सचिव नामित करें, मगर साल भर आयोजित होने वाले उत्सव-कार्यक्रमों के लिए विद्यालय के सभी शिक्षकों को क्रमवार यह उत्तरदायित्व दिया जाना चाहिए। इससे उनकी सहभागिता बढ़ेगी तथा स्वयं उनके व्यक्तित्व का भी विकास होगा। सारांशतः कह सकते हैं कि उत्सव-पर्व आयोजन का कार्य विद्यालय का अहम् कार्य है जिसे समुचित प्राथमिकता एवं पहल देकर आयोजन की सार्थकता को सिद्ध करना चाहिए।

-प्रधानाचार्य, रा. उ.मा.विद्यालय, तामकोट
वाया-पदमपुर, श्रीगंगानगर

परीक्षा चिन्तन

परीक्षा क्यों और किसलिए

❒ डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर

एक बेहतर समाज के लिए हर व्यक्ति को अपनी योग्यता का भरपूर लाभ समाज को देना जरूरी है। इस हेतु समाज के उन सभी अंगों को तलाशा गया, जिससे समाज समग्रता पाता है। उनकी तैयारी के लिए औपचारिक और अनौपचारिक विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक की व्यवस्था की और उनमें तदनुसार विषयों का अध्ययन और केंद्र की व्यवस्था भी की गई है। फिर भी, परंपरा से चले आ रहे परिवार विशेष अपनी योग्यता और क्षमताओं से समाज को लाभांवित करते रहे हैं और कर भी रहे हैं। मौन के लिए मूल्यांकन की व्यवस्था की और उसके लिए लिखित तथा मौलिक अथवा दोनों प्रकार की व्यवस्था की जाती है।

आज लिखित परीक्षा का दौर चल रहा है। परीक्षा लेने के लिए परीक्षा बोर्ड बनाए गए हैं। इस सबका इतना विस्तार हो गया है कि आज परीक्षा बोर्ड व्यवस्था ही गड़बड़ा गई है और पुनः परीक्षा की व्यवस्था करनी पड़ने लगी है। अचरज इस बात से हुआ कि परीक्षा का सम्पूर्ण ढांचा ही संदिग्ध होता नजर आने लगा है। यहाँ तक कि परीक्षा उत्तीर्ण किए बिना ही उपाधियों का चलन और पकड़ने लगा है। नकल को भी उसने पीछे छोड़ दिया है। यों पाठ्यपुस्तकों से लेकर शिक्षा व्यवस्था के केंद्र संदेह के घेरे में आते जा रहे हैं। कारण खोजे जाने लगे, उसके लिए समितियां आयोग बने। उनकी खबरें आने लगीं। उन पर भी विवाद उठे। अच्छाई की ठीक-ठीक पता चलना कठिन होता जा रहा है। पब्लिक सर्विस कमीशन भी सफल प्रतीत नहीं हो रहा है। देश में नैतिकता को लेकर बड़े पैमाने पर गोष्ठियां, कार्यशालाएं आयोजित की जाकर पुस्तक लेखन हुआ है पर परिणाम में उनसे भी कोई सुधार नहीं हुआ।

कोई भी देश निरंतर चरित्र खोते हुए कदापि उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता। जब बाजारवाद और भूमंडलीकरण के प्रभाव में आकर संस्कृति, सभ्यता, नैतिकता और संवेदनशीलता को ही बाजार में बैठाया हो, तब इस दिशा में अनुकूल परिणाम आने का मन बना बैठना कोरी कल्पना है।

फिर भी हमें निराश नहीं होना है। अति पतन के अंधकार के बाद सूर्योदय होना सुनिश्चित है। काश, स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ जिस प्रकार की आस्था, जिजीविषा, आत्मबल, त्याग और समर्पण का उदाहरण सामने आया था, यदि वह बनाए रखने का प्रयत्न होता तो अपना देश स्वावलम्बन, परस्पर सहयोग और मानवीय आचरण की एक जीवंत मिसाल बनकर अन्य देशों के लिए अनुकरण का केंद्र बन गया होता।

अब सीधे-सीधे मार्च के मौसम पर आ जाएं। यह समय परीक्षाओं का होता है। परीक्षार्थी परीक्षा की तैयारी में जुटे होते हैं। पाठ्यपुस्तकें तो एक तरफ रह जाती है और पास-बुकों का मेला लग जाता है। ट्यूशन की गैरकानूनी दुकानों पर मजमा नजर आता है। इसी के साथ अनैतिक तरीकों के दलालों की गतिविधियां बढ़ जाती है। ठेकेदार निकल पड़ते हैं और अधिकांश परीक्षार्थी उनके जाल में फंस जाते हैं। अपनी लोककल्याणी सरकार इस दुष्चक्र के प्रति सहानुभूति से हाथ धोना नहीं चाहती।

तब क्या करें? तनिक अपने से पूछकर तो देखो कि वह क्या कहता है? इस अनैतिकता की ओर नई पीढ़ी को, जिसके मोर्चा संभालने की प्रतीक्षा हो रही है, किसने और क्यों ढकेला है।

अव्वल तो परीक्षार्थी को पाठ्यपुस्तकों (यदि वे समीचीन हो) को केंद्र में रखकर प्रारंभ से तैयारी करनी थी। यदि नहीं की (किन्हीं कारणों से), जैसे पाठ्यपुस्तकों का समय पर न मिलना, संबंधित अध्यापक का न होना, शिक्षक का अपने विषय पर ध्यान न देना आदि, तो घबराओ नहीं। मैंने ऐसे प्रयोग किए और कराए हैं।

स्मरण रखें, परीक्षा का दबाव अपने ऊपर हावी न होने दे। आप जिस स्थिति में हैं, उसी में बने रहकर, प्राप्त समय के अधिकाधिक प्रयोग करने पर ध्यान दें। माना कि काफी कोर्स अनपढ़ा रह गया। इससे चित्त में खलबली होना स्वाभाविक हैं इसी को नियंत्रित बनाए रखना जरूरी है ताकि जितना समय अध्ययन को मिले, उस पर पूरा ध्यान रख सको और समझते हुए उसके प्रयोग पर ध्यान दे सको।

मन एकाग्र करना सफलता के लिए बहुत जरूरी है। इसके लिए अपने दिमाग का उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण तराजू में कभी नहीं तोलो। इसके लिए मैं नीचे दो उदाहरण दे रहा हूं-

1. हुमायूं की लापरवाही ने उसे शेरशाह सूरी से पराजित होना पड़ा जो उसके अधीनस्थ था।
2. बाबर राणा सांगा से हार रहा था। उसकी सेना भी हतोत्साह हो गई थी परंतु ऐसी विषम स्थिति में बाबर ने आत्मबल बनाए रखकर अपने सैनिकों के आत्मबल ऐसे उकेरा कि वह विजयी हो सका। हार जीत मे सुई के बराबर अंतर होता है। जो अपने को संभाल लेता है और हौंसला बनाए रखता है वह जीतता ही है।
3. दो विपरीत स्थितियों में भी संयम और ध्यान-धैर्य बहुत काम आता है।
4. प्रश्नपत्रों को ध्यान से देखो। प्रश्न की मंशा समझो और फिर उत्तर लिखो।
5. प्रश्न कितने अंक का है, उसी के अनुसार उत्तर दो/ समय दो।
6. यह सोच नहीं होनी चाहिए कि अधिक लिखने से अंक भी अधिक प्राप्त किए जा सकते हैं। अधिक लिखने में समय ज्यादा आता है और अन्य प्रश्नों के उत्तरों के लिए समय कम मिल पाता है। फलतः वे प्रश्न

आधे-अधूरे उत्तर पाकर रह जाते हैं।

7. सबसे पहले वह प्रश्न हल करो, जिसका उत्तर देने में आप अधिक सक्षम है। प्रयत्न यही रहे कि बीच में यदि एक-दो प्रश्न/प्रश्नों के उत्तर सटीक देते नहीं बनता हो तो उन्हें करों/ उनका उत्तर दो।
8. फिर ऐसे प्रश्न का उत्तर दो, जिसका उत्तर देने में मन-बुद्धि दोनों तत्पर हों।
9. चाहे कम लिखों परंतु जो लिखो, वह स्पष्ट हो और चाहे गए उत्तर से मेल खाता हो।
10. कभी भी परीक्षा देने के लिए तैयार होकर जाते समय रास्ते में पढ़ने की सामग्री साथ मत रखों। बेहतर यह रहें कि उस समय अपना ध्यान वहां से हटाकर बने रहो। मन ही मन कुछ मत दोहराओं। ऐसा करने से मन के अस्थिर होने की संभावना रहती है।
11. उत्तर पुस्तिका के ऊपर छपे निर्देशों का सावधानी से अध्ययन कर लीजिए। प्रश्नों के उत्तर देते समय कहाँ पंक्ति छोड़नी है, कहाँ अगले पृष्ठ पर चले जाना है, किस पृष्ठ पर रफ कार्य करना है आदि के बारे में जानकारी इन निर्देशों में दी हुई होती है जिनका पूर्ण पालन करना चाहिए।
12. प्रश्न पत्र में प्रत्येक प्रश्न के शुरू होने में जो प्रक्रिया अपनाई हैं, उसी के अनुसार प्रश्न की संख्या लिखो।
    जैसे-प्रश्न पत्र में प्रश्न इस तरह प्रारंभ हुआ है- "1-" या "(1)" तो आप उत्तर पुस्तिका में उत्तर देने से पूर्व 1 या (1) ही लिखो।
13. कभी नकल करने का प्रयत्न मत करो। परीक्षा कक्ष में चित को स्थिर रखें। अपनी तैयारी एवं ईश्वर में विश्वास रख कर आगे बढ़ते रहे। याद रखें, नकल की चेष्टा करने वाले अपना स्वयं का खजाना भी परोक्षत गंवा देने का काम करते हैं।
14. प्रश्न पत्र शुरू होने से पूर्व यदि कोई निर्देश दिए गए हों तो उन्हें ध्यान से जरूर पढ़ो।
15. विकल्पात्मक प्रश्नों के उत्तर त्वरित गति से देने है। आजकल प्रायः विकल्पात्मक प्रश्न ज्ञान के होते हैं, थोड़ा-थोड़ा सोचकर उत्तर देने के नहीं। वस्तुतया ज्ञान के प्रश्नों के लिए प्रश्न पत्र में विकल्पात्मक प्रश्नों की व्यवस्था होनी चाहिए।

अंत में उम्मीद करूंगा कि आप बिना आत्मविश्वास खोये प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम रहेंगे। प्रश्न के उत्तर देने में सक्षम रहेंगे। प्रश्न के उत्तर में आधी परीक्षा आत्मबल की ही होती है। प्रश्न को ध्यान से पढ़ना चाहिए, ताकि उत्तर देने में सुगमता रहे। यह कहावत गांठ में बांध लो कि मन के हारे हार है, मन के जीते जीत, जीता मन स्थिर तो कामयाबी भी निश्चित।

(लेखक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकार, शिक्षाविद् एवं शिविरा के सक्रिय हितैषी हैं।)

105-ए, सेक्टर 9, हिरण मगरी, उदयपुर
फोन 0294-2583840

इस माह का गीत

साधना का पथ कठिन है

शपथ लेना तो सरल है, पर निभाना ही कठिन है,
साधना का पथ कठिन है, साधना का पथ कठिन है।

शलभ[1] बन जलना सरल है, मोह की जलती चिता पर,
स्वयं को तिल-तिल जलाकर दीप बनना ही कठिन है,
साधना का पथ कठिन है, साधना का पथ कठिन है।।1।।

है उमंगतरंग जो युगों से लहर के अनुकूल बहते,
अनुकूल बहना तो सरल है, प्रतिकूल बहना ही कठिन है,
साधना का पथ कठिन है, साधना का पथ कठिन है।।2।।

तप तपस्या के सहारे इन्द्र बनना तो सरल है,
स्वर्ग का ऐश्वर्य पाकर मद भुलाना ही कठिन है,
साधना का पथ कठिन है, साधना का पथ कठिन है।।3।।

ठोकरें खाकर युगों से नियति मानव जी रहा है,
सरल है आँसू बहाना, मुस्कराना ही कठिन है,
साधना का पथ कठिन है, साधना का पथ कठिन है।।4।।

शपथ लेना तो सरल है, पर निभाना ही कठिन है,
साधना का पथ कठिन है, साधना का पथ कठिन है।

1. पतंग; फतिंगा; टिड्डी; छप्पय छंद का भेद, असुर। साहित्य में शलभ (पतंग) को प्रेमी का प्रतीक माना गया। पतंगा जलते दिये में अपने प्राण होम देता है।

पुण्यतिथि विशेष

एकात्म मानववाद के दृष्टा : पं. दीनदयाल उपाध्याय

❒ आत्माराम नवलगढ़िया

अब से पचास वर्ष पूर्व 22 से 25 अप्रैल 1965 को मुम्बई में पं. दीनदयाल उपाध्याय ने 'एकात्म मानववाद' की व्याख्या करते हुए बहुत ही भावपूर्ण शब्दों में व्याख्यान का समापन करते हुए कहा– "विश्व का ज्ञान और आज तक की अपनी सम्पूर्ण परम्परा के आधार पर हम ऐसे भारत का निर्माण करेंगे, जो हमारे पूर्वजों के भारत से भी अधिक गौरवशाली होगा, जिसमें जन्मा मानव अपने व्यक्ति का विकास करता हुआ, सम्पूर्ण मानवता का ही नहीं, अपितु सृष्टि के साथ एकात्मकता का साक्षात्कार कर 'नर से नारायण' बनने में समर्थ हो सकेगा। यह हमारी संस्कृति का शाश्वत् दैवी और प्रवाहमान रूप है। चौराहे पर खड़े विश्व–मानव के लिए हमारा दिग्दर्शन है। भगवान हमें शक्ति दे कि हम इस कार्य में सफल हों, यही प्रार्थना है।"

पं. दीनदयाल उपाध्याय ऋषि व्यक्तित्व थे। 'एकात्म मानववाद' की पृष्ठभूमि के दो 'आयामों' की व्याख्या उनके द्वारा की गई थी। प्रथम पाश्चात्य जीवन दर्शन तथा द्वितीय भारतीय संस्कृति। 'मानववाद' मुख्यतः पाश्चात्य अवधारणा है तथा 'एकात्मकता' भारतीय। 'एकात्म मानववाद' पाश्चात्य 'मानववाद' के भारतीय करण की प्रक्रिया की फलश्रुति है। उनके अनुसार "हमें ज्ञान का आदान–प्रदान विश्व के प्रत्येक देश से करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए पर ऐसा करते समय हमें अपने जीवन मूल्यों का स्मरण रखना होगा।" वे इस बात को भी स्वीकार करते थे कि भारतीय संस्कृति की अनेक रूढ़ियों को समाप्त करना होगा।

पं. दीनदयाल उपाध्याय (बचपन का नाम 'दीना') का जन्म अश्विन कृष्णा त्रयोदशी संवत् 1973, दिनांक 25 सितम्बर, को श्री भगवती प्रसाद उपाध्याय के घर हुआ था। इनका पैतृक गाँव मथुरा जिले में चन्द्रभान ग्राम था। इनकी माताजी का नाम श्रीमती रामप्यारी था जो फतेहपुर सीकरी के पास आगरा जिले में गुढ़ की मंढई ग्राम के श्री चुन्नी लाल की पुत्री थी। उनके पिता जलेसर ग्राम में सहायक स्टेशन मास्टर थे तथा उनके नाना श्री चुन्नी लाल शुक्ल, जयपुर जिले में धानक्या ग्राम में स्टेशन मास्टर थे। पारिवारिक कारणों से वे ढाई वर्ष के अ में अपने छोटे भाई शिवदयाल 'शिबू' तथा माता

रामप्यारी के साथ अपने नाना के पास रहने लगे थे। कुछ समय बाद ही उनके पिताश्री भगवती प्रसाद का देहान्त हो गया तथा इसके पश्चात माता का भी आकस्मिक निधन हो गया। माता–पिता के निधन के पश्चात् उनके नाना नौकरी छोड़कर अपने घर गुढ़ की मंढई आ गये। उनके साथ दोनो भाई दीनदयाल एवं भाई शिवदयाल भी साथ आ गये।

प्रारम्भिक शिक्षा– सन् 1925 में वे अपने मामा श्री राधारमण शुक्ल के पास जो कि गंगापुर (जिला सवाई माधोपुर) में सहायक स्टेशन मास्टर थे, के पास रहते हुए प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ हुई। यहाँ पर 4 वर्ष तक रहे। इसके पश्चात् 12 जून, 1929 को एक स्कूल में प्रवेश लेकर 'सेल्फ सपोर्टिंग हाउस' में रहते हुए कक्षा 5,6 एव 7 उत्तीर्ण की। कक्षा 8 में प्रवेश के लिए अपने मामा श्री राधारमण शुक्ल के चचेरे भाई नारायण शुक्ल के पास आ गये जो कि उस समय राजगढ़ (अलवर) में स्टेशन मास्टर थे। यहाँ पर वे दो वर्ष रहे तथा कक्षा 8 एवं 9 उत्तीर्ण की। अंकगणित में उनकी अद्भुत क्षमता का परिचय मिला। कहते हैं कि जब वे कक्षा 9 में पढ़ते थे उस समय कक्षा 10वीं के छात्र उनके पास सवाल हल करवाने आते थे। 1934 में श्री नारायण शुक्ल का स्थानान्तरण सीकर होने के कारण उन्होंने भी सीकर में कल्याण हाई स्कूल में कक्षा 10 में प्रवेश लिया जहाँ पर समस्त बोर्ड में सर्वप्रथम रहे। उस समय के सीकर महाराजा श्री कल्याण सिंह ने उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान किया, पुस्तकों के लिए 250 रु. तथा 10 रुपये माहवार छात्रवृत्ति प्रदान की। 1935 में उन्होंने पिलानी के बिड़ला कॉलेज में इन्टरमीडिएट में प्रवेश लिया तथा 1937 में इन्टरमीडिएट में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करने पर तथा विषयों में विशेष योग्यता के अंक प्राप्त करने पर श्री घनश्याम दास बिड़ला द्वारा स्वर्ण पदक, 10 रुपये मासिक छात्रवृत्ति तथा 250 रु. पुस्तकों आदि से सम्मानित किया। 1939 में सनातन धर्म कॉलेज कानपुर से प्रथम श्रेणी में बी.ए. तथा एम.ए. अंग्रेजी साहित्य प्रथम वर्ष परीक्षा सेन्ट जोन्स कॉलेज आगरा से पास की। अपनी ममेरी बहिन रामा की बीमारी एवं निधन के कारण एम.ए. उत्तरार्द्ध की परीक्षा नहीं दी। मामाजी के आग्रह पर वे प्रशासनिक परीक्षा में सम्मिलित हुए तथा साक्षात्कार में चयन हो गया परन्तु प्रशासनिक नौकरी में रुचि नहीं होने के कारण नौकरी नहीं की। 1941 में प्रयाग से बी.टी. की परन्तु नौकरी यहाँ भी नहीं की। उपाध्याय जी ने आजन्म गृहस्थी नहीं बसाई।

लेखक एवं पत्रकार– 1946 में उनके द्वारा लिखित पुस्तक सम्राट चन्द्रगुप्त एवं जगद्गुरु शंकराचार्य नाम उपन्यास प्रकाशित हुआ। 'पांचजन्य', 'हिमालय' एवं 'राष्ट्रभक्त' समाचार पत्र का सम्पादन भी इनके द्वारा किया। इनके अतिरिक्त 'दो योजनाएं–वायदे, अनुपालन आसार, भारतीय अर्थनीति–विकास की एक दिशा, अवमूल्यन–एक महान क्षति' भी प्रकाशित हुई।

वे लोकतंत्र के पुरोधा थे तथा भारतीय संस्कृति के अधिष्ठान पर ही राष्ट्रीय स्वातंत्र्य को गढ़ना चाहते थे। उनका दृढ़ता पूर्ण विश्वास था कि संस्कृत सम्पूर्ण भारत के विद्वजन की व्यवहार भाषा थी। उनका मत था कि भारत की प्राचीनतम भाषा संस्कृत को संवैधानिक राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाए तथा हिन्दी को राष्ट्र की संपर्क भाषा के रूप में विकसित किया जाए। उनके अनुसार "राजनीतिज्ञ भाषा के नाम पर लड़ सकते हैं, पर भाषा का सृजन नहीं कर सकते।"

राष्ट्रीय स्वयं संघ से सम्पर्क– कानपुर व प्रयाग में अध्ययन के समय उन्होंने 1939 एवं 1942 में 40 दिवसीय संघ शिक्षावर्ग का प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1942 से 1945 तक लखीमपुर (उत्तर प्रदेश) में प्रचारक रहे तथा 1945 में उनको सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश का सहप्रांत

प्रचारक मनोनीत किया गया। 1952 से 1967 (15 वर्ष तक) वे जनसंघ के महामंत्री रहे। दिसम्बर 1967 कालीकट अधिवेशन उन्हें अध्यक्ष बनाया गया।

विदेश यात्रा–दिसम्बर 1963 में 'फ्रेण्डस ऑफ सोसायटी' के निमंत्रण पर 6 सप्ताह की यात्रा पर अमेरिका गये। इसी अवधि में जर्मनी इंग्लैण्ड और पूर्वी अफ्रीका की यात्रा भी की। अमेरिका यात्रा दौरान टैक्सास के राज्यपाल द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय जी को मानद नागरिकता प्रदान कर सम्मानित किया गया। विदेश यात्रा के दौरान उन्होंने विदेशों में भारत के प्रति व्याप्त गलत धारणाओं को दूर करते हुए भारतीय संस्कृति की प्रति विशेषताओं को अवगत कराते अखण्ड भारत एवं राष्ट्रप्रेम की भावना का पाठ पढ़ाया। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने राष्ट्रप्रेम के प्रति निर्मित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के गठन में भी महत्वपूर्ण भूमिका रही जिसका 9 जुलाई 1949 को औपचारिक पंजीकरण हुआ था।

महाप्रयाण–1967 में 29, 30, 31 दिसम्बर को ऐतिहासिक कालीकट अधिवेशन में पं. उपाध्याय जी जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 11 फरवरी 1968 को भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 11 फरवरी 1968 को भारतीय जनसंघ के संसदीय दल की बैठक में दिल्ली आने का कार्यक्रम तय था। परन्तु अचानक कार्यक्रम में परिवर्तन हुआ और पटना में सम्पन्न होने वाली बिहार प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में जाना तय हुआ।

10 फरवरी 1968 को लखनऊ से सायंकाल 7 बजे पठानकोट स्यालदेह एक्सप्रेस में प्रथम श्रेणी में डिब्बे पर सवार हुए। स्यालदेह–पठानकोट एक्सप्रेस सीधी पटना नहीं जाती थी। गाड़ी रात्रि को 2.15 बजे मुगल सराय स्टेशन के प्लेटफार्म नं. 1 पर पहुंची तो जिस बोगी में वे यात्रा कर रहे थे, इस गाड़ी के डिब्बे से काटकर शंटिग करके दिल्ली–हावड़ा एक्सप्रेस में जोड़ दी गई, जो मुगलसराय से 2.50 बजे रवाना हुई। प्रातःकाल ट्रेन पटना पहुंची परन्तु ट्रेन में वे नहीं पहुंचे।

11 फरवरी 1968 को 3.45 बजे प्रातःकाल मुगलसराय स्टेशन को लीवरमैन ने टेलीफोन पर सहायक स्टेशन मास्टर को स्टेशन से लगभग 150 गज पहले, लाइन से दक्षिण की ओर बिजली के खंभा नं. 1276 के नजदीक कंकड़ों पर एक मृतक व्यक्ति के शव के पड़े रहने की सूचना दी। शव को स्टेशन पर लाकर डॉक्टर से परीक्षण करवाया गया जिसे मृत घोषित किया। अभी तक समझ रहे लावारिश शव को भीड़ में खड़े एक व्यक्ति ने पहचाना। विद्युत तरंग की तरह समाचार पूरे देश में फैल गया और विवाद छा गया।

पार्थिव शरीर को विमान से श्री अटल बिहारी वाजपेयी को प्राप्त आवास 30, राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, लाया गया। 12 फरवरी को भारत के महामहिम राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन, प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी एवं उप प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई श्रद्धांजलि अर्पित करने पहुंचे। सायं 7 बजकर 23 मिनट पर पंचतत्व में विलीन हो गया भारत माँ का लाडला लाल दीनदयाल।

आकाश में उनकी भौतिक देह को आत्मसात करने के लिए जो लपटें उठी थीं, वे ही युग तक आलोक दीप दिखाती रहेंगी। उनके जीवन का अन्त नहीं हुआ। वह सम्पूर्ण हुआ और सम्पूर्णता का अर्थ आँसू नहीं, कर्म है। उनका देवलोक गमन एक युग का अवसान है। धूल से निकला अनमोल रत्न अमर हो गया। ऐसी महान आत्मा के लिए यही कहा जा सकता है–

फटे हुए माता के आँचल को बढ़कर सीने वाले।
तुझे बधाई है ओ पागल मर कर जीने वाले।।

'हम चुनौती स्वीकार करते हैं' इस शीर्षक से समाचारों में प्रकाशित श्री अटल बिहारी वाजपेयी का वक्तव्य इस प्रकार था–

''आइये, पंडितजी के रक्त की एक–एक बूंद को माथे का चंदन बनाकर ध्येय पथ पर अग्रसर हों। उनकी चिता से निकली एक–एक चिंगारी को हृदय में धारण कर परिश्रम की पराकाष्ठा और प्रयत्नों की परिसीमा करे। इस दधीची की अस्थियों का बज्र बनाकर वृत्रासुरों पर टूट पड़े और पवित्र भूमि को निष्कंटक बनाए'' उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया तथा गृहस्थी जीवन में प्रवेश नहीं किया।

एडवोकेट,
राजस्थान उच्च न्यायालय
एस–25, शिवात्मा, महेश नगर, जयपुर
मो. 9414635134

स्वाध्याय

पाठ्येतर पुस्तकें पढ़ने की आदत

❒ डॉ. चेतना उपाध्याय

कुछ लोग हमेशा शिकायत करते रहते हैं कि गुलाब में काँटे होते हैं। मैं तो काँटों की आभारी हूँ कि उनमें गुलाब खिलते हैं।

कुछ ऐसी सकारात्मकता को साथ रख विषय पर आगे बढ़ने का प्रयत्न करती हूँ, क्योंकि सूचना और संचार क्रांति के इस वैश्विक युग में पाठ्येतर पुस्तकें पढ़ने की आदत पर प्रश्नवाचक चिह्न दिखाई देना कुछ स्वाभाविक ही है। वर्तमान में पाठ्येतर पुस्तकों के प्रकाशन की संख्या अवश्य बढ़ी है, मगर पुस्तकें पढ़ने वालों की संख्या में काफी गिरावट आई है। नवीन शोधानुसार 80 प्रतिशत युवाओं ने कभी ये पुस्तकें खरीदी ही नहीं। 70 प्रतिशत पिछले 5 वर्षों में पुस्तकालय कभी गए ही नहीं। कुछ ऐसे भी हैं जो पुस्तकालय या पुस्तक प्रदर्शनियों में गए तो हैं पर पन्ने पलट–उलट कर आ गए। पुस्तकों से आकर्षित नहीं हुए, अतः वहां रुक नहीं पाए। 64 प्रतिशत युवाओं में पुस्तकें पढ़ने की आदत ही नहीं है। 63 प्रतिशत इलेक्ट्रानिक्स के साथ व्यस्त हैं और जब हम पढ़ते नहीं है तो शब्दों को ठीक–ठीक समझने की क्षमता से वंचित रह जाते हैं जबकि पढ़ना समझना जीवन जीने की अतिआवश्यक कुंजी है। जो कि जीवन की जटिलताओं में सहजता प्रदान करती है।

आमतौर पर पाठ्यक्रम से जुड़ी पुस्तकों का अध्ययन परीक्षाओं को दृष्टिगत रखते हुए किया जाता है। परिणामस्वरूप हम दबाव व सीमा रेखा से सहज ही जुड़ जाते हैं। इस कारणवश पाठ्य पुस्तकों का जितना लाभ मिलना चाहिये, हमें नहीं मिल पाता। पाठ्येतर पुस्तकें किसी दबाव या सीमा रेखा के बगैर पढ़ी जाती है। अतः पढ़ने में स्वाभाविक सहजता से हम अधिक लाभान्वित हो पाते हैं। इसके बावजूद भी पढ़ने की आदत प्रश्नवाचक चिह्न के साथ हमारे समक्ष खड़ी है। सदियों से समाज पर साहित्यिक पुस्तकों का प्रभाव रहा है। पुस्तकें किसी भी समाज का वह प्रेरक तत्व है जो सोए हुओं को जगाती है। जागे हुओं को सक्रिय करती

है। सक्रिय को समाज में समानता, सद्भावना, समरसता को हृदयंगम करते हुए बौद्धिक विकास ओर समृद्धि के पथ पर आगे बढ़ने की ऊर्जा प्रदान करती है। इसके बावजूद भी आज जब हम अपने चारों ओर नजर दौड़ाते हैं तो छोटे बच्चों से लेकर वृद्ध तक पुस्तकों के संवेदनात्मक स्पर्श से अछूते व इलैक्ट्रॉनिक्स के आभासी संसार से घिरे नजर आते हैं। कारण मात्र यह कि आदत नहीं रही। आईये देखते है यह आदत है क्या ''किसी भी कार्य की बारम्बरता से कार्य की प्रवृत्ति में जो प्रगतिवादिता दिखाई देती है जो सहजता से प्रकट हो जाती है वह आदत कहलाती है।

मगर हाँ, आदत डालना खेती करने जैसा जटिल कार्य है। इसमें समय लगता है। यह व्यक्ति के अपने अन्दर से उपजती है। एक आदत दूसरी आदत को जन्म देती है। अतः प्रेरणा एक व्यक्ति से काम शुरु करवाती है। प्रेरणा उसे सही राह पर बनाए रखती है और आदत की वजह से स्थाई रूप ले लेती है और खुद ब खुद होता चला जाता है। आदत प्रक्रिया के चार चरण होते है। यथा–

1. अवचेतन अयोग्यता– यह वह स्तर है जब हम यह भी नहीं जानते कि हम क्या नहीं जानते समझते? पूर्णतः अनभिज्ञता

2. चेतन अयोग्यता– यह वह स्तर है जहां हम कार्य प्रक्रिया के बारे में जानते तो है, मगर स्वयं नहीं कर पाते। जिसे अयोग्यता कहा जा सकता है।

3. चेतन योग्यता– इस स्तर पर कार्य प्रक्रिया की जानकारी आ जाती है योग्यता भी है। मगर कार्य के दौरान अतिरिक्त चैतन्य–सजगता की आवश्यकता होती है।

4. अवचेतन योग्यता– यह अंतिम स्तर है, यह वह अवस्था है जब हम पूर्ण चेतना, सजगता के साथ कार्य प्रक्रिया समझ जाते है, सीख जाते है। और कार्य का निष्पादन स्वतः ही होने लगता है। हमें पता ही नहीं चलता, हम कब, कहाँ, क्यों, कैसे पहुँच गए। समय निकल जाने के बाद यदि जाग हुई तो मुश्किल हो जाती है क्योंकि तब तक हमें आदत अपना गुलाम बना चुकी होती है। गुलामी अंधेरों से फिर उजालों की तरफ लौटना इतना आसान नहीं होता। इसलिए जरूरी है कि हम अपने भीतर अच्छी आदतों के बीज बोएं जो कि श्रेष्ठ पाठ्येतर पुस्तकों के माध्यम से सहज, सुगम व सम्भव है।

हम पुस्तकों से महज इसलिये दूर हो गये कि पुस्तकें पढ़ते वक्त ध्यान केन्द्रित करना पड़ता है। उसमें छुपे गूढ़ अर्थों को समझने के लिए पुनः पीछे वाली पंक्तियों तक भी कई बार जाना पड़ता है। इसमें थोड़ा वक्त तो लगता है, मगर वह जानकारी स्थाई होती है। इसमें कोई दो मत नहीं। वर्तमान वैश्वीकरण के इस युग में ज्ञान का पिटारा, हमें दृश्य श्रव्य माध्यम अर्थात् दूरदर्शन लगने लगा। यहां ध्यान केन्द्रित किये बगैर भी सब कुछ सहजता से समझ में आ जाता है फिर नित नवीन उपकरणों, संसाधनों की उपलब्धता से हमारे दैनिक कार्य इतनी सहजता, सुगमता, से कम समय में ही पूर्ण होने लगे कि हमारे पास समय की उपलब्धता बढ़ गई। इधर पुस्तके पढ़ने में लगने वाला समय भी हमें व्यर्थ महसूस होने लगा। आप हम सभी जानते हैं कि प्रकृति भी खालीपन पसंद नहीं करती। इस खाली समय में हम सही दिशा में चल दिए तो ठीक, वरना वो विपरीत दिशा में चला देती है। हमारे पास अच्छा होता है या बुरा होता है। इन दोनों के बीच कोई निष्पक्ष रास्ता नहीं होता, और इस तरह हमें पता ही नहीं चलता कि हम कब आसान व छोटे रास्तों की तरफ सहजता से बढ़ने लगे। इस तरह से आसान व छोटा लगने वाला रास्ता वास्तव में मुश्किल भी हो सकता है। हम समझ ही नहीं पाए और नवीन इलेक्ट्रॉनिक्स गजेट्स में उलझकर रह गये, पाठ्येतर पुस्तकों से दूर व कम्प्यूटर, मोबाईल, टी.वी. की दुनिया में खो गए। समय कितना आगे निकल गया? हमारी आँख जब खुली तो पाया हम बुद्धु बक्से–से हो गए हैं। इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के गुलाम हो गए है। गुलामी चाहे कैसी भी हो उचित तो नहीं कहा जा सकता ना?

आज हम पुनः स्वतंत्रता के लिए छटपटा रहे हैं। हमारी बैचेनी स्पष्ट दिखाई दे रही है। इसका एक मात्र उपाय है पाठ्येतर पुस्तकों की तरफ लौटना। अपनी आदतों पर नियंत्रण रखते हुए परिवर्तन करना। बुद्धू बक्से के कारण हम बाजारवाद की गिरफ्त में भी अपने आप को जकड़ा हुआ महसूस करते हैं। ऐसे में हमें सच्चे मददगार की आवश्यकता है। आप सभी जानते हैं, पुस्तकों में वो ताकत है। पुस्तकें अच्छे दोस्त व मददगार के रूप में हमारी राहों को पुनः रोशन कर सकती है। हम अपने दैनिक जीवन के अनुभवों से सही व गलत की जानकारी तो रखते हैं। मगर स्वार्थ व मोह माया के जाल में फंसे अक्सर लाभांश का सौदा कर बैठते हैं। पुस्तकीय अध्ययन ऐसे समय में हमसे हमारी पहचान करवा पाने में मदद करता है और हम सही दिशा चुनाव में अपने आपको समर्थ पाते हैं।

आईये लौट चलते हैं पुस्तकों के संसार में पाठ्येतर पुस्तकें पढ़ने की आदत हमारे स्वागत को आतुर है। आवश्यकता सिर्फ योजनाबद्ध रूप में कदम बढ़ाने की है। मजबूत, स्वस्थ इच्छाशक्ति की है।

''अज्ञानी होना उतनी शर्म की बात नहीं है जितनी कि किसी काम को सही ढंग से सीखने की इच्छा न होना''–(बैंजामिन फ्रैंकलिन) पाठ्येतर पुस्तकें पढ़ने की आदत बनाने हेतु अति आवश्यक है कि हम अपने नजरिये को सकारात्मक रखें क्योंकि कामयाबी की बुनियाद एक ही है और वह है हमारा सकारात्मक नजरिया। इस हेतु सर्वप्रथम हम पाठ्य पुस्तकें पढ़ने से होने वाले लाभों की जानकारी लेते हैं ताकि हम स्वप्रेरित होकर उक्त इच्छा की तरफ कदम बढ़ाएं पुस्तक पढ़ने की आदत से हमें शारीरिक, मानसिक व आत्मिक तीनों ही दृष्टिकोण से लाभ प्राप्त होते हैं।

1. रक्त प्रवाह व हृदय की धड़कन सामान्य रखता है।
2. माँसपेशिय तनाव को कम करता है।
3. रोग प्रतिरोधकता को बढ़ाता है।
4. शारीरिक गतिशीलता व ताकत बढ़ाता है।
5. तंत्रिका तंत्र को तनाव रहित बनाए रखने में मदद करता है।

मानसिक लाभ–

1. पुस्तकें आत्मविश्वास बढ़ाती है।
2. व्यवहार, मूड एवं विचारों पर नियंत्रण रख पाने में मदद करती है।
3. ध्यान केन्द्रित कर पाने की प्रक्रिया में सहायक होती है।
4. याददाश्त क्षमता तथा सहनशीलता बढ़ाती है।
5. चिंता व भय से मुक्ति प्राप्ति में सहायक।
6. वैचारिक व भावनात्मक परिपक्वता प्रदान करती है।
7. संतुलित व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण।

8. सामाजिक व्यवहार व बौद्धिक क्षमता में वृद्धि करती है।

आत्मिक लाभ–

1. आत्मिक शांति व खुशहाली बढ़ाती है।
2. लक्ष्य प्राप्ति में सहायक/कार्यस्थल पर भी सफलता प्राप्ति में सहायक
3. आत्मावलोकन व दूसरों के प्रति समझ बूझ की क्षमता बढ़ाती है।
4. वस्तुओं व घटनाओं को अपने वास्तविक परिप्रेक्ष्य में समझने की क्षमता प्रदान करती है।
5. तन, मन व आत्मा के मध्य उचित लयात्मक संतुलन बनाए रखती है।

पुस्तकें पढ़ने हेतु स्वयं को तैयार व दूसरों को प्रेरित करें। घर में भिन्न पुस्तकें सजाएँ, सदस्यों को इच्छित चुनाव व अवसर दें।

छात्र रुचि को प्रेरित करें।

पुस्तकें अध्ययन को पारिवारिक जीवन का हिस्सा बनाएं। कोई पंक्ति अच्छी लगे तो सभी के साथ बाँटे, उन्हें भी बताएँ, अपने मस्तिष्क में बड़े चित्र बनाएँ, छोटी–मोटी समस्याओं को नजर अंदाज करें। अपनी रुचि की पुस्तकों से जुड़ने का प्रयत्न करें।

निरंतर पुस्तकें पढ़े दूसरों को भी पढ़ाएँ, छोटे–छोटे प्रेरक वाक्यों को समूह में बांटे, आपका जीवन खुशियों से भर उठेगा। पाठ्येतर पुस्तकें पढ़ने की आदत बनाएँ, खुश रहने की आदत आपके जीवन में स्वतः ही प्रवेश कर जाएगी।

प्राध्यापक (गृह विज्ञान)
49, गोपाल पथ, कृष्ण विहार कुन्दन नगर, अजमेर
मो. 9828186706

जन्म दिवस पर विशेष

प्रेम और वैराग्य की मूर्ति : भक्त रविदास जी

❒ हरप्रीत सिंह कंग

प्रेम और वैराग्य की मूर्ति भक्त रविदास जी का जन्म विक्रम सम्वत् 1433 (1376 ई.) में काशी (वाराणसी, उत्तर प्रदेश) के पास एक गांव में हुआ था। आपके जन्म के सम्बन्ध में यह दोहा प्रचलित है:–

संवत चौदह सौ तैंतीसा, माघ सुदी पंद्रास।
दुखियों के कल्याण हित, प्रगटे श्री रविदास।।

भक्त रविदास जी के पिता का नाम श्री रघुराय था। माना जाता है कि इनका जन्म रविवार के दिन होने के कारण इनका नाम 'रवि' से 'रविदास' पड़ गया। इनका जन्म चर्मकारों की जूते गांठने वाली तथाकथित जाति में हुआ था। इनके पूर्व मृत पशुओं को ढोने का काम करते थे। भक्त रविदास जी स्वयं ही अपना परिचय इन शब्दों में दे रहे हैं:–

मेरी जाति कुट बांढला,
ढोर ढांवता नितहि बानारसी आस पासा।

भक्त रविदास जी बचपन से ही परोपकारी व सहानुभूति का भाव रखते थे। वे साधु सन्तों की सेवा तथा गरीबों की भलाई में लगे रहते थे। इनका विवाह छोटी आयु में ही कर दिया था। आप अपने गृहस्थ धर्म का निर्वाह करते हुए अपना पैतृक व्यवसाय जूते बनाना करते रहे। आप गरीबी में भी बड़े संतोष के साथ रहते थे और हर वक्त परमात्मा, प्रभु का नाम सिमरन करते रहते थे। भक्त रविदास जी उपदेश करते हैं कि **''ग्रिग मीन ग्रिंग, पतंग कुंचर एक दोख बिनास।।** अर्थात हिरन, मछली, भंवरा, पतंगा और हाथी में केवल एक–एक दोष होने के कारण उनका नाश हो जाता है। **''पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस।।** परन्तु मनुष्य में तो पांच दोष है। इन सबसे बचने की कब तक आशा की जा सकती है, अतः उनके अनुसार मनुष्य को परमात्मा का नाम सिमरन करते रहना चाहिए। सिख धर्म के पवित्र ग्रन्थ श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में भक्त रविदास रचित 40 शब्द सुशोभित हैं जो कि 16 रागों में है।

भक्त रविदास मनुष्य के परमात्मा प्रभु का नाम प्रतिपल हृदय में बसाये रखने का उपदेश देते हुए परमात्मा से अपनी प्रीति का बखान करते हुए कहते हैं : **''जऊ तुम गिरिवर तऊ हम मोरा।।''** अर्थात हे प्रभु अगर तुम पहाड़ हो तो मैं उस पहाड़ का मोर हूँ व तुम्हें देखकर खुशी से नृत्य करता हूँ। **''जऊ तुम चंद तऊ हम भए हैं चकोरा।।''** अर्थात हे प्रभु अगर तुम चन्द्रमा हो तो मैं तेरी चकोर हूँ तुझे देखकर प्रसन्नता से बोलता हूँ। **''माधवे तुम न तोरहु तऊ हम नहीं तोरहि।।''** अर्थात हे प्रभु तू मुझसे नाता न तोड़ना, मैं भी तेरे से अलग नहीं हो सकता। **''तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि।।''** अर्थात् मैं तुमसे नाता तोड़कर और किसके साथ जोड़ सकता हूँ? अन्य कोई तुम्हारे जैसा नहीं है।

भक्त रविदास जी सांसारिक मोह माया से परे थे। एक बार कोई सन्त महापुरुष भक्त रविदास जी की गरीबी को देखते हुए उनको एक पारस दे गया ताकि इनकी गरीबी दूर हो जाये। लेकिन जब वह संत महापुरुष कुछ वर्षों बाद वापिस रविदास जी के पास आया तो उन्होंने इनसे पूछा, ''रविदास पारस कहां है?'' भक्त रविदास ने उत्तर दिया कि ''जिस जगह पर रखकर गये थे, वहीं होगा, उठा लीजिए।'' अतः उनका ध्यान दुनिया के पदार्थों, धन–दौलत में नहीं वरन प्रभु भक्ति में लगा रहता था। भक्त रविदास जी मानव शरीर के स्वरूप तथा उसकी नाशमानता के बारे में फरमाया है:–

जल की भीति पवन का
थंभा रक्त बुंद का गारा।।
हाड़ मास नाड़ी को पिंजर
पंखी बसै बिचारा।।

भक्त रविदास जी मीरा बाई के मार्गदर्शक, भक्त कबीर, भक्त पीपा जी व भक्त धन्ना जी के समकालीन थे व इनका संबंध सन्त रामानन्द की शिष्य परंपरा से रहा। अपने जीवन के अंतिम दिनों में भक्त रविदास जी परिवार सहित मीरा बाई की विनती पर चित्तौड़ में रहने लग गये थे और वही परलोक गमन कर गये थे। भक्त रविदास जी ने लोगों को प्रेम, भक्ति, ज्ञान व वैराग्य का पाठ एक साथ पढ़ाया, ऐसे भक्त शिरोमणि रविदास जी विचारधारा की आधुनिक समाज को अति आवश्यकता है।

–व्याख्याता, शहीद कैप्टन नवपाल सिंह
सिद्धू रा.उ.मा. विद्यालय, पदमपुर (श्रीगंगानगर)

हिन्दी व्याकरण

आनन्द महल बनावे

❒ बाल कृष्ण शर्मा

शिक्षण एक कला है, एक महारत है जो हर किसी के बस की बात नहीं। यह बात अटपटी जरूर है, क्या प्रशिक्षण से भी यह संभव नहीं? मैं स्वयं के प्रशिक्षण की बात करता हूँ, एक निजी विद्यालय में बी.एड. के तुरन्त बाद शिक्षण कार्य में रत हुआ, लगा जो प्रशिक्षण के दौरान सीखा सब छात्रों में उड़ेल दूँ परन्तु यह क्या मैं ज्योंहि शिक्षण शुरू कराता हो हल्ला प्रारम्भ। मुझे कुछ सूझ नहीं रहा था हताश हो गया मैं जीवन में शिक्षक नहीं बन सकूंगा! भीलवाड़ा महेश शिक्षा सदन नामी गिरामी संख्या। आत्मावलोकन पर दो तथ्य मैंने महसूस किए। विषय पर पकड़ की कभी दूसरा उस संख्या में अस्थायित्व वाले शिक्षक यानी ज्योंहि सरकारी नौकरी मिलती शिक्षक अन्यत्र चले जाते दोनों बात छात्र भाँप लेते थे। तीन माह बाद मेरे लिए भी वह दिन नसीब हुआ मेरा सरकारी विद्यालय में सैकण्ड ग्रेड शिक्षक में चयन हो गया। जब मैंने यह यह खबर मेरे लिए बालकों को दी तो उन्होंने मुझे भावभीनी विदाई देकर अभिभूत कर दिया। यद्यपि वहां ऐसी परम्परा नहीं थी कि किसी शिक्षक को विदाई दे।

थोड़े दिनों में मैंने अपनी कमजोरी ढूंढ ली। प्रशिक्षण के सम्मिश्रण के साथ व्यावहारिकता को ध्यान में रखकर रोज पढ़ कर पढ़ाना मेरी फितरत बन गई। शिक्षा मनोविज्ञान मुझे बहुत कुछ बदल गया। मेरी पदोन्नति व्याख्याता पद पर हुई तो एक शिक्षक ने भरी सभा में कहा- ''बाल जी होमवर्क के नाम पर कॉपियां नहीं भराते थे तो भी इनका परिणाम 100 प्रतिशत रहता था।'' मेरे एक अन्य साथी ने चुटकी ली जो मेरे समीप बैठे थे कहा ये आपकी प्रशंसा कर रहे हैं या निन्दा। मैं मुस्कुरा गया। एक बात जरूर है कि जो बालक सीखना चाहता है उसे सम्बलन दिया जाना व उत्साहित किया जाना भी शिक्षक का अहं दायित्व है।

जब मैं राज्य स्तर पर पुरस्कृत हुआ तो एहसास हुआ कि परमात्मा ने बालकों का अवतार लेकर ही मुझे उपकृत किया है। प्रधानाध्यापक व प्रधानाचार्य के रूप में लगभग सभी विषयों में बालको को पढ़ाने का प्रयास किया। बालक स्वभाव से ही चंचल होते हैं। एक बालक मेधावी परन्तु नटखट था। सो एक बार उसने एक विद्यार्थी मित्र शिक्षक को खिजा दिया। बात कुछ भी नहीं ''वर'' शब्द का अर्थ श्रेष्ठ के अलावा और अर्थ भी जानना चाहता था। वह अड़ गया कि वर का दूसरा अर्थ भी बताए। विद्यार्थी मित्र शिक्षक सकुचा रहे थे कि कक्षा में लड़कियां है ग्रामीण वातावरण है वर शब्द दूसरा अर्थ कैसे बताऊं? हो हल्ला सुन मैंने भाँप लिया मामला मनोविज्ञान का है। मैंने अपने हावभाव व मुँह से व्यक्त किया कि वर का एक अर्थ बींद (दूल्हा) भी होता है तभी एक ठहाका पूरी कक्षा में गूँज उठा। बोझिल वातावरण को सहमता से सरल बनाना शिक्षक की महारत है।

मुझे अच्छा मौका हाथ लगा। पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान रोचक ढंग से देने का। श्यामपट्ट पर मैंने ये शब्द लिखे- नीर, जल, तोय, अम्बु, वारि

इन शब्दों के अर्थ लगभग कई छात्र जानते थे कि ये सब पानी के पर्याय है। तभी मैंने कहा एक जादू बताता हूँ। बच्चे जादू के नाम पर एकदम चुस्त हो गये क्योंकि जादूगर में वह ताकत है जो राह चलते हर किसी को आकृष्ट कर अपना काम कर लेता है। मैंने कहा इन शब्दों के अन्त में ''ज'' वर्ण जोड़ने पर कमल के पर्यायवाची बन जाएंगे जैसे नीरज, जलज, तोयज, अम्बुज, वारिज। तभी मैंने कहा ''ज'' यानी जन्म लेना। जैसे-

नीर में जन्म लेने वाला - नीरज - कमल
जल में जन्म लेने वाला - जलज - कमल
तोय में जन्म लेने वाला - तोयज - कमल
अम्बु में जन्म लेने वाला- अम्बुज - कमल
वारि में जन्म लेने वाला - वारिज - कमल

बालक समझ गए कि पर्यायवाची याद करना कितना सरल है। तभी मैंने कहा कि अभी और भी जादू है। इसी प्रकार इन शब्दों के अन्त में ''द'' वर्ण जोड़ने पर बादल के पर्यायवाची शब्द बन जाएंगे। ''द'' अर्थात देने वाला। जैसे-

नीरज देने वाला - नीरद = बादल
जल देने वाला - जलद = बादल
तोय देने वाला - तोयद = बादल
अम्बु देने वाला - अम्बुद = बादल
वारि देने वाला - वारिद = बादल

और जादू चाहते हो, तो बालक सहजता से बोले हाँ गुरुजी- मैंने कहा इन शब्दों के साथ ''निधि'' शब्द जोड़ दो तो समुद्र के पर्यायवाची शब्द जाएंगे। ''निधि'' यानी भण्डार या खजाना। जैसे-

नीर का भण्डार = नीरनिधि = समुद्र
जल का भण्डार = जलनिधि = समुद्र
तोय का भण्डार = तोयनिधि = समुद्र
अम्बु का भण्डार = अम्बुनिधि = समुद्र
वारि का भण्डार = वारिनिधि = समुद्र

इसी बीच रामचरित मानस का दोहा रावण ने अकुलाहट में कहा था-

''बांध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस सत्य तोयनिधि कंपति उदाधि पयोधि नदीस''

श्यामपट्ट पर लिखकर स्पष्ट किया यह अवधि भाषा का दोहा है जो समुद्र के पर्यायवाची शब्द याद करने में सुगम है। पर्यायवाची शिक्षण में प्रत्येक शब्द याद करने में सुगम है। पर्यायवाची शिक्षण में प्रत्येक शब्द का अर्थबोध कराया जाना श्रेयस्कर होता हैं। इसी प्रकार वृद्धि संधि को सुगमता से समझ हेतु मैं कक्षा में कहा करता था दो चोटियां दिख जाएं या जैलिया जिसे जेबा लकड़ी से बना उपकरण Y इस आकार का दिख जावे समझो वृद्धि संधि है जैसे-

सदा + एव = सदैव
तथा + एव = तथैव

कई शिक्षक ऐसे हैं जो स्वप्रयोग से शिक्षण को रुचिकर बना कर बालकों में प्रिय है। शिक्षक काल में शैक्षिक प्रशासक भी रहा हूँ अक्सर बच्चे उन्हीं का सम्मान करते हैं जो उन्हें भरपूर देते हैं। आत्म विवेचन का विषय है कि हम क्या देते हैं? समायोजन कालांश में वे शिक्षक अपनी छाप उन बालकों पर छोड़ सकते हैं जिन्हें वे नियमित कक्षा में नहीं पढ़ाते। 38 वर्ष विगत को सोचता हूँ तो लगता है ईश्वर कृपा, बालकों के प्रेम तथा मेरे मार्गदर्शक संस्था प्रधानों के कारण ही यह भव्य आनन्द महल मेरे मन में बन सका।

(लेखक सेवानिवृत्त जिला शिक्षा अधिकारी हैं।)
'प्रकाश-दीप', शिक्षक कॉलोनी
कालिंजरी गेट, शाहपुरा (भीलवाड़ा)
मो. 9414615821

शैक्षिक चिन्तन

दृष्टि-संयम के फलितार्थ

❒ डॉ. दाऊ दयाल गुप्ता

जीवन व्यापार के मूलतः दो आधार हैं- लेना और देना। भाषा-शिक्षण में लेना अर्थात आदान की प्रकिया मनुष्य के श्रवण तथा पठन द्वारा सम्पन्न होती है। इसी प्रकार देना अर्थात् प्रदान-प्रक्रिया बोलने तथा लिखने को लेकर चलती है। किन्तु एक अन्य ऐसी प्रक्रिया है-अवलोकन अर्थात् देखने की। कदाचित दृष्टिहीनता न हो तो उपर्युक्त सभी प्रक्रियाओं में 'दृष्टि' का योगदान सर्वोपरि हैं। कहना न होगा कि सम्पूर्ण सृष्टि में दृष्टि का ही खेल चल रहा है। 'दृष्टि', प्रमुखतः आँखों की देन है। आँखों से आँखे मिलती हैं तो परिणाम यह निकलता है-

चार मिले चौंसठ खिले, बीस खड़े कर जोड़।
बलिहारी या दृष्टि की, लीजे अर्थ निचोड़।।

-अज्ञात

अर्थात् आँखे चार होती हैं तो दोनों ओर की दाँतों की बत्तीसी खिल उठती है तथा दोनों हाथों की दस-दस अँगुलियां दोनों ओर से जुड़कर सुखद स्थिति बना देती है। किन्तु, यह 'दृष्टि' अर्थात 'नजर' मन से सीधी जुड़ी रहती है। मन को तत्काल खबर देती है तथा मस्तिष्क में प्रतिक्रिया का दौर चलना शुरू हो जाता है। आँखों द्वारा सुखद स्थिति के निर्माण में मन की सानुकूलता आवश्यक है। इसे 'चाह' की संज्ञा दी जा सकती है। सामान्यत 'दृष्टि' बहुमुखी होती है। परस्पर सहमति होने पर दृष्टिगत प्रभाव सकारात्मक होता है तथा असहमति के परिणाम स्वरूप कहर ढाता है, यथा-

कहीं कयामत है नजर कहीं बाँटती खैर।
दे दयाल मन को खबर, को अपनौ को गैर।।

दृष्टि के दो स्वरूप प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं-सुदृष्टि तथा कुदृष्टि। जड़ हो या जीव दृष्टि का प्रभाव दोनों पर होता है। अच्छी भली इमारत में दरार पड़ जाना, खूबसूरत वाहन के परखच्चे उड़ जाना बुरी नजर का दुष्प्रभाव है। अच्छी नजर हो तो झोंपड़ी की जगह महल चिन जाते हैं। रंक, राजा बन जाते हैं। इसीलिये कहावत प्रसिद्ध है-

बुरी नजर वाले तेरा मुँह काला।

बुरी नजर के बचाये रखने के लिये बच्चों को दिठौना लगाना, तेल से बाती बनाकर भिगोना, उसारना व जलाना आदि अनेक टौना माताएं आज भी घरों में करती रहती है। नई ईमारत पर काल भैरव का मुखौटा टाँग देना इसी क्रम में किये जाने वाला प्रयास है।

वस्तुतः दोष 'दृष्टि' में नहीं अपितु 'दृष्टिकोण' में है। जैसा सोच अर्थात दृष्टिकोण होगा वैसा ही नजर आयेगा। मन की मलिनता अथवा विमलता ही दृष्टि को संचालित करती है। उदाहरणार्थ हमारे समक्ष खड़ी युवती तो एक ही है। किन्तु, कोई उसे बहन कहता है तो कोई बेटी। कोई उसे भाभी कहकर मजाक करता है तो कोई अनुज वधू। किसी के लिये पड़ौसिन है तो किसी की माता, बुआ या मौसी अथवा मामी है। रिश्तों की भरमार है। यही रिश्ते आपसे, हमसे या सबसे अपने-अपने स्तर पर मर्यादा पालन की अपेक्षा रखते हैं। परन्तु, अप संस्कृति ने सबकी निगाह में उसे 'सैक्स' बनाकर रख दिया है। 'सिस्टर' कहकर भी उसे पावनता का अहसास नहीं होता। अस्तु, च्युतसंस्कृति उसे भिन्न दृष्टिकोण से देखने को बाध्य कर देती है जो उसे केवल भोग की वस्तु समझ बैठता है। कविवर बिहारी ने अपनी अन्योक्ति में इसका विडम्बनापूर्ण उल्लेख किया है-

नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहि काल।
अली कली सँग ही बिंध्यौ आगे कौन हवाल।।

कविवर बिहारी की चिन्ता का विषय बाल वधु है जो कि रूपवती तो है किन्तु युवती के रूप में यौवन सम्पन्ना नहीं है तथा जिसके तथाकथित प्रेम में तत्कालीन पुरुष मदमस्त है। यदि इस विडम्बनापूर्ण स्थिति की कल्पना करें तो आज का माहौल हूबहू वैसा ही बन गया जान पड़ता है। आज मासूम कलियों का अपहरण किया जा रहा है तथा समस्त सम्बन्धों आदर्शों को धता बताकर नृशंस उपभोग कर हत्या को अंजाम दिया जा रहा है। दैनिक समाचार पत्र पुरुषों के इस अनुचित व्यवहार के साक्षी है। कवि शिरोमणि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने अपनी प्रार्थना में इसी परिस्थिति का पूर्वाभास करते हुए प्रार्थना की है-

देश के तन औ देश के मन
देश के घर के भाई-बहन
विमल बनें प्रभु विमल बनें।

(अनूदित कविता भ.प्र. मिश्र द्वारा)

दुष्कर्मों की पहल पुरुष वर्ग की ओर से हो या स्त्री वर्ग की ओर से भ्रष्ट प्रवृत्ति के परिचायक हैं। कन्या वर्ग जो अबोध है, निष्पाप है, उसे विध्वंस करने का बीड़ा जो पुरुष वर्ग ने उठा रखा है उसे देखकर तो करुणा स्वयं रोने लगती है। बेशरमी का आलम यह है कि प्रदूषण घटने की बजाय दिन प्रतिदिन दुगुना होता जा रहा है। भोग लिप्सा ने भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध को शिकस्त दे दी है। पूर्ण नियोजित ढंग से मासूमों के साथ सामूहिक दुष्कर्मों का ग्राफ इतना ऊँचा चला गया है कि इसमें गिरावट लाने के समस्त प्रशासनिक प्रयत्न निष्फल हो गए हैं। जनता की असंख्य नजरें व अगणित जुबान है। परन्तु आँखों के समक्ष पर्दा तथा मुँह पर ताला लगा देना नव युग की नियति है। जानकर भी अनजान बने रहना कायरता है, यथा-

'किसी अन्यायपूर्ण पद्धति को चुपचाप सहन करने का अर्थ होता है, उस पद्धति के साथ सहयोग करना।'

-मार्टिन लूथर किंग

इस पर भी तोहमत यह है कि पुरुष प्रधान समाज युवती अर्थात उत्पीड़िता का ही बहिष्कार करता है। पत्रिका समूह के विजय त्रिवेदी का मत उक्त सन्दर्भ में उल्लेखनीय है- 'समाज को चाहिये कि वह पीड़ित औरत की बजाय अपराधी मर्द का सामाजिक बहिष्कार करे क्योंकि कानून से भी ज्यादा ताकत समाज में है। ऐसा करने से मर्द ऐसी मर्दानगी दिखाने से पहले सौ बार सोचेंगे।'

समाज, साथ न दे, कानून हाथ खड़े कर दे तथा बाढ़ स्वयं ही खेत को खाने लगे तो समझ लीजिये मानवता निष्प्राण हो गई है। हाथ पर हाथ धरे तो कोई बैठ नहीं जाता। निर्जीव में प्राण फूंकने का काम शिक्षा के बलबूते का है। शिक्षा में वह सामर्थ्य है जो वासना के गढ़ को भेदकर नैतिकता से युक्त मजबूत दृष्टिकोण का निर्माण करे जो हर विषम परिस्थिति में अभेद्य प्रमाणित हो।

महान संस्कृति के प्रतिस्थापन हेतु उसके महत्वपूर्ण तत्वों का शिक्षा में समावेश अति

आवश्यक है। साथ ही उन ऐतिहासिक सन्दर्भों का पुनर्स्मरण तथा पाठ्यक्रम में नियोजन करना होगा जो वासना से विमुक्ति दिखाकर हमें त्यागी, संयमी व आदर्श मानव के रूप में शिक्षित कर सकें। हमारे इतिहास में ऐसे प्रमाण भरे पड़े हैं।

मादक द्रव्यों का अनवरत सेवन युवकों को मदहोश बनाकर हवशीपन के दौर से गुजार रहा है। अचेतन अथवा अर्द्धचेतन मन में मर्यादा का टिकाव कहाँ संभव हैं। कुविचारों का पोषण तथा नारी जाति का शोषण यहीं से शुरू हो जाता है जो अन्ततः विनाश की ओर ढकेल देता है। अतः अभिभावकों की सतर्कता एवं शिक्षकों की जागरूकता इस जोखिम से बचाने में समर्थ हो सकती है।

आदर्श मानव गढ़ने के लिये कुंभकार अर्थात स्वयं शिक्षकों को अपने जहन में झाँकना पड़ता है। इसके अतिरिक्त अपनी चारित्रिक दृढ़ता का प्रमाण देना होता है। कहा गया है-'If you are an honest, look to be honest.'

यदि आप ईमानदार हैं तो आपकी ईमानदारी दिखलाई पड़नी चाहिये। उपदेश देने से कभी काम नहीं चलता। स्वयं को उदाहरण-रूप में प्रस्तुत करना ही फलदायी होता है। सुसंस्कारों को ग्रहण करने के लिये नकल कारगर नहीं, हृदय चाहिये-

'नकल ऊपरी बातों की हो सकती है, हृदय की नहीं। हृदय को पहचानने के लिये हृदय चाहिये। दो आँखों से काम नहीं चल सकता।'

-ह.प्र. द्विवेदी (हिन्दी साहित्य का इतिहास)

चर्म चक्षुओं को खोलने के स्थान पर अन्तर्चक्षुओं को खोलने का काम शिक्षा द्वारा संभव होता है। महात्मा कन्फ्यूशियस ने कहा- 'To learn without thinking is fruitless. To think without learning is dangerous. Past scholars shadied to unprove themselves. To day's scholars shady to unprove others.'

मनुस्मृति में इन्द्रियों के निग्रह, राग-द्वेष पर विजय तथा प्राणिमात्र के प्रति अहिंसक रहने की साधना, साधक को अमरत्व प्राप्त कराती है। अस्तु, 'संयम' एक ऐसा अंकुश है जो हमें विवेक तथा सत्य के पथ पर अग्रसर करता है। 'संयम' बनाये रखने हेतु आवश्यक है कि हम सम्यक दृष्टि बनाये रखें। शरीर स्वस्थ रहे तथा सद्नियमों का पालन भी बराबर होता रहे। इसी अनुशासन में हमारा हित निहित है। साथ ही अपने समय का उचित उपयोग करने का अभ्यास चलता रहे। इन समस्त कार्यों में अपने चरित्र का निर्माण करना शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों के लिये अपरिहार्य है-

'आचरणहीन विचार कितने ही अच्छे क्यों नहीं, उन्हें खोटे मोती की तरह समझना चाहिये।'

-महात्मा गाँधी

पूज्य बापू का यह संदेश कितना सार लिए हैं। आचरण एवं व्यवहार की पवित्रता हमारे पथ के कंटकों को हटा कर सरलता एवं सहजता हिलाने वाली होती है। इस कथन को हमें गहराई से समझना चाहिए। दृष्टि का संयम, आध्यात्मिक तराजू पर विवेक के बाँटों से तुलकर ही आयेगा। हमारी संस्कृति अन्तर्दृष्टि को जाग्रत करेगी जिससे शिक्षा, संस्कारित होकर मानव को हर कदम पर सद्प्रेरणा देती रहेगी। यथा-"Culture is not just an ornament, it is the expression of a nation's character and at the same time it is a powerful instrument to mould character. The end of culture is right twinge.'

-Somarst Maugham

दृष्टि-संयम के सहारे हमारे सोच में सकारात्मक परिवर्तन आयेगा तथा हम कह सकेंगे कि हमारे विद्यालयों में भावी पीढ़ी एक आदर्श मानव के रूप में ढल रही है।

(लेखक ख्याति नाम साहित्यकार एवं शिक्षाविद् हैं।)

-पुरुषोत्तमायन, दही वाली गली,
ब्यानियान मौहल्ला, भरतपुर
मो. 9461462739

विमर्श

मेरे अनुभव मेरे विचार

कैसा हो प्रार्थना स्थल

प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम विद्यालयी दिनचर्या की आत्मा है। एक आदर्श प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम जहाँ एक ओर विद्यार्थियों में नैतिक गुणों एवं ऊर्जा का संचार करता है, वहीं दूसरी ओर यह अध्यापकों को भी स्फूर्ति एवं प्रेरणा से भर देता है।

एक आदर्श प्रार्थना सभा में राष्ट्रगीत, ईश-वन्दना, सरस्वती वन्दना, सर्वधर्म गीत, गायत्री मंत्र, प्रेरक प्रसंग, योगासन, प्राणायाम एवं राष्ट्रगान आवश्यक रूप से सम्मिलित होने चाहिए। क्योंकि उपरोक्त गतिविधियाँ मनुष्य के व्यक्तित्व-विकास एवं उसकी आध्यात्मिक उन्नति से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम के लिए शिक्षा विभाग द्वारा प्रतिदिन 30 मिनिट निर्धारित है। इसमें से 20 मिनिट प्रार्थना सभा के लिए तथा 10 मिनिट नैतिक शिक्षा के लिए रखे गये है। प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम के पश्चात यदि प्रतिदिन 15 मिनिट अखबार-वाचन, सामान्य ज्ञान प्रश्नों के लिए दिए जाते है। तो इसका सामूहिक लाभ सभी बच्चों को प्राप्त होगा। इन 15 मिनिट की पूर्ति अन्य कालांशों की अवधि 2-2 मिनिट घटाकर सरलता से की जा सकती है।

प्राथमिक कक्षाओं का प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम मिडिल अथवा माध्यमिक कक्षाओं से पृथक होना चाहिए। छोटे प्रांगण वाले विद्यालयों में प्रार्थना तो एक साथ करवाई जा सकती हे। जिससे ध्वनि टकराव की समस्या उत्पन्न न हो परन्तु अखबार-वाचन, सामान्य ज्ञान प्रश्नों के लिए प्राथमिक कक्षाओं को बड़ी कक्षाओं से अलग बिठाया जाना चाहिए। क्योंकि इन विद्यार्थियों की आयु एवं शैक्षिक स्तर में पर्याप्त अन्तर होता है। अतः जब किसी एक समूह को सम्बोधित करके हमारे अध्यापक साथी कोई प्रश्न पूछते हैं तो उस समय दूसरा समूह या तो निष्क्रिय बैठा रहता है या फिर वार्तालाप में व्यस्त होता है। इससे अनुशासन भी भंग होता है। यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है।

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि क्रियाशील बालक अनुशासित भी रहते है। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन यदि एक-एक विषय के सामान्य प्रश्नोत्तर 5-5 मिनिट भी हम विद्यार्थियों से सामूहिक रूप से पूछ लेते है तो इससे बच्चों में प्रश्नों का सही उत्तर देने के लिए एक स्वस्थ्य प्रतिस्पर्धा विकसित होगी जो उनके शैक्षिक और मानसिक विकास में उत्प्रेरक का कार्य करेगी। यह प्रयोग हमने अपने विद्यालय में इसी वर्ष 1 जनवरी से शुरू किया है और मात्र पन्द्रह दिनों में ही इसके सकारात्मक परिणाम हमें प्राप्त होने लगे है। मुझे पूरा विश्वास है कि इसी प्रकार से प्रयास अपने-अपने विद्यालयों में हमारे अनेक शिक्षक साथी पूर्ण दक्षता एवं समर्पण के साथ कर रहे होंगे। और जिन विद्यालयों में किसी भी कारण से ये कार्यक्रम नहीं चल रहे हैं, मेरी अपील है कि छात्र-हित को ध्यान में रखते हुए वहाँ भी इस प्रकार के प्रयोग शुरू किए जाएँ। आपका यह छोटा सा प्रयास विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करेगा।

-प्रदीप शर्मा, अध्यापक
रा.मा.वि. काली पहाड़ी, उमरैण (अलवर)

नशा मुक्ति

नशा नाश का कारण

❒ नरोत्तम देवी

राजस्थान में युवा वर्ग पर शराबखोरी और ड्रग माफिया का शिकंजा कसता जा रहा है। राजस्थान में युवा अब हेरोइन, चरस और स्मैक जैसे घातक नशों के लिए कुख्यात हो रहा है। प्रदेश के लाखों युवा ड्रग के रूप में धीमे जहर को लेकर धीरे-धीरे मौत की ओर बढ़ रहे हैं। वर्तमान में राजस्थान ड्रग माफिया के शिकंजे में है। पहले जिस हेरोइन, चरस और स्मैक के नाम महज सुने जाते थे, वह आज न केवल मरूभूमि में अपनी जगह बना रहा है, बल्कि बेची और सेवन भी की जा रही है। अब छोटे गांवों और ढाणियों में भी यह आदत पहुंच गयी है। मारवाड़ में विशेष रूप से बाड़मेर, जैसलमेर में अफीम का सेवन आदत और सामाजिक परम्परा में शुमार है। महानगरों में लड़कों को मुफ्त में चखा-चखा कर नशे की आदत लगाई जा रही है। गुटका और जर्दा पान तो आदत बन गया है। ड्रग माफिया के मौत के सौदागरों ने छात्र वर्ग को स्मैक के नागपाश में जकड़ कर बांध रखा है। युवावर्ग स्मैक का गुलाम बन गया है।

प्रचलित कहावत है कि शुरू-शुरू में लोग शराब पीते हैं, लेकिन बाद में शराब उन्हें पीने लगती हैं। हाल ही इस लोकोक्ति पॉलिसी अलाइंस (आईएपीए), नामक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान ने देश का "अल्कोहल एटलस" जारी करते हुए बताया कि कैसे शराब से देश को फायदे से कहीं अधिक नुकसान हो रहा है। शराब की वजह से देश पर लगातार बीमारियों का बोझ बढ़ रहा है। सड़क दुर्घटनाओं की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। शराब की आदत केवल व्यक्ति के शरीर और परिवार को बर्बाद ही नहीं करती है बल्कि राष्ट्र के लिए बोझ बनती है परिवार टूट रहे हैं। बड़े लोग बेरोजगार हो रहे हैं और बच्चे मजदूरी करने को मजबूर हैं। शराब पीकर बीमार या घायल होकर अस्पतालों में पहुंचने वालों के इलाज पर जो खर्च होता है, उस बोझ का अधिकांश हिस्सा देश ही उठाता है। शराब से होने वाली विभिन्न बीमारियों के इलाज में जितना खर्च मरीज के परिवार के लोग उठाते हैं, उससे कहीं अधिक बोझ सरकार वहन करती है। शराबियों के हाथ से जो सार्वजनिक सम्पति टूटती-फूटती है वह भी सरकारी खजाने से रिपेयर होती है। शराबियों द्वारा जो काम के घंटे बर्बाद किये जाते हैं, उनसे भी देश का नुकसान होता है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेन्टल हेल्थ एण्ड न्यूरो साइंस के अध्ययन के अनुसार काम के दौरान अपने कार्यस्थल से स्कूल कॉलेज से अक्सर अनुपस्थित रहने वाले शराबियों की संख्या अन्य लोगों की तुलना में तीन गुणा अधिक है। भारत सरकार ने पूरे देश में 483 नशामुक्ति केन्द्र खोल रखें हैं, जो शराबियों को लत छुड़ाने में लगे हैं। इसके अलावा सरकार द्वारा ही संचालित करीब 100 काउन्सिल केन्द्र भी इसी काम में लगे हैं।

मादक पदार्थों के सेवन पर संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की तरफ से संयुक्त रूप से कराए गए सर्वेक्षण में चौंकाने वाले तथ्य सामने आये हैं। आंकड़ों के अनुसार 12 से 18 साल की उम्र के लगभग 24 प्रतिशत बच्चे नशे की लत के शिकार हैं। इनमें लगभग एक चौथाई बच्चे तो शराब, गांजा और अफीम तक लेते हैं।

वर्ष 1990 तक भारत में लोग जब पहली बार शराब का घूंट गले के नीचे उतारते थे तो उनकी औसत उम्र 28 साल होती थी, लेकिन आजकल सिर्फ औसतन 18 साल की उम्र में ही युवा शराब का सेवन करने लग जाते हैं। 1990 तक जहां 21 साल की उम्र में 2 प्रतिशत लोग शराब का उपभोग करते थे 2006 तक ऐसे लोग बढ़कर 14 प्रतिशत हो चुके थे। महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, मेडिकल कॉलेज तथा इंजीनियरिंग कॉलेज के युवा वर्ग के छात्रों में बढ़ती नशाखोरी के आंकड़े जितने दुखद हैं, उतने ही चिंताजनक हैं। भारत के लगभग एक दर्जन शहरों में हुए सर्वेक्षण में कॉलेज छात्रावासों को जो स्वरूप उभरा है वह तो झकझोर कर रख देता है। छात्रावास या हॉस्टल में रहने वाले दस छात्र में से 7 नशाखोरी के चुंगल में फंस चुके हैं। सर्वे में यह भी ज्ञात हुआ है कि बाहर की तुलना में छात्रावास में रहने वालों में शराब का सेवन करने वालों का अनुपात ज्यादा है। शराबखोरी करने वाले छात्रों में दो प्रतिशत तो ऐसे हैं, जो हमेशा शराब पीते हैं। सर्वेक्षण के अनुसार छात्रावासों में 30 प्रतिशत छात्र ऐसे हैं, जो शराब के चक्कर में ही नहीं पड़े हैं। 40 प्रतिशत छात्र कभी-कभी शराब पीते है और 30 प्रतिशत प्रतिदिन शराब पीते हैं। एसोचैम का सर्वे बताता है छात्र शराब, तम्बाकू इत्यादि पर हर महीने औसतन 1500 रु. खर्च कर रहे हैं। ये आंकड़े हमारी शिक्षा व्यवस्था के लिए शुभ संकेत नहीं है। वर्तमान में छात्रावास ऐसे इलाके के रूप में नजर आता है जहां छात्र मनमानी करने के लिए आजाद है। वर्तमान में शिक्षा संस्थानों के पास मन्दिर भले न हो, लेकिन शराब की दुकान जरूर खुल जाती है। यह घोर चिन्तनीय है कि युवा वर्ग नशे के शिकंजे के साथ-साथ इन्टरनेट सर्फिंग, चैटिंग व सीडी के जरिये नीले नशे में भी अपना कीमती समय बर्बाद कर रहा है। वर्तमान मे युवाओं को एक बहुत बड़ा वर्ग पूरी तरह भ्रमित, भटकाव, असुरक्षा व हीन भावना से ग्रसित है जो नशे के लुभावने भ्रमजाल में ही अपना भविष्य देखता है। हम सबको मिलकर युवाओं में नशें की समस्या से निपटने के लिए बहुवा माफी रणनीति बनाने की ओर अति आवश्यकता है। वर्तमान समय में सभी स्तरों पर जागरूक होकर युवाओं में नशे की आदतों को जड़मूल से खत्म करने के लिए प्रयास करने होंगे तभी हम इस मिशन में सफल होंगे। विद्यालयों परिसरों में छात्र व शिक्षको की कड़ी मेहनत से पेड़ पौधे व गार्डन तैयार किये जाते हैं। रात को हाइवे या सड़क पर जो विद्यालय हैं, उनमें यह युवा शराब पार्टी करते हैं तथा जर्दे के पीक फर्शों पर थूकते हैं। दूसरे दिन सुबह इनकी खाली बोतलें, जर्दे के पाउच व पीक की तथा सिगरेट के खाली पैकिट शिक्षकों द्वारा साफ करवायी जाती है तथा विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों पर भी इस तरह का वातावरण रहने से प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। हम सबको संकल्प लेकर गांव के तहसील, जिले व प्रदेश के युवाओं को इस नशे की प्रवृत्ति से मुक्त कराना होगा। तभी हमारा देश आगे बढ़ेगा।

रा.प्रा.वि., मागचन्द मेघाराम की ढाणी, खीरूपुरा, पं.स.-धोद (सीकर) मो. 9414981203

राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेते है तथा हर वर्ष विभागीय प्रतियोगिताओं का आयोजन होता रहा है तथा पिछले 3 वर्षों में राष्ट्रीय वॉलीबाल छात्र-छात्रा पूर्व प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भी विद्यालय में बड़े ही सुव्यवस्थित ढंग से किया है।

विद्यालय छात्रावास

विद्यालय का अपना एक छात्रावास है जिसमें 150 विद्यार्थी दूर-दराज के गाँवों के रह रहे है छात्रावास में 32 कमरे हैं जिनका निर्माण भी ढाँढ़ण डवलपमेन्ट ट्रस्ट द्वारा किया गया है तथा बिजली व पानी की सम्पूर्ण व्यवस्था ट्रस्ट द्वारा की गई है। छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थी को न्यूनतम दर पर (डाइट के आधार पर) भोजन की व्यवस्था की जा रही है। छात्रावास में में केवल बोर्ड परीक्षा की कक्षाओं के विद्यार्थियों को ही प्रवेश दिया जाता है। छात्रों की प्रातः व सायंकालीन अतिरिक्त शिक्षण व्यवस्था की जाती है।

शैक्षिक भ्रमण

विद्यालय का प्रतिवर्ष एक राज्य स्तरीय या राष्ट्रीय स्तरीय शैक्षिक भ्रमण किया जाता है जिसमें विद्यालय के छात्र-छात्राएं जाती हैं। इसी वर्ष 70 छात्र व 50 छात्राओं का दल वैष्णव देवी, अमृतसर, शिमला, धर्मशाला, 5 दिवसीय शैक्षिक भ्रमण संस्थाप्रधान भागीरथ सिंह के निर्देशन में किया गया। जिससे छात्रों की बौद्धिक व सांस्कृतिक जानकारियां बढ़ी है जिसमें छात्रों में भाईचारे व सहभागिता की भावना का भी विकास होता है।

विद्यालय की शैक्षिक उपलब्धियां

विद्यालय का परिणाम बहुत ही उत्कृष्ट रहता है अच्छे परीक्षा परिणाम व सुन्दर शैक्षिक वातावरण के कारण आज जिले का सबसे बड़ा विद्यालय है तथा परीक्षा परिणाम की दृष्टि से अपना सर्वोच्च स्थान रखता है। अच्छे परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों में जिलें में तीन बार लगातार संदीपन पुरस्कार प्राप्त करने वाला (1996, 1997, 1998) पहला विद्यालय रहा है उस समय माध्यमिक विद्यालय का प्रधानाध्यापक पर भी वर्तमान प्रधानाचार्य ही थे। गत वर्ष बोर्ड परीक्षा में विद्यालय के 423 छात्र प्रविष्ट हुए जिनमें से 241 छात्र प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। विद्यालय की छात्रा कान्ता भास्कर ने माध्यमिक परीक्षा में 93.33 प्रतिशत अंक प्राप्त कर जिला मैरिट में स्थान बनाया तथा छात्रा मैरिट में राजकीय विद्यालयों में राज्य स्तर पर 7वाँ स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है।

छात्र भूपेन्द्र मील ने 91 प्रतिशत अंक बोर्ड परीक्षा 2014 में प्राप्त किया, 80 प्रतिशत से ऊपर अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या 18 है तथा 70 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या 105 है तथा गार्गी पुरस्कार प्राप्त करने वाली छात्राओं की संख्या 17 है जो एक उत्कृष्ट शैक्षिक वातावरण का परिचय देती है।

शैक्षिक नवाचार

विद्यालय में शैक्षिक नवाचारों को भी भरपूर प्रयोग किया जा रहा हैं। जिसमें रात्रि कालीन शिक्षण व्यवस्था, अतिरिक्त कक्षाऐं ग्रीष्मकालीन कक्षाएं, टैस्ट सीरीज, प्री-बोर्ड तथा संस्थाप्रधान स्वयं रात्रि विश्राम विद्यालय में कर समयबद्ध तरीके से छात्रों का मार्गदर्शन करते हैं।

छात्रों का मनोबल बढ़ाने व आपसी शैक्षिक प्रतिस्पर्द्धा बढ़ाने के लिये छात्रों को व्यक्तिगत पुरस्कार जैसे-नगद राशि, चाँदी का मैडल, लेपटॉप, हाथ घड़ी, प्रमाण-पत्र प्रतीक चिन्ह दिये जाते है। जिससे छात्रों में प्रतिस्पर्द्धा बढ़ती है तथा छात्र रुचि लेकर कड़ी मेहनत भी करता है जिससे परीक्षा परिणाम में भी काफी सुधार होता है।

भामाशाह योजना

विद्यालय का सम्पूर्ण भवन भामाशाहों (ढाँढ़ण डवलपमेन्ट ट्रस्ट) द्वारा बनवाया गया है गत वर्ष 2013-14 में 21 लाख की लागत से चार कक्षा कक्ष का निर्माण करवाया गया है। विद्यालय फर्नीचर, वाटर कूलर, पंखे आदि व्यवस्था की जाती रही है। गत चार वर्षों में 70 प्रतिशत से ऊपर अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को चाँदी के मैडल दिये जाते रहे हैं जिनमें श्री श्रवण चौधरी निदेशक CLC सीकर, प्रो. डॉ. रिछपाल सिंह सुण्डा (पूर्व छात्र) श्री बीरबल शर्मा (पूर्व छात्र), श्री राजकुमार झाझड़िया (पूर्व छात्र) आदि ने लाखों रुपयों का पुरस्कार छात्रों को देते आये है।

सत्र 2014-15 में ही सम्पूर्ण विद्यालय को C.C.T.V. कैमरो से जोड़ा जा रहा है जिसका सम्पूर्ण व्यय राशि लगभग 2 लाख रुपये श्री संजय जी भरतिया ढाँढ़ण वेलफेयर सोसायटी द्वारा किया जायेगा तथा विद्यालय के पूर्व छात्र सुरेन्द्र भास्कर 1 लाख रुपये नगद विद्यालय विकास हेतु तथा पूर्व छात्र पप्पू भार्गव छात्रों को मैडल देने हेतु एक लाख रुपये की राशि सत्र 2014-15 हेतु प्रदान की।

विद्यालय का शिक्षक व छात्र प्रतिभा सम्मान समारोह

विद्यालय की सम्पूर्ण उत्कृष्ट गतिविधियों के कारण समस्त ग्रामवासियों ने 16 नवम्बर, 2014 को एक सम्मान समारोह का आयोजन किया जिसमें लगभग 7 लाख रुपये व्यय किये। 105 छात्र-छात्राओं को चाँदी के मैडल, 29 शिक्षकों को मैडल व शाल तथा संस्थाप्रधान श्री भागीरथ सिंह को एक कार, मैडल व शाल भेंट किया गया। संस्था प्रधान भागीरथ सिंह ने 90 प्रतिशत से ऊपर आने वाले दो छात्रों को अपनी तरफ से व्यक्तिगत पुरस्कार स्वरूप 5100-5100 रुपये दिये गये। श्री प्रमोद कुमार पारीक, वरिष्ठ अध्यापक ने विज्ञान विषय में 100 में से 100 अंक लाने वाले 5 छात्राओं को हाथ घड़ी भेंट की गई तथा ढाँढ़ण डवलपमेन्ट ट्रस्ट द्वारा संस्था प्रधान को नकद पुरस्कार के रूप में 1000 रुपये प्रत्येक को शिक्षक को 3100-3100 रुपये दिए गए तथा टैन्ट व जलपान में होने वाले व्यय के रूप में 71000 रुपये प्रदान किए।

इस प्रकार ढाँढ़ण के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की यह कहानी रेगिस्तान में किसी निखलिस्तान (Ocean) की तरह लगती है। कहाँ एक तरफ हम शिक्षकों के सम्मान में कमी की बात कहते हैं और कहां यह वृतांत सम्मान वृष्टि करता नजर आता है। बस जरूरत उत्साह के साथ अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने का है जिसके अन्तर में प्रतिबद्धता एवं समर्पण जैसे लाखीणे मोती छिपे होते हैं। विश्वास है कि ढाँढ़ण के स्वनामधन्य प्रधानाचार्य भाई भागीरथ सिंह माहिच और उनकी टीम के परिश्रमी शिक्षकों के प्रयासों से बना यह उदाहरण राज्य के अन्य विद्यालयों में भी ऐसा अनुकरण करने की प्रेरणा बनेगा।

(लेखक राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त है।)
शारीरिक शिक्षक
रा.उ.मा. विद्यालय, सबलपुरा (सीकर)
मो. 9414901203

स्वास्थ्य

स्मरण शक्ति का वैज्ञानिक आधार

❒ डॉ. एच.एन.एस. भटनागर

स्मरण शक्ति एक अद्भुत शक्ति है जिससे हमें पढ़ा हुआ, लिखा हुआ या सुना हुआ याद रहता है। इस शक्ति से मानव जीवन सुख, दुख को याद रखता है। विद्यार्थियों के लिए यह शक्ति अत्यन्त आवश्यक है। इसी के माध्यम से वे कक्षा में एवं घर पर ज्ञान अर्जित कर सकते हैं तथा परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं। स्मरण शक्ति क्या होती है, कैसे कार्य करती है इस ज्ञान को सभी प्राप्त करना चाहेंगे। इस संदर्भ में हम पूरी विवेचना करेंगे।

हमारी स्मरण शक्ति दिमाग में सेरिब्रल कोर्टेक्स की कोशिकाओं की बनावट तथा उनकी लम्बाई, चौड़ाई पर निर्भर करती है। इन कोशिकाओं का निर्माण जीवन के प्रथम वर्ष में पूरा हो जाता है। इसकी बनावट 12-14 की आयु तक बढ़ती रहती हैं। इसके पश्चात बढ़त नहीं होती है परन्तु ज्ञान तन्तु आपके परिश्रम के अनुसार बढ़ते रहते है। 40-50 वर्ष की आयु के पश्चात सेरिब्रल कोर्टेक्स की कोशिकाएं सिकुड़ने लगती हैं और धीरे-धीरे उनकी कार्यक्षमता कम होती जाती है और 80 वर्ष की आयु के पश्चात स्मरण शक्ति कमजोर हो जाती है।

सेरिब्रल कोर्टेक्स में भी टेम्पोरल लोब में यह शक्ति विराजमान रहती है। दाएं हाथ से काम

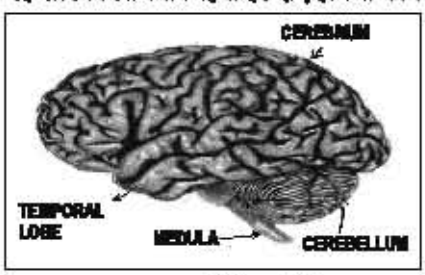

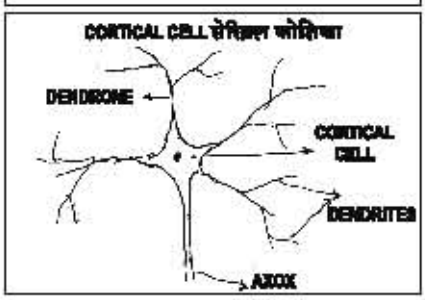

करने वालों के बाएं सेरिब्रल कोर्टेक्स में तथा बाएं हाथ से काम करने वालों के दाएं सेरिब्रल कोर्टेक्स में स्मरण शक्ति का नियन्त्रण होता है। परन्तु दोनों ही सेरिब्रल कोर्टेक्स साथ-साथ कार्य करते है और कुछ न कुछ भूमिका निभाते हैं। इनके अन्दर की कोशिकाएं डेन्ड्राइट्स के द्वारा एक दूसरे से जुड़ी रहती है और सेरिब्रल कोर्टेक्स एक शक्तिशाली कम्प्यूटर की तरह कार्य करता है। जब भी कोई नई बात पढ़ने, सुनने या लिखने में आती है तो इन कोशिकाओं से न्यूरोकेमिकल्स का स्राव होता है और अस्थाई स्मरण हो जाता है। बार-बार एक ही चीज के दोहराने पर न्यूरोकेमिकल्स पेपटाइड के रूप में परिवर्तित हो जाते है और डेन्ड्राइट्स पर इनका लेप हो जाता है तथा स्थायी स्मरण हो जाता हैं।

बच्चों में किसी भी नई चीज को पकड़ने की अद्वितीय शक्ति होती है। इस कारण अवसर मिलने पर बच्चे बहुत जल्दी सीख जाते हैं। प्रत्येक बच्चे का दिमाग किसी विशेष कार्य में बहुत अच्छा चलता है इसको टेलेन्ट कहते हैं और यह जन्मजात होता है। जिन लोगों में टेलेन्ट नहीं होता है वे भी अभ्यास करके यह शक्ति प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इनको समय अधिक लगता है।

बचपन में 6-7 साल की आयु में जब दिमाग के ज्ञान तन्तु परिपक्व हो जाते हैं तब बच्चों को नई बातों का ज्ञान देना चाहिए और उनको अभ्यास कराना चाहिये। इससे उनकी स्मरण शक्ति तथा ज्ञान का विकास होगा। छोटी उम्र में इस तरह का प्रयास करना अनुचित है। दिमाग में परिपक्वता नहीं होने से बच्चा आपके दिए हुए ज्ञान का स्मरण नहीं कर सकेगा।

कुछ बच्चों का दिमाग बहुत तेज होता है और एक बार सुनने से उनको स्थायी स्मरण हो जाता है। संभवतया इन बच्चों में न्यूरोकेमिकल्स का स्राव होते ही पेपटाइड्स बन जाते हैं और उनका लेप डेन्ड्राइट्स पर हो जाता है। अतः स्थायी स्मरण हो जाता है। यह शक्ति जन्मजात होती है। इसका कारण विदित नहीं है। यह शक्ति अभ्यास करने से प्राप्त नहीं की जा सकती है। स्थायी स्मरण भी उपयोग में नहीं लिया जाय तो धीरे-धीरे डेन्ड्राइट्स पर से पेपटाइड्स के विलुप्त हो जाने से यह ज्ञान विलुप्त हो जायगा।

खानपान का सारे शरीर पर प्रभाव पड़ता है। अतः स्मरण शक्ति पर भी प्रभाव पड़ता है। कोई विशेष प्रकार की भोज्य सामग्री नहीं है जो स्मरण शक्ति बढ़ा सकती हो परन्तु हमारे देश में मान्यता है कि बादाम, अखरोट, ब्राह्मी बूटी के उपयोग से स्मरण शक्ति बढ़ती है। इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। अकाल के समय भोजन की कमी होने पर सारे शरीर पर असर पड़ता है और शरीर ठीक से कार्य नहीं कर पाता है। इसी कारण दिमाग भी ठीक से कार्य नहीं करता हैं। विटामिन बी12 तथा निकोटिनामाइड की कमी होने से दिमाग ठीक से कार्य नहीं करता है और साइकोसिस (पागलपन) का रोग हो जाता है। इसमें रोगी को अपने आसपास का भान नहीं रहता है, चिड़चिड़ापन हो जाता है। नींद ठीक से नहीं आती है या ज्यादा आने लग जाती है। लड़ाई-झगड़ा करना सामान्य बात हो जाती है।

सेरिब्रल कोर्टेक्स की कोशिकाएं प्रकृति की देन हैं। स्मरण शक्ति इनकी संख्या तथा आकार पर निर्भर करती हैं। इनका आकार व संख्या बढ़ाना संभव नहीं है। अभ्यास करते रहने से कार्यक्षमता बढ़ाई जा सकती है परन्तु रक्त संचार में कोई कमी नहीं होनी चाहिए। रक्त संचार कम होने पर कार्यक्षमता बढ़ाना संभव नहीं है। निम्न दोहे की सत्यता भी इसी पर निर्भर है-

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
रसरी आवत जात के सिल पर परत निशान।

अतः बार-बार एक चीज पढ़ने या सुनने से एवं लिखने से अच्छी तरह याद हो जाती है और स्थायी स्मरण हो जाता है और इस ज्ञान का किसी भी समय उपयोग कर सकते हैं। लम्बे समय तक उपयोग न करने पर डेन्ड्राइट्स पर से पेपटाइड्स धीरे-धीरे कम हो जाते है एवं 10-15 साल में विलुप्त हो जाते है और आप भूल

जाते हैं। परन्तु पुनः याद करने पर जल्दी स्मरण हो जाता है।

वृद्धावस्था में नई-नई बातें बहुत कम समय तक याद रहती हैं। इसका कारण न्यूरोकेमिकल्स का कम मात्रा में बनना या शीघ्र नष्ट हो जाना है। इसका मुख्य कारण दिमाग की धमनियों में कोलेस्ट्रोल का जमा होना तथा उनका सिकुड़ जाना है तथा रक्त संचार कम हो जाना है। रक्त की कमी से सेरिब्रल कोर्टेक्ष की कोशिकाएं छोटी हो जाती है और उनकी कार्यक्षमता कम हो जाती हैं। कभी-कभी इस तरह की स्थिति 40-50 वर्ष की आयु में आ जाती है। चिकित्सा जगत में इस रोग को एल्जाहाइमरस रोग कहते हैं।

मदिरा सेवन करने वाले लोगों में भी लम्बे समय पश्चात स्मरण शक्ति में खराबी हो जाती है तथा इन लोगों को नई बातें याद नहीं रहती हैं। ऐसे लोग पुरानी बातें दोहराते रहते हैं और इनको जोड़कर कहानीनुमा बना देते है। इस रोग को कार्सोकोफ साइकोसिस कहते हैं।

स्मरण शक्ति में कमी जन्मजात हो सकती है। इसका कारण आनुवांशिक हो सकता है या गर्भस्थ शिशु के वातावरण में दोष (मां की दवाइयों का असर या मां की बीमारी) के कारण हो जाता है। उनकी खोपड़ी छोटी रह जाती है (माइक्रोकिफेली) और दिमाग का विकास पूरा नहीं होता है। इसका कारण उनकी समझ, स्मरण शक्ति इत्यादि सामान्य से कम (फिबलमाइंडेड) या बिल्कुल नहीं होती है (इडियट) और ये जीवन भर ऐसे ही रहते हैं। फिबलमाइंडेड लोग अभ्यास कर अपना कार्य स्वयं करने की क्षमता प्राप्त कर लेते हैं परन्तु इडियट लोग दूसरों पर पूर्ण रूप से निर्भर रहते हैं।

मानसिक रोगी की स्मरण शक्ति रोग तथा दवाइयों के सेवन करते रहने से कम हो सकती है। इन रोगियों का दिमाग पूर्णतया विकसित होता है परन्तु इन पर अनावश्यक दबाव या तनाव होने पर मानसिक विकृति उत्पन्न हो जाती है। यह भी संभव है कि जन्मजात सूक्ष्म, दिमाग के विकास की कमियां, दबाव या तनाव नहीं झेल सकती हैं और मानसिक रोग का जन्म हो जाता है।

-अभय सिंह जी की बाड़ी, सरदारपुरा, उदयपुर
मो. 9413657532

स्वास्थ्य

सूत्रों से जानिये रोगोपचार

❒ शंकरलाल माहेश्वरी

भारतीय चिकित्सा पद्धतियों में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का विशिष्ट महत्व रहा है। प्राचीनकाल में इसी पद्धति द्वारा गंभीर रोगों का उपचार होता था। सौभाग्य से आज पुनः आयुर्वेद पद्धति का प्रचलन बढ़ रहा है। यहाँ हमारे दैनिक जीवन में उपयोगी सिद्ध होगा-

- शीतल जल में सौंफ डालकर गलाओ आप।
  मिश्री के संग पान कर मिटे दाह-संताप।।
- फटे बिवाई या मुँह फट, त्वचा खुरदरी होय।
  नींबू मिश्रित आँवला सेवन से सुख होय।।
- सौंफ इलायची गर्मी में, लौंग सर्दी में खाय।
  त्रिफला सदाबहार है, रोग सदैव हर जाय।।
- वात-पित्त जब-जब बढ़े, पहुँचावे अति कष्ट
  सौंठ, आँवला, दाख सँग खावे पीड़ा नष्ट।
- नींबू के छिलके सुखा, बना लीजिए राख।
  मिटै वमन मधु संग ले, बढ़ै वैद्य की साख।।
- लौंग इलायची चाबिये, रोजाना दस पाँच।
  हटै श्लेष्मा कण्ठका, रहो स्वस्थ है साँच।।
- स्याह नौन हरड़े मिला इसे खाइये रोज।
  कब्ज गैस क्षण में मिटे सीधी सी है खोज।।
- पत्ते नागरबेल के हरे चबाय कोय।
  कण्ठ साफ सुथरा रहे, रोग भला क्यों होय।।
- खाँसी जब-जब भी करे, तुमको अति बैचेन।
  सिकी हींग अरु लोंग से मिले सहज की चैन।।
- छल प्रपंच से दूर हो, जन मंगल की चाह।
  आत्मनिरोगी जन वही गहे सत्य की राह।।
- दही मथे माखन मिले, केसर संग मिलाय।
  होठों पर लेपित करे, रंग गुलाबी आय।।
- अजवाइन को पीसिये, गाढ़ा लेप लगाय।
  चर्म रोग सब दूर हो, तन कंचन बन जाय।
- अजवाइन को पीस ले, नींबू संग मिलाय।
  फोड़ा फुंसी ढेर होय, सभी बला टल जाय।।
- अजवाइन गुड़ खाइये, तभी बने कुछ काम।
  पित्त रोग में लाभ हो, पायेंगे आराम।।
- ठण्ड लगे जब आपको, सर्दी से बेहाल।
  नींबू मधु के साथ में, अदरक पीयें उबाल।।
- अदरक का रस लीजिए, मधु लेवे समभाग।
  नियमित सेवन जब करे, सर्दी जाय भाग।।
- रोटी मक्के की भली, खा ले यदि भरपूर।
  बेहतर लीवर आपका, टी.बी. भी हो दूर।।
- गाजर संग रस आँवला, बीस औ चालीस ग्राम।
  रक्त चाप हृदय सही, पाये सब आराम।।
- लाल टमाटर लीजिए, खीरा सहित स्नेह।
  जूस करेला साथ हो, दूर रहे मधुमेह।।
- प्रातः संध्या पीजिए, खाली पेट चबाय।
  जामुन गुठली पीसिए, नहीं रहे मधुमेह।।
- सात पत्र ले नीम के, खाली पेट चबाय
  दूर करे मधुमेह को, सब कुछ मन को भाय।।
- सात फल ले लीजिए, सुन्दर सदा बहार।
  दूर करे मधुमेह को, जीवन में हो प्यार।।
- तुलसी दल लीजिए, उठकर प्रातः काल।
  सेहत सुधरे आपकी, तन-मन माला माल।।
- थोड़ा सा गुड़ लीजिए, दूर रहे सब रोग।
  अधिक कभी मत खाइए, चाहे मोहन भोग।।
- अजवाइन और हींग ले, लहसुन तेल पकाय।
  मालिश जोड़ो की करे, दर्द दूर हो जाए।।
- ऐलोवेरा-आँवला, करे खून में वृद्धि।
  उदर व्याधियाँ दूर हो, जीवन में हो सिद्धी।।
- दस्त अगर आने लगे, चिंतित दीखे माथ।
  दाल चीनी का पाउडर ले, पानी के साथ।।
- मुँह मे बदबू हो अगर, दालचीनी मुखडाल।
  बने सुगन्धित मुख, महक दूर होय तत्काल।।
- कंचन काया को कभी, पित्त अगर दे कष्ट।
  घृतकुमारी संग आँवला, कर उसे भी नष्ट।।
- बीस मिली रस आँवला, पाँच ग्राम मधु संग।
  सुबह शाम में चाटिये, बढ़े ज्योति सब दंग।।
- बीस मिली रस आँवला, हल्दी हो एक ग्राम।
  सर्दी, कफ तकलीफ में, फौरन हो आराम।।
- नींबू बेसन जल शहद, मिश्रित लेप लगाय।
  चेहरा सुन्दर तब बने, बेहतर यही उपाय।।
- मधु का सेवन जो करे, सुख पावेगा सोय।
  कंठ सुरीला साथ में, वाणी मधुरम होय।।
- पीता थोड़ी छाछ जो, भोजन करके रोज।
  नहीं जरुरत वैद्य की, चेहरे पर हो ओज।।
- ठण्ड अगर लग जाय, जो नहीं बने कुछ काम।
  नियमित पी लें गुनगुना पानी दे आराम।।
- कफ से पीड़ित हो अगर, खाँसी बहुत सताय।
  अजवाइन की भाप ले, कफ तब बाहर आय।।
- अजवाइन ले छाछ संग, मात्रा पाँच ग्राम।
  कीट पेट के नष्ट हो, जल्दी हो आराम।।
- छाछ हींग सैंधा नमक, देर करे सब रोग।
  जीरा उसमें डालकर, पीये सदा यह भोग।।

पूर्व जि.शि.अ.,पोस्ट-आगूँचा (भीलवाड़ा)
मो. 9214581610

शिक्षा चिन्तन

भारतीय शिक्षा के स्वरूप की संकल्पना

❒ बजरंग प्रसाद मजेजी

आज विद्यालयों में व्यक्ति तो निकल रहे हैं, परन्तु व्यक्तित्व गायब है आज व्यक्ति केन्द्रित है। समाज की उसे चिन्ता नहीं है। यह अधूरापन है, इसे दूर करना होगा।

–स्वामी रंगनाथन

वस्तुत: आज विद्यार्थी, विद्यार्थी न होकर मात्र परीक्षार्थी बन गया है। परीक्षा देकर डिग्री लेना ध्येय होता जा रहा है। अंग्रेजों के समय की शासन पद्धति के कारण संस्कृति चिन्तन का प्रवाह अवरुद्ध हो गया। साथ ही दूसरा एक अजनबी, अनचाहा प्रवाह प्रारम्भ हो गया। अंग्रेजों की शिक्षा नीति का प्रवाह भारत की मूल संस्कृति से मेल खाने वाला नहीं था। परन्तु शासन के कारण बलवती था। उस समय का बल सांस्कृतिक नहीं अपितु राजकीय और आर्थिक था। अंग्रेजों की शिक्षा नीति का प्रभाव हम पर आज भी इतना है कि हमने आज तक हमारी राष्ट्रीय भावना की सुध नहीं ली है। आज भी राष्ट्र क्या होता है, राष्ट्रभक्ति क्या होती है, यह हमारी शिक्षा के विषय नहीं है। हमारी राष्ट्रीय कल्पना को हमने अपने संविधान में भी स्पष्ट नहीं किया है। राष्ट्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय शिक्षा जैसे विषयों की उपेक्षा की है इससे जनजीवन में भी दुराव आ गया। जनजीवन की वर्तमान समस्याओं का कारण भी यही है इसलिए सर्वप्रथम हमारी आवश्यकता संस्कृति के पुनरुत्थान की होनी चाहिए। संस्कृति के अधिष्ठान पर शिक्षा का चिन्तन करने की आवश्यकता है। शिक्षा और संस्कृति का सम्बन्ध एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह होता है। संस्कृति ही शिक्षा को अधिष्ठान देकर पुष्ट करती हे। शिक्षा एक ऐसी व्यवस्था है जिससे संस्कृति परम्परा बनकर पीढ़ियों में हस्तान्तरित होती है। इसलिए जब राष्ट्र की शिक्षा की बात करते हैं तो सर्वमान्य है कि राष्ट्र बनता है, संस्कृति से। इसका अनिवार्य रूप से भू-भाग और शासन से सम्बन्ध नहीं हैं भू-भाग और शासन उससे सम्बन्धित अवश्य हैं। परन्तु राष्ट्र को राष्ट्र बनाने वाली संस्कृति ही है। अस्तु, राष्ट्र का अर्थ सांस्कृतिक संदर्भ में करने से शिक्षा राष्ट्रीय होती है।

शिक्षा के माध्यम से पुष्टि नहीं मिलने पर संस्कृति का क्षरण होता है। संस्कृति क्षरण होने से समृद्धि, सुरक्षा, श्रेष्ठता, गौरव, उत्कृष्टता आदि सब नष्ट हो जाते हैं। यह सब नष्ट न हों, इसलिए शिक्षा राष्ट्रीय होनी चाहिए। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा के अभाव में भारतीय समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग अराष्ट्रीय बन रहा है। शिक्षा का स्वरूप राष्ट्रीय न होने से समाज में जो राष्ट्रीय विचारधारा के व्यक्ति हैं या राष्ट्र भक्त हैं वे भी समयानुकूल बदल रहे हैं। आज भारत से जाने वाले इंजीनियर, चिकित्सक, वैज्ञानिकों से दूसरे देश लाभान्वित हो रहे हैं। उनकी योग्यता का लाभ लेकर नये-नये प्रयोग, तकनीक का आविष्कार कर रहे हैं और वे उन्हें उनके देश की नागरिकता प्रदान कर रहे हैं। जबकि पहले भारत का विद्यार्थी विदेश में जाता था तो वहाँ से सीखकर भारत वापिस आकर, देश को योगदान देता था। वर्तमान में स्थिति यह है कि हम अपनी परम्परा की शिक्षा से दूर होकर मानव समाज में तनाव, आर्थिक विषमता, भेदभाव उत्पन्न करने वाली शिक्षा पद्धति को अपनाने की चेष्टा कर रहे हैं। जबकि किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला शिक्षा होती है। इस स्थिति को देखकर मूर्धन्य साहित्यकार पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने व्यथित होकर कहा था कि-**''वह शिक्षा, शिक्षा नहीं है जो संवेदन शून्य तथा निष्क्रिय बना दे। वह क्या है-मैं नहीं जानता। कदाचित् कोल्हू हो जो शिक्षित के दिमाग और हृदय को पेर कर रसशून्य, संवेदनशून्य और खाली बना दे।''** ऐसी शिक्षा नीति से हमें उबरना होगा।

स्वतंत्रता पश्चात शिक्षा नीति में परिवर्तन के प्रयास–राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने देश की शिक्षा पद्धति को चुस्त दुरस्त करने के प्रयत्नों में बुनियादी शिक्षा की संकल्पना देकर भारतीय शिक्षा पद्धति को स्वालंबन और अर्थोपार्जन से जोड़ने का प्रयत्न किया। तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था में बाद में कई प्रयोग प्रारम्भ हुए। सार संक्षेप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में शिक्षा में समानता, सामाजिक न्याय, देश की अद्वितीय सामाजिक संस्कृति, पहचान, राष्ट्रीय समरसता में योगदान वैज्ञानिक दृष्टिकोण और संविधान में निहित सरोकरों के प्रोत्साहन पर जोर दिया। शिक्षा लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या एवं रूपरेखा 1988 में निहित मूलभूत तत्व वर्तमान परिदृश्य में ओर अधिक प्रासंगिक है नागरिकों के 10 मौलिक कर्त्तव्यों को संविधान में शामिल करने के लिए जो संशोधन किया गया वह मूल्यवान संकेत है कि एक देश अपने नागरिकों से क्या अपेक्षाएं रखता है। भारतीय संसद में 26 फरवरी 1999 को प्रस्तुत एस. बी. चव्हाण समिति की रिपोर्ट के बिन्दु सं. 8 में निहित अनुशंसाओं में सत्य, सदाचरण, शांति, प्रेम, और अहिंसा जैसे मूलभूत और सर्वभौमिक मूल्यों को बौद्धिक, भौतिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक मूल्यों को मानव व्यक्तित्व के लिए महत्वपूर्ण माने गये हैं। इसके साथ ही शिक्षा के 5 उद्देश्य ज्ञान, कौशल, संतुलन, दृष्टि और अस्मिता से जुडे हैं। इसके अतिरिक्त सभी विद्यालयों से अपेक्षा की गई कि वे महत्वपूर्ण गुणों जैसे नियमितता, समय की पाबन्दी, स्वच्छता, सेवाभाव, आत्म नियंत्रण, परिश्रम, कर्त्तव्यबोध, उत्तरदायित्व की भावना, सृजनात्मकता, संवेदनशीलता, भाईचारे की भावना, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, पर्यावरण संरक्षण के प्रति निष्ठा के भाव का विकास करें, जिसका वर्तमान शिक्षा पद्धति में अभाव है। चव्हाण समिति ने दृढ़तापूर्वक यह आग्रह किया था कि सभी धर्मों को शिक्षा देना, सामाजिक समरसता धार्मिक सद्भाव के लिए आवश्यक और महत्वपूर्ण उपकरण है। इससे पूर्व में शिक्षा में परिवर्तन हेतु गठित किये गये आयोगों यथा राधाकृष्णनन कमीशन 1948, डॉ. लक्ष्मण स्वामी मुदालियर आयोग 1952-53, कोठारी आयोग 1964-66, प्रो. यशपाल समिति आदि सभी ने सभी शिक्षा क्षेत्रों में परिवर्तन-परिवर्द्धन के सुझाव दिये थे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आधार एवं संकल्पना–सर्वजन अभिमत है कि वर्तमान शिक्षा पद्धति में बदलाव की आवश्यकता है ऐसा प्रयत्न आवश्यक है कि शिक्षा से बालक की सामर्थ्य एवं गुणवत्ता में वृद्धि हो। राष्ट्रीय जीवन दर्शन का भाव लेकर शिक्षा दी जानी चाहिए।

ढांचा वहीं रहेगा, आत्मा को बदलने की आवश्यकता है। केवल तर्कशक्ति या बुद्धि का विकास हमारा लक्ष्य नहीं हैं। हमें सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना होगा। भारतीय दृष्टिकोण से हमें विचारना होगा। राष्ट्र के लिए व्यक्ति का निर्माण करना होगा। व्यक्ति को बनाएंगे तो राष्ट्र बनेगा। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि- ''अच्छा डाक्टर अच्छा व्यक्ति नहीं बना। अच्छा इंजीनियर बन गया, मगर अच्छा व्यक्ति नहीं बना। यह धारणा दूर करनी होगी।'' शिक्षा एक डिग्री है, यह धारणा ठीक नहीं है, यह व्यापक है। भारत के बारे में अभी जो अवधारणा है उसे बदलना होगा। सामाजिक कमियों के कारण कुछ कमियां आई हैं, उन्हें ठीक करना होगा। सुधार हेतु मस्तिष्क, बुद्धि, ज्ञान और विज्ञान दोनों को जोड़ने से तीन गुण एक व्यक्ति आ जाते हैं।

''ज्ञानम्-विज्ञानम्-आस्तिक्यम्''

संस्कृति के वाहक शिक्षा का मुख्य आधार हमारा जीवनदर्शन हमारा राष्ट्रवाद, हमारी संस्कृति, हमारे जीवन मूल्य ही होने चाहिए। उपासना पद्धति, जीवन दर्शन, उससे विकसित हमारी सभ्यता, संस्कृति, उससे बने जीवनमूल्य हमारी राष्ट्रीयता के आधार हैं। एक फ्रेंच विद्वान के अनुसार-''सारी विनाशलीला जो चलेगी, उसे टालने का एक ही उपाय है- नैतिकता सरोकारों के प्रति जागरूकता चाहिए, आध्यात्मिकता चाहिए और नीतिपूर्ण जीवन चाहिए। वे आगे लिखते हैं कि ये तीनों एक साथ देखने हो तो भारत के पास ही मिलेंगे। इसलिए सारी दुनियाँ को भारत से शिक्षा लेनी चाहिए। भारतीय शिक्षाविदों का समग्र विचार है कि शिक्षा का मूल उद्देश्य राष्ट्र निर्माण होना चाहिए। शिक्षा जीवन भर चलने वाला उद्यम है। दूरगामी सोच रखते हुए आज की शिक्षा पद्धति में परिवर्तन को लेकर कार्य करना होगा। हमें शोध करना होगा, सटीक स्थिति ज्ञात करके आगे बढ़ना होगा। चिन्तन को व्यवहारिक प्रयोगों में उतारना पड़ेगा। प्रयोगों से प्राप्त परिपक्व तथ्य का सार्वजनिक उपयोग कर लोकमत बनाना होगा। पाठ्यक्रम कैसा हो निर्माण करना होगा तथा लागू करना होगा। हमारी शिक्षा में व्यक्तिगत निर्माण, समाजसुधार, राष्ट्रहित को समावेश करने का लक्ष्य होना चाहिए। वही राष्ट्रीय शिक्षा कहलाएगी।

-से.नि. प्रधानाध्यापक, सांपला (अजमेर)
मो. 9460894708

नामांकन

प्राथमिक स्तर पर नामांकन एवं ठहराव

❑ सुनीता चावला

पिछले दिनों जयपुर जयसिंहपुराखोर में पुलिस ने एक अंधेरी कोठरी से लगभग 8 से 12 वर्ष की आयुवर्ग के 35 मासूम बच्चों को मुक्त करवाया। इन बच्चों से चूड़ी बनाने का कार्य करवाया जाता था। इन्हें खाने के लिए दिन में एक बार चावल दिये जाते थे। इन बच्चों ने कई दिनों से स्नान नहीं किया था। ये बच्चे प्रतिदिन 18-20 घन्टे कठोर परिश्रम करते थे। थकान होने पर यदि यह बच्चे सुस्ताते तो इन्हें शारीरिक यातानाएं दी जातीं। बच्चों के कोमल शरीर पर इस दरिंदगी के निशान हैं। बच्चों से इस प्रकार का दुर्व्यवहार एवं शारीरिक एवं मानसिक यातनाएं देना अपराध की श्रेणी में आता है एवं यह उन मासूमों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। यह तो एक उदाहरण मात्र है । दैनिक जीवन में चहूँ ओर देखते हैं तो छोटे बच्चे बाल श्रमिकों के रूप में कहीं घरों में, कहीं चाय के होटलों में, ढाबों में, दुकानों पर साफ सफाई, बर्तन धुलाई जैसे कार्य करते मिल जाएंगे। ये मासूम अपने परिवार की आर्थिक मदद करते हैं। मेरी राय में बच्चों को स्वावलम्बी बनाना अच्छी बात है लेकिन इसके साथ-साथ समानान्तर रूप से उनकी शिक्षा व्यवस्था एवं सकारात्मक व्यक्तित्व विकास भी आवश्यक है।

हमारे समाज में निरक्षरता एवं गरीबी जैसी बीमारियां बाल अपराध, बालकों का दैहिक शोषण, बेरोजगारी जैसे अनैतिक कृत्यों को बढ़ावा दे रहे हैं। गरीब तबके के लोग परिवार के भरण-पोषण के लिये अपने बच्चों को काम पर भेजते हैं लेकिन इस स्वार्थ की वजह से उन्हें शिक्षा से महरूम रख उनके नैसर्गिक विकास को अवरुद्ध किया जाना कतई उचित नहीं है।

गत वर्ष 10 दिसम्बर 2014 को भारत के कैलाश सत्यार्थी और पाकिस्तान की 17 वर्षीय मलाला युसुफजई को संयुक्त रूप से शांति के लिये नोबल पुरस्कार दिया गया। इन दोनों शाख्सियतों ने बाल शोषण के विरुद्ध एवं बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिये विशेष प्रयास किये हैं। इन्हें पुरस्कृत करने से उन लोगों को प्रेरणा मिली है जो बाल मजदूरी एवं बाल शोषण के खिलाफ संघर्षरत है और बच्चों की शिक्षा के लिये प्रयासरत है।

विश्व को अस्त्र-शस्त्र की नहीं वरन् शिक्षा एवं शास्त्र की आवश्यकता है। शिक्षा वह हथियार है जिससे जीवन के हर संघर्ष में सफलता पायी जा सकती है। शिक्षा बालक को संस्कारित, सहनशील एवं आत्मविश्वासी बनाती है। शिक्षा से प्राप्त संस्कार एवं गुण समाज को प्रेम, सहयोग, भाईचारा एवं सद्भावना जैसे गुणों से पोषित करते हैं। बच्चों में स्वविवेक जाग्रत होता है। उनमें दूरदृष्टि एवं निर्णय क्षमता का विकास होता है जो राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करता है। इसलिए आवश्यक है कि समाज का प्रत्येक नागरिक शिक्षा के माध्यम से स्वयं का उन्नयन कर राष्ट्रोदय में अपना दायित्व निभाए। राज्य सरकार द्वारा प्राथमिक विद्यालय के बालकों के लिये विभिन्न प्रकार की सुविधाएं मुहैया करवायी जा रही हैं। इसके बावजूद बच्चों की बहुत बड़ी संख्या विद्यालय जाने से महरूम है। गरीब एवं अशिक्षित अभिभावक संभवत: शिक्षा के महत्व को समझ नही पाते हैं। इन बाल पालकों को यह समझना होगा कि उनके बच्चों का विकास स्लेट एवं बस्ते में ही है। सरकारी सुविधाओं की उपलब्धता के साथ प्रत्येक व्यक्ति को अपने हिस्से का कर्त्तव्य निभाते हुए सक्रिय होकर कमजोर, अशिक्षित एवं श्रमिक वर्ग के अभिभावकों को शिक्षा का महत्व एवं आवश्यकता समझाते हुए उन्हें बच्चों को विद्यालय भेजने हेतु प्रेरित करना चाहिए।

मैंने यह महसूस किया है कि प्राथमिक कक्षा स्तर पर शिक्षा को गम्भीरता से नहीं लिया जाता है फिर वो चाहे विद्यालय के शिक्षक हों अथवा अभिभावक। प्राथमिक स्तर पर कम महत्वपूर्ण कक्षा स्तर जान वे कई प्रकार के समझौते कर लेते हैं तथा बालक की नियमित उपस्थिति को ज्यादा तवज्जो नहीं देते हैं। किसी भी अन्तराल की परवाह किये बिना शादियों में जाने, घूमने-फिरने, मौज मस्ती एवं अन्य गैर जरूरी कार्यो के लिए छुटट्री दिलवा देते हैं। उन्हें ये सच जानना एवं हृदयंगम करना होगा कि बचपन में प्राप्त की गई शिक्षा एवं संस्कार ही बच्चों के भविष्य की नींव है। छोटा बच्चा कच्ची

मिटट्री की तरह होता है। उसे जैसा ढालना चाहे वैसा ढाल सकते हैं। लेकिन इसके लिये जरूरत है इन नन्हों की प्यार से की गई देखभाल एवं उनके भविष्य के प्रति गंभीरता की। बाल्य अवस्था में दिये गये संस्कार, स्नेह एवं अनुशासन की सीख ही भविष्य की सफलता निर्धारित करते हैं। इसलिये बालक के जीवन में प्राथमिक शिक्षा उसके कैरियर की आधारशिला है। घर एवं विद्यालय का स्वीकारात्मक वातावरण उन्हें नियमित रूप से विद्यालय जाने के लिए प्रेरित करता है। आइए जानते हैं कुछ अन्य महत्वपूर्ण कारक हैं, जो प्राथमिक कक्षाओं में नामांकन एवं ठहराव बढ़ाने में मददगार हो सकते हैं।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा– प्राथमिक स्तर पर नामांकन बढ़ाने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। अक्सर यह देखा गया है विद्यालय में चार-पाँच वर्ष पढ़ने के बाद भी बालक में शैक्षिक एवं बौद्धिक अधिगम का स्तर बहुत कम होता है। पाँचवी उतीर्ण बालक साधारण हिन्दी पढ़ एवं लिख नही सकता है। छोटी-छोटी संख्याओं के गुणा, जोड़, भाग आदि नहीं कर पाता है। इससे यह प्रतीत होता है कि बालक के जीवन के महत्वपूर्ण पाँच छः साल व्यर्थ ही गवां दिये। यदि बालक को अपने स्तर के अनुसार योग्यता एवं आधारभूत जानकारी नहीं है तो बाद की कक्षाओं में उसे सीखना बहुत कठिन है। जब तक बालक में कक्षा विशेष की बुनियादी योग्यता नही है तो उसे आगे की कक्षाओं में भेजा जाना चाहिए। इसलिए यह अपरिहार्य है कि अभिभावक अपने बच्चों को नियमित विद्यालय भेजें। शिक्षक विद्यालय में बालकों के प्रति वैसे ही समर्पित रहें जैसे घर पर अपने बच्चों के प्रति समर्पित रहते हैं।

वात्सल्यपूर्ण व्यवहार एवं भयरहित वातावरण– इंसान की जैसी मनः स्थिति एवं भावनाएं होती हैं, उसका प्रभाव उसके चहूँ ओर के वातावरण पर पड़ता है। यही नियम विद्यालय में शिक्षक एवं बालक पर भी लागू होता है। शिक्षक के मन में विद्यालय में आने वाले बालकों के प्रति स्नेह पूर्ण एवं अपनत्व की भावनाएं होने से बालक सहज महसूस करता है। ऐसा माहौल अभिभावक एवं बच्चों को आकर्षित करता है। अभिभावक अपने नौनिहालों को ऐसे विद्यालय में दाखिला दिलवाकर प्रसन्नता महसूस करते हैं। ऐसा वातावरण नामांकन हेतु तो अभिभावकों को आकर्षित करता ही है साथ ही बालक का विद्यालय में ठहराव भी सुनिश्चित करता है। प्रकृति का यह नियम है कि हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। इस प्रकार शिक्षक एवं बालक के बीच सौहार्दपूर्ण वातावरण में मौन अंतःक्रिया चलती रहती है। यह मौन वार्तालाप बालक के दिल एवं दिमाग में चिर स्थायी रहता है। यहाँ बालक वैसा ही खुश महसूस करते है जैसे वे अपने परिवार के आत्मीय सदस्यों के साथ।

खेल-खेल में शिक्षा–प्राथमिक विद्यालय के बालकों के लिए स्तरानुरूप शैक्षिक अधिगम (Academic Learning) से बौद्धिक अधिगम (Intellectual Learning) की अधिक आवश्यकता महसूस होती है। इसे खेल के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से ग्रहण किया जा सकता है। खेल-खेल में शिक्षा का विचार नया नहीं है यहाँ शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक को यह सावधानी रखनी होगी कि शिक्षा पथ भ्रमित नहीं हो जाये और पूर्णतः खेल केन्द्रित ना होकर के उसका मूल उद्देश्य बालक को शिक्षा प्राप्ति रहे। उसे खेल का प्रयोग ऐसा वातावरण एवं परिस्थितियां तैयार करने हेतु करना चाहिए जिनसे बालक में अन्वेषण, प्रश्न पूछना, पूर्वानुमान, कुशलता, तर्क क्षमता जैसे अधिगम प्राप्ति में सहायक गुणों का विकास हो, जो बालकों में सामाजिकता एवं सहयोग की भावना के परिवर्द्धन में सहायता करे।

बालक अपने अध्यापक एवं साथियों से आत्मिक संबंध स्थापित करता है। इस प्रकार प्रचलित पारम्परिक शिक्षण पद्धति से हटकर शिक्षा देने से अभिभावक एवं बालकों का रुझान विद्यालयों की ओर बढ़ता है, नीरसता समाप्त होती है तथा बालकों के विद्यालय के प्रति जुड़ाव में वृद्धि होती है।

कारीगरी की शिक्षा–शिक्षा के क्षेत्र में प्रसिद्ध शिक्षाविद् गिजू भाई ने बालकों के प्राकृतिक एवं सम्पूर्ण विकास के लिए अनेक प्रयोग किये। उनका मानना था कि बालकों को विद्यालय में हुनरमंद बनाना चाहिए। वर्तमान में भी हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा कौशल विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है। अतः पाठ्यक्रम में कुछ ऐसे विषय होने चाहिए जिनसे बालक कारीगरी सीख सकें। मिटट्री का काम, रंगोली बनाना, कागज कैंची का उपयोग, बंगले मैकेनो बनाना आदि गतिविधियां हुनर सीखने के लिए उपयोगी है। किंडरगार्टन शालाओं में बच्चें प्लास्टीसीन या किसी भी तरह मिटट्री से खिलौने बनाते है यह काम बालकों को अच्छा लगता है। ऐसा काम करने वाले बालक सुन्दर अक्षर लिखते हैं एवं स्वयं को अच्छे से अभिव्यक्त करते हैं। रंगोली से हस्त कौशल एवं कागज को काट कर पतंग, कागज के दीपक बनाने से बालक की सर्जनात्मक क्षमता का विकास होता है। इन क्रियाकलापों से बालक की कर्मेन्द्रियां एवं ज्ञानेन्द्रियां दोनो ही व्यस्त हो जाती है। बंगले मैकेनो में घनों के द्वारा बालक विभिन्न रचनाएं बनाता है। यह स्थापत्य एवं सर्जनात्मकता के विकास में मददगार है। बालक को इन कार्यो से आनन्द मिलता है। यदि शिक्षक की देख रेख में ऐसे कार्य किये जाए तो इनकी उपयोगिता और अधिक हो जाती है। ऐसी गतिविधियां बालक को विद्यालय में प्रवेश लेने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार जब शिक्षा कौशल निर्माण में अपनी भूमिका निभाकर स्वावलम्बन और रोजगारपरक होगी तो अभिभावकों के शिक्षा के प्रति इस नजरिए में भी बदलाव आएगा।

बस्ताविहीन स्कूल–प्रारंभिक कक्षाओं में अध्ययन करने वाला बालक छोटा, शरीर नाजुक एवं मन कोमल होता है। घर में माँ-पिता, भाई-बहन एवं बुजुर्ग सदस्यों की प्रेमपूर्ण देखभाल से निकल कर जब वह विद्यालय आता है तो वहाँ का अनुशासित वातावरण उसे पंसद नहीं आता है। खिलौनों से खेलते रहने के कारण उसे बस्ता बोझ लगता है। इन कक्षाओं में बस्ता विद्यालय तक ही सीमित रखा जाए। आवश्यक पुस्तक एवं उत्तर पुस्तिकाओं से संबंधित पढ़ने एवं लिखने का कार्य कक्षा में सामूहिक रूप से करवाया जाए, जो बच्चे एक दूसरे को देखकर बेहतर कर लेते हैं। कर के सीखना अधिक प्रभावी होता है इसलिए गतिविधि आधारित कार्य गृहकार्य में दिये जाने चाहिए। ऐसे प्रयासों से करवाये गये शिक्षण में बालक आनन्द महसूस करता है। इस संबंध में शिक्षाविद् प्रो. यशपाल द्वारा पूर्व में बस्ते के बोझ के संबंध में की गई सिफारिश भी प्रासंगिक है।

बच्चों को विद्यालय भेजना आवश्यक–आधुनिक समाज में शिक्षा की आवश्यकता एवं श्रेष्ठता को देखते हुए प्रत्येक नागरिक को अपने विद्यालय जाने योग्य बच्चों को विद्यालय में भेजना अनिवार्य जिम्मेवारी होनी चाहिए। ऐसा नहीं करने पर सरकार द्वारा मुहैया करवायी जाने वाली सुविधाओं में कटौती

की जा सकती है।

स्वभाव के अनुसार शिक्षण–प्रत्येक बालक स्वभाव से भिन्न होता है। कोई जटिल स्वभाव का तो कोई बहुत ही सरल स्वभाव का तो कोई नटखट चालाक तो कोई सीधा साधा। शिक्षक विभिन्नताओं को समस्या न समझें। उनकी यह जिम्मेवारी है कि प्रत्येक बालक के स्वभाव को समझ कर उसके अनुरूप व्यवहार करें। जटिलता होने पर वह बालक के माता-पिता, परिवारजनों से भी संपर्क कर समस्या पर विचार विमर्श किया जा सकता है।

अभिभावकों को विद्यालय से जोड़ना–अक्सर अभिभावक विद्यालयों की गतिविधियों से अनभिज्ञ रहते हैं एवं इनमें रुचि नहीं लेते हैं। उन्हें अपने बच्चों की समस्याओं की जानकारी नही होती है। वे अपने बच्चों का पर्याप्त मार्गदर्शन नहीं कर पाते है। माता-पिता को यह जानना जरूरी है कि उनके बच्चे विद्यालय में क्या पढ़ रहे हैं। इसलिए माता-पिता उन विषयों को समझें जो उनके बच्चे विद्यालय में पढ़ रहे हैं। इसके लिए विद्यालय में अभिभावकों की एक कार्यशाला लगाई जा सकती हैं। इसमे कक्षा लगाकर अभिभावकों को गणित, अंग्रेजी एवं विज्ञान जैसे विषयों को समझाया जाए ताकि वे घर पर बच्चों को इन विषयों का गृह कार्य एवं तैयारी करा सकें। सिंगापुर के प्राथमिक विद्यालयों में इस प्रकार के प्रयोग सफलतापूर्वक किये जा रहे हैं।

अभी कुछ समय पूर्व दूरदर्शन के एक चैनल पर मैंने गुजरात के पुंसारी गांव की हाईटेक व्यवस्था देखी एवं सुनी थी। यह गांव साबरकांठा जिले में है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 5500 है। इस गांव के 31 वर्षीय युवा संरपच श्री हिमांशु पटेल नॉर्थ गुजरात युनिवर्सिटी से स्नातक है। श्री पटेल 2006 से इस गांव में संरपच है। इस गांव की व्यवस्था एवं सुविधाएं किसी आधुनिक शहर की तुलना में बेहतर है। इन्होंने पिछले 08 वर्षो में 16.00 करोड़ रुपये खर्च करके गांव को हाईटेक बनाया है। गांव के प्रत्येक घर एवं संस्थान में वाटरप्यूरिफाईर द्वारा शुद्ध किये जल की आपूर्ति होती है। इसकी कीमत प्रतिदिन 04 रुपये है। संरपच का कार्यालय इतना आधुनिक है कि वे अपने कक्ष से गांव के विद्यालयों, चिकित्सालयों एवं अन्य सार्वजनिक महत्वपूर्ण स्थानों की गतिविधियां देख सकते हैं। यहाँ के प्राथमिक विद्यालयों की निम्नांकित विशेषताएं हैं :-

01. प्रत्येक विद्यालय में वाई-फाई की सुविधा है।
02. प्रत्येक विद्यालय के कक्षा-कक्ष वातानुकूलित है।
03. श्रव्य दृश्य प्रस्तुति (Audio-Visual Presentation) के द्वारा अध्ययन अध्यापन करवाया जाता है।
04. अभिभावक विद्यालय में जाकर सीसीटीवी कैमरे से अपने बच्चों की कक्षा में जाये बिना कक्षा में होने वाली गतिविधियां एवं क्रियाकलाप देख सकते हैं।
05 विद्यालय में बायोमैट्रिक मशीन से अध्यापकों की उपस्थिति दर्ज होती है।
06. गांव का प्रत्येक बच्चा विद्यालय जाता है। यहाँ ड्राप आउट शून्य प्रतिशत है।

गांव के इस प्रकार से विकास के लिए उन्होंने स्वयं सहायता समूह, 12वें वित्त आयोग जिला योजना वित्त आयुक्त से आर्थिक सहायता प्राप्त की है। इस उदाहरण से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि यदि समाज की हर इकाई यथा नागरिक, अभिभावक, शिक्षक एवं प्रशासक सेवानिष्ठ भावना से जिम्मेवारी निर्वहन करें एवं परस्पर सहयोग दें, तो शत प्रतिशत नामांकन एवं ड्राप आउट शून्य प्रतिशत की स्थिति प्राप्त करना असंभव नहीं है। –सहायक निदेशक (समाज शिक्षा)

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414426063

विमर्श

मेरे अनुभव मेरे विचार

जल का सदुपयोग करें

भारतीय वैदिक परम्परा में अग्नि तथा जल को जो सम्मानजनक स्थान दिया गया है, उसे हम सभी जानते हैं। इसे न केवल जीवन पर्यन्त जीने के लिए अपरिहार्य माना गया है अपितु मरणोपरान्त मोक्ष एवं कल्याण की पुरातन मान्यता में भी इन्हें अत्यन्त श्रद्धामय स्थान प्राप्त है। प्रकृति प्रदत्त असंख्य उपहारों में जल व पवन का महत्व कदाचित सर्वोपरि है। हमारे तमाम कृषि जन्य, आर्थिक और अन्तोत्गत्वा सामाजिक व व्यक्तित्व विकास का आधार जल ही है। यह बात दीगर है कि सामान्यतः प्रत्यक्ष प्रभाव ही आमजन के ध्यान में आ पाते हैं, परोक्ष प्रभाव व्यक्ति की समझ में देरी से आते हैं। परोक्ष प्रभाव अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

हमारे पूर्वज जल की एक-एक बूंद का सावधानीपूर्वक उपयोग करते थे। बरसात के जल का संग्रहण, जल का बहुउपयोग आदि उनके जीवन के अंग थे। उन्हें किसी की समझाइश की जरूरत नहीं थी। कहना न होगा, इसी कारण वातावरणीय आपदाएं आ रही हैं। धरती के उदर में संचित जल का स्तर निरंतर नीचे जा रहा है। नदियों, नहरों, तालाबों की स्थिति सबको पता है। किसी संसाधन की उपलब्धता व उपयोग के मध्य संतुलन बनाए रखने से ही उसके सतत प्रदाय का वांछित प्रवाह बना रह सकता है। अमृततुल्य जल, जो हमारा प्राण रक्षक है, उसकी आपूर्ति को ध्यान में रखकर सुविचारित व सुवैज्ञानिक दीर्घकालीन प्रबंधन किया जाना चाहिए।

कुओं से अंधाधुंध जल निस्तारण, वर्षा जल का संचय के प्रति बेरुखी, नदियों व नहरों के रखरखाव के प्रति उदासीनता, सर्विस पाइप लाइनों के समुचित रखरखाव के अभाव में होने वाला जल रिसाव, घरों, कार्यालयों व अन्य सार्वजनिक स्थानों पर जल का निरर्थक बहना, पानी की बहुउपयोग प्रवृत्ति का ह्रास आदि का मानवीय लापरवाही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने से कम नहीं है।

हर स्तर पर यथा शासन, व्यवस्था तंत्र व उपयोगकर्ताओं को चाहिए कि वे जल की महिमा का समझें तथा उसकी भंडारण क्षमता में बढ़ोतरी के लिए अंतःप्रेरित अनुशासन पैदा करें। हमें विरासत में मिले संस्कारों व सुकार्यों को विस्मृत न करके उन्हें कर्तव्य भाव के साथ अपने व्यवहार में बनाए रखना है और उन विरासती संस्कारों में जल का संचय, सम्मान व सदुपयोग सर्वत्र व्याप्त है। अतः हमें यह चाहिए कि हम जल का उपयोग पूर्ण मितव्ययता के साथ करें। जहां जितना आवश्यक हो, उतना ही जल काम में लाएं। जल की बचत ही जल का उत्पादन है। यही जल का उत्पादन है। यही जल का सच्चा सम्मान है। जल के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है।

विद्यालयों को उनमें अध्ययनरत बालक-बालिकाओं के माध्यम से समाज में जल के महत्व का संदेश देने में आगे आना चाहिए। राष्ट्रीय सेवा योजना, समाजोपयोगी उत्पादन कार्य एवं समाज सेवा तथा समय-समय पर आयोजित होने वाले उत्सव-पर्वों के समय जल संस्कार का संदेश दिया जा सकता है एवं वर्षा जल के भण्डारण जैसे उत्तम कर्तव्य निहित है।

–प्रवीण कुमार शर्मा, व.अ. (विज्ञान)
रा.बा.उ.मा. विद्यालय, मीण्डा (नागौर)

सूचना तंत्र

नोडल विद्यालय : संकल्पना एवं संभावनाएं

❒ संजय सेंगर

भारत भूमि पर प्राचीनकाल से ही उत्तरदायित्वों के विकेन्द्रीकरण की परम्परा रही है। संयुक्त परिवारों में मुखिया अपने समस्त कार्यों का वितरण परिवार के अन्य सदस्यों में उनकी क्षमता के अनुरूप किया करता था, उनके द्वारा सम्पादित कार्यों का सतत पर्यवेक्षण करना और उन्हें वांछित मार्गदर्शन प्रदान करना उसका कर्त्तव्य हुआ करता था। यह परम्परा कार्य को सुगम व सरल बनाने के साथ-साथ कार्य सम्पादन में उत्कृष्टता भी लाती थी। परिवार के समस्त सदस्य एक न एक दायित्व के साधक होते तथा उन्हें आज की तरह बेरोजगारी का दंश भी नहीं झेलना पड़ता था। उनकी आयु व कार्यक्षमता में वृद्धि के साथ साथ ही उनके दायित्त्व भी परिवर्तित होते थे।

इसी संकल्पना को ध्यान में रखते हुए प्रारम्भिक शिक्षा विभाग में कार्यों के सटीक विकेन्द्रीकरण के लिए सर्वप्रथम 'नोडल विद्यालय' की संकल्पना पर कार्य किया गया। प्रारम्भिक शिक्षा विभाग में पूरे पंचायत समिति क्षेत्र के लिए मात्र एक ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय स्थित है जिसे उस संपूर्ण क्षेत्र की लगभग 20 से 50 ग्राम पंचायतों में स्थित समस्त प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के सुसंचालन की माकूल व्यवस्था करनी होती है, कार्यरत अध्यापकों व कार्मिकों के वेतन-भत्ते, संस्थापन कार्य, अवकाश प्रकरण इत्यादि निस्तारित करने होते हैं तथा शिक्षा विभाग द्वारा समय-समय पर लाई जाने वाली योजनाओं का सम्पादन भी शीघ्रता व उत्कृष्टता से करना होता है। इस कठिन चुनौती का आसानी से सामना करने में 'नोडल विद्यालय' बखूब कारगर रहे हैं। 'नोडल विद्यालय' प्रत्येक ग्राम पंचायत पर, विद्यालयों की निश्चित संख्या पर, सहज दूरी पर या फिर अन्य किसी आधार पर नियत किये जा सकते हैं। प्रारम्भिक शिक्षा में 'नोडल विद्यालय' समस्त प्रशासनिक व्यवस्था में नींव की ईंट की तरह हैं। मैं स्वयं ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी के पद पर कार्यरत रहा हूं और मेरा यह अनुभव रहा है कि 'नोडल विद्यालय' द्वारा किया गया सटीक व समयबद्ध कार्य कितना लाभदायक व हर्षित करने वाला होता है। इस संदर्भ में एक दृष्टांत मुझे याद आता है, एक बार जिला कलेक्टर सेक्टर अधिकारियों की मासिक बैठक ले रही थीं जिसमें एक सेक्टर अधिकारी ने किसी एक विद्यालय के शौचालय के बारे में शिकायत की कि वे जब-जब भी विद्यालय में गए उन्हें शौचालय गंदगी से भरा मिला, वह विद्यालय मेरे ब्लॉक का नोडल विद्यालय था और मुझे कई बार वहां जाने का अवसर मिला था। मैं अच्छी तरह जानता था कि वहां का संस्था प्रधान बहुत सक्रिय व कर्त्तव्यनिष्ठ था और पूरे शाला भवन को साफ-सुथरा रखता था। मैंने तुरंत बैठक में बैठे-बैठे ही उसे 'व्हाट्स एप' पर संदेश भेजा कि तुरंत अपने विद्यालय के तीनों शौचालयों के फोटो खींच कर दिनांक व समय सहित वापस भेजे। उस संस्था प्रधान ने निर्देशों की अक्षरश: पालना की और मैंने मात्र पांच मिनट के अंदर-अंदर जिला कलेक्टर को सच्चाई से अवगत करवा दिया। मेरा एक कर्त्तव्यनिष्ठ कार्मिक अकारण जारी होने वाले कारण बताओ नोटिस से बच गया और यह भी पता चला कि सेक्टर अधिकारी जी ने बिना भ्रमण किए ही रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी थी।

वर्तमान परिस्थितियों में जबकि माध्यमिक शिक्षा में भी विद्यालयों की संख्या तेजी से बढ़ी है, नई-नई योजनाएं सरकार द्वारा लागू की जा रही हैं तथा शिक्षा में गुणवत्ता का विचार प्रसारित हुआ है तब यहां भी 'नोडल विद्यालय' हों ऐसा सोच बन रहा है। माध्यमिक शिक्षा में 'नोडल विद्यालय' की संकल्पना को और अधिक दृढता के साथ स्थापित करने के उद्देश्य से माध्यमिक शिक्षा विभाग की अपनी प्रथम विडियो कॉन्फ्रेन्सिंग में निदेशक श्री सुवालाल जी ने समस्त उपनिदेशक एवं जिला शिक्षा अधिकारीगण को 'नोडल विद्यालय' के गठन हेतु निर्देशित किया है। यह दौर शिक्षा के क्षेत्र में सघन परिवर्तन का दौर है, पग-पग पर परिवर्तन के निर्णय लिए जा रहे हैं। इस समय सूचनाओं का महत्व बढ़ जाता है तथा उच्च कार्यालयों से तृणमूल स्तर (Root Level) तक तथा तृणमूल स्तर (Root Level) से उच्च कार्यालय स्तर तक यह प्रवाह 'नोडल विद्यालय' के माध्यम से सहजता से, शीघ्रता से और परिशुद्धता से संभव हो सकता है। माध्यमिक शिक्षा के विद्यालयों में कार्यरत संस्था प्रधान, प्रधानाध्यापक एवं प्रधानाचार्य राजपत्रित अधिकारी हैं, प्रत्येक ब्लॉक में कुछ विद्यालय आई.सी.टी. के अंतर्गत कम्प्यूटर लैब से सज्जित हैं, अधिकांश अध्यापक नई संचार तकनीक का दैनिक जीवन में उपयोग कर रहे हैं तथा विद्यालयों में मंत्रालयिक कार्मिक भी पदस्थापित हैं इसलिए यहां 'नोडल विद्यालय' का निर्धारण तथा संचालन अधिक व अच्छे परिणाम देने वाला साबित होगा।

'नोडल विद्यालय' नियत करना पहला कदम है अत: इसके प्रति संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी गंभीर होकर स्वयं की देखरेख में यह कार्य समस्त स्थानिक परिस्थितियों के अनुरूप करें तो अच्छा प्रारम्भ हो पाएगा। कहा गया है कि अच्छी शुरुआत यानी आधी उपलब्धि (Well begun is half done)। इस चरण को यदि औपचारिक तौर से संपादित कर इतिश्री कर ली गई तों मान लें कि आपका यह 'नोडल विद्यालय' प्रोजेक्ट शुरू होने से पहले ही अवसान को प्राप्त हो जाएगा जो कि सर्वथा अनुचित व अस्वीकार्य होगा। अत: सुनिश्चित कर लें कि 'नोडल विद्यालय' वे ही हों जिनमें सक्षम संस्था प्रधान, सुव्यवस्थित कम्प्यूटर लैब, सहज व सुगम पहुंच के साधन हों। जहां कम्प्यूटर पर काम करने वाले अध्यापक या लिपिक सहजता से उपलब्ध हों।

'नोडल विद्यालय' निर्धारण के बाद विद्यालय को चाहिए कि वह अपने अधीन नियत समस्त विद्यालयों के साथ एक संचार तंत्र स्थापित करें। इसके लिए वह कम्प्यूटर लैब स्थापित समस्त विद्यालयों को ई-मेल या गूगल ग्रुप के माध्यम से जोड़ सकता है। यहां तक कि मोबाईल फोन पर भी आजकल इंटरनेट का उपयोग बहुतायत से हो रहा है। वर्तमान में संचार क्रान्ति की आंधी विश्व पटल पर छाई हुई है। बस, आवश्यकता है तो उसे सकारात्मक दिशा देने की। आज प्रत्येक मोबाइल फोन पर 'व्हाट्स एप' नाम की जो जादुई एप्लीकेशन उपलब्ध है उसका उपयोग भी 'नोडल विद्यालय' प्रभारी

द्वारा तुरंत सूचना के आदान-प्रदान के उद्देश्य से किया जा सकता है। आजकल अध्यापक बहुतायत से विभिन्न ग्रुप बनाकर 'व्हाट्स एप' का उपयोग तो कर रहे हैं पर वे दिग्भ्रमित हैं। 'नोडल विद्यालय' व सम्बद्ध समस्त विद्यालय अपना एक 'व्हाट्स एप' समूह बनाकर इसे एक दिशा प्रदान कर सकते हैं। यह सूचना के आदान-प्रदान का एक सरल एवं सटीक माध्यम साबित होगा।

इससे अगले चरण में प्राप्त सूचनाओं का वर्गीकरण कर यथोचित संधारण 'नोडल विद्यालय' द्वारा किया जाना अपेक्षित होगा। अच्छा हो कि सूचनाओं का संधारण सारिणी रूप में सॉफ्ट तथा हार्ड दोनों ही रूप में किया जावे। इस प्रकार संग्रहीत व संधारित सूचनाओं का निश्चित समयावधि के पश्चात 'अपडेशन' भी किया जाना जरूरी है जो कि एक नियमित कार्ययोजना के अंतर्गत अनवरत चलता रहे। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप विभाग के पास एक वास्तविक तथा विश्वसनीय डाटा बेस तैयार होगा जो कि वर्तमान में चल रही विभागीय योजनाओं को गति देने वाला होगा तथा आने वाली नई योजनाओं के लिए भी मजबूत आधारशिला बनाने का काम करेगा।

उक्त समस्त के अतिरिक्त एक मासिक बैठक का आयोजन भी एक सफल 'नोडल विद्यालय' संचालन के लिए अनिवार्य है। इस घोर वैज्ञानिक युग में भी आपस में मिलजुल कर एक जाजम पर बैठने से बड़ी से बड़ी गुत्थियों को सुलझते देखा गया है। 'नोडल विद्यालय' की यह व्यवस्था मूलतः एक 'टीम वर्क' है जिसमें प्रत्येक संभागी का अंशदान महत्त्वपूर्ण के साथ-साथ आवश्यक भी है। इसी प्रकार प्रत्येक 'नोडल विद्यालय' को भी अपने उच्च कार्यालय के साथ सूचनाओं के लेन-देन का सुदृढ़ नेटवर्क स्थापित करना होगा। इस प्रकार 'नोडल विद्यालय' संकल्पना के सिरे चढ़ते ही वह दिन दूर नहीं जबकि हमारा यह माध्यमिक शिक्षा विभाग जो कि आज अद्यतन जानकारी के दंश से जूझ रहा है एक सशक्त और अद्यतन विभाग बन पाएगा। आइये 'नोडल विद्यालय' की इस संकल्पना को एक चुनौती के रूप में लें और इसे अमलीजामा पहनाने में हर स्तर पर अपना सहयोग दें।

-सहायक निदेशक (सतर्कता)
माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414324303

दयानन्द सरस्वती जयन्ती

सत्यार्थ प्रकाश में सत्य का घोष

❑ डॉ. सुधीर रूपानी

आर्य समाज के प्रतिनिधि ग्रंथ सत्यार्थ-प्रकाश में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हमें लोक व्यवहार में सत्य के अनुगामी बनने की शिक्षा दी है। स्वामी जी ने न्यायाधीश के समक्ष साक्षी देने वालों को सम्बोधित करते हुए लिखा है, "हे साक्षी लोगो ! इस कार्य (मुकदमें से सम्बन्धित) में इन दोनों के परस्पर कर्मों में जो तुम जानते हो, उसे सत्य के साथ बोलो। तुम्हारी इसी कार्य में साक्षी है।"

स्वामी जी आगे फरमाते है, "जो साक्षी सत्य बोलता है। वह जन्म जन्मान्तर में उत्तम जन्म और उत्तम लोकान्तरों में जन्म को प्राप्त करके सुख भोगता है। वह इस जन्म व पर जन्म में उत्तम कीर्ति को प्राप्त होता है, क्योंकि जो वह वाणी है, वही वेदों में सत्कार और तिरस्कार का कारण बताई है। जो सत्य बोलता है, वह प्रतिष्ठित और मिथ्यावादी निन्दित होता है...।"

"...सत्य बोलने से साक्षी पवित्र होता है और सत्य बोलने से धर्म बढ़ता है। अतः सब वर्णों में साक्षियों को सदैव सत्य ही बोलना चाहिए।" महान ग्रंथ सत्यार्थ-प्रकाश में वर्णित सत्य की महिमा के उपरोक्त वृतान्त को गहराई से समझ कर हमें सत्य मार्ग का ही अनुशरण करना चाहिए।

शिक्षा विभाग में संचालित स्कूलों एवं कार्यरत शिक्षकों को सत्य के अन्वेषण एवं सत्य की स्थापना करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सत्य किताबों से पढ़ाई जाने वाली विषय वस्तु नहीं है। यह तो हमारी वाणी एवं व्यवहार में दिखाई देनी चाहिए। हाँ, जिस विषय को आप अपने आचरण में रचा-बसा दिखा देते हैं, उसको और पक्का करने के लिए पुस्तकों के दृष्यन्त उपयोगी हो सकते हैं। इस माह में स्वामी दयानन्द की जयन्ती है। हमें दयानन्दजी के बताए मार्गों में सद् व सत को अपने जीवन में भलीभांति बिठा लेना चाहिए। महात्मा गांधी, विनोबा, जयप्रकाश नारायण सहित अनेक सत्यवीरों का जीवन वृतान्त हमारे सामने है जिन्होंने सच्चाई एवं सदाचार को गले लगाया और उन्हें सदैव अपने उद्देश्य में कामयाबी मिली।

प्राथमिक शिक्षा उच्चतर शिक्षा की आधार होती है। प्राथमिक शिक्षा के दौरान छोटे-छोटे बच्चों के लिए उनके गुरुजन निर्विवाद रोलमॉडल होते हैं। वे जैसे बोलते हैं, जैसे व्यवहार करते हैं-बच्चे भी वैसा ही बनने का प्रयास करते हैं। उनके लिए माँ-बाप, भाई-बहन, दादा-दादी गलत हो सकते हैं लेकिन गुरुजन नहीं। वे उन्हें भगवान मानते हैं। उनकी छोटी-छोटी आँखों में अनन्त ब्रह्माण्ड के सपने छिपे होते हैं, शिक्षकों को उन्हें समझना चाहिए। परमात्मा ने उन्हें मन-वचन-कर्म से निर्मल-उज्ज्वल बना कर भेजा है तो यह हम शिक्षकों का फर्ज बनता है कि हम उन्हें वैसा ही रहने दें। बच्चे सत्य के पैगम्बर बनकर धरा पर आते है और हमें उन्हें सच्चाई एवं प्रामाणिकता के पथ पर निरन्तर बढ़ते रहने में सहयोग करना चाहिए। स्वामी दयानन्द सरस्वती की इस शिक्षा को बालमनों में चरितार्थ करने का काम गुरुजन ही कर सकते हैं।

सौभाग्य से हमारे देश भारत में सत्य के अनुगामी, कर्तव्य के आराधक एवं पावन अभीष्ट के साधक उत्तम गुरुजन की विरल परम्परा रही है। इस परम्परा का अनुशासन करना आज की पीढ़ी के शिक्षकों का कर्तव्य है। ऐसा करके वे राष्ट्र-समाज एवं प्रकाशान्तर से स्वयं का हित साधन कर रहे होंगे।

-प्राध्यापक (भूगोल)
आई.ए.एस.ई., बीकानेर (राजस्थान)
मो. 9001024365

जन्म दिवस विशेष

लार्ड बैडन पॉवेल : स्काउट आंदोलन के जनक

□ संजय सेंगर

इस माह विश्व भर के स्काउट्स के प्यारे लॉर्ड बैडेन पावेल-बी.पी. का जन्म दिवस है। इस प्रकृति प्रेमी सैनिक का जन्म 22 फरवरी 1857 को पैडिंगटन लण्डन में हुआ था। वे बचपन से ही साहसिक कार्यों तथा बाहरी जीवन के लिए उत्सुक रहते थे। एक स्कूली विद्यार्थी के रूप में वे अपने फुरसत के समय में जंगल के पशु-पक्षियों का पीछा किया करते, उन्हें निहारते रहते थे। आगे चलकर जब वे सेना में भर्ती हुए तो उन्हें भारत, अफ्रीका तथा कनाडा के जंगलों तथा जंगलवासियों के साथ रहने का लंबा समय मिला वहीं से उन्हें असली स्काउटिंग प्राप्त हुई। बी.पी. कहते थे "मैंने इस प्रकार के जीवन का इतना रसास्वादन किया तो मेरे देश के बालक भी इसका कुछ रस क्यों न लें ?" बस इसी विचार से स्काउटिंग का प्रादुर्भाव हुआ। विश्व के चीफ स्काउट बी.पी. ने 1907 में 'स्काउटिंग फॉर बॉयज' पुस्तक लिख अपने आप को एक क्रियात्मक भविष्यदृष्टा सिद्ध किया। प्रारम्भ में यह कालजयी रचना छः पाक्षिक भागों में जनवरी से मार्च 1908 तक प्रकाशित हुई तदन्तर मई 1908 में इसे पुस्तकाकार में प्रकाशित किया गया। यह पुस्तक स्वयं बी.पी. के हाथों से चित्रित स्काउट्स के प्रशिक्षण संबंधी पुस्तक थी, उस समय उन्हें स्वयं इस बात का स्वप्न में भी भान न था कि यह पुस्तक एक आंदोलन का प्रादुर्भाव कर देगी। इस पुस्तक के आते ही स्थान स्थान पर स्काउट पेट्रोल तथा ट्रूप्स उभरने लगे और यह केवल इंग्लैण्ड में ही नहीं हुआ बल्कि अनेक दूसरे देशों में भी आन्दोलन विकसित एवं प्रसारित होता गया।

प्रत्येक बालक-बालिका किसी न किसी विधि से अपने देश की सहायता करना चाहते हैं। ऐसा करने की एक बहुत सहज विधि है और वह यह है कि वह स्काउट या गाइड बने। सेना में स्काउट प्रायः वह सैनिक होता है जो कि अपनी बुद्धिमत्ता एवं हिम्मत के कारण चुना जाता है, जिससे वह आगे जाकर पता लगाता है कि शत्रु कहां है और कमांडर को उसके संबंध में सब

सूचनाएं लाकर देता है। परंतु युद्धकालीन स्काउट-गाइड्स के अतिरिक्त शांतिकालीन स्काउट-गाइड्स भी होते हैं, ये लोग शांतिकाल में वह कार्य करते हैं जिनके लिए वैसी ही हिम्मत व प्रत्युत्पन्नमति की आवश्यकता होती है। बी.पी. के अनुसार अच्छा स्काउट-गाईड बनने के लिए निम्न बातें जाननी चाहिए :

1. खुले में रहना-कैम्पिंग और हाइकिंग स्काउट जीवन का परम आनंद हैं।
2. वन विद्या-पशुओं एवं प्रकृति संबंधी ज्ञान को वन विद्या कहते हैं।
3. शूर वीरता-मर्यादाबद्ध वीर जग की भलाई के लिए सशक्त, स्वस्थ्य व सक्रिय हैं।
4. जीवन रक्षा-स्काउट हर समय सह प्राणी की जीवन रक्षा के लिए तत्पर रहता है।
5. सहनशीलता-प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रति सहनशीलता हर स्काउट का गुण है।
6. देशप्रेम-"मुझ से पहले मेरा देश", यह भावना प्रत्येक बच्चे में होनी चाहिए।

बी.पी. कहते थे, "हमारा जीवन नाव में बैठ कर यात्रा करने जैसा है, बचपन एक छोटी नदी में नाव चलाने के समान है, लड़कपन एक बड़ी सी झील में लेकिन युवावस्था तो खुले समुद्र में नाव चलाने के समान है जिसमें नाव को उलट देने वाली उत्ताल तरंगें भी हैं और उसे चकनाचूर कर देने वाली चलमग्न चट्टानें भी। नौजवानों को इन चट्टानों से बच कर नाव खेते हुए निर्दिष्ट स्थान तक पहुंचने की कला सिखाना ही स्काउट-गाईड्स आंदोलन का लक्ष्य है।" बी.पी. ने पांच चट्टानों की विस्तृत चर्चा की है जिनसे टकराने पर किसी भी नौजवान की जीवन नैया चकनाचूर हो सकती है, वे चट्टानें हैं-

1. Horses अर्थात जुआ या बिना परिश्रम धन कमाने की लालसा
2. Wine अर्थात नशा और अतिचार या आदतों की गुलामी
3. Women/Men अर्थात सैक्स के प्रलोभन-लम्पटता
4. Cuckoos & Humbugs अर्थात प्रवंचक - दूसरे के कंधों पर रख कर बंदूक चलाने वाले स्वार्थी लोग
5. Irreligion अर्थात नास्तिकता-किसी भी अलौकिक शक्ति या सत्ता में अविश्वास।

बी.पी. ने नौजवानों को सलाह दी कि भीड़ के आदमी मत बनो। जैसा सब करते हैं वैसा ही मैं भी करूं, यह प्रवृत्ति खतरनाक है। यह तो अपने ही व्यक्तित्व को नकारना है, हर व्यक्ति की अपनी विशिष्टता है, अपनी परिस्थितियां हैं, अपनी क्षमता और योग्यता है और अपना परिवेश है। अतः उसे अपने जीवन विकास का मार्ग स्वयं बनाना है, अनुकरण तो भेड़ प्रवृत्ति है।

बी.पी. की पत्नी ऑलेव बैडेन पावेल जिन्हें लेडी बैडेन पावेल के नाम से जाना जाता है, स्वयं गर्ल गाईड आंदोलन की चीफ थीं। वे बी.पी. के समस्त प्रवासों में बराबर कंधे से कंधा मिलाकर सहायता करती रहीं। विश्व भाईचारे का संदेश देने वाले बी.पी. जब अस्सी वर्ष के हो गए और उनकी शारीरिक शक्ति क्षीण होने लगी तो वे अपनी जीवन संगिनी के साथ अपने प्रिय देश अफ्रीका में जा कर रहने लगे तथा 08 जनवरी 1941 को केन्या में उन्होंने यह संसार छोड़ दिया। वे अपने पीछे स्काउट-गाइड्स की एक बड़ी संख्या छोड़ गए जो आज भी उनके बतलाए आदर्शों पर लगातार आगे बढ़ रही है।

-मण्डल सचिव, रा.रा.भा.स्का.व गा.
बीकानेर-मण्डल मो. 9414324303

शाला प्रांगण से

जनवरी 2015 में राज्य के विद्यालयों में नववर्ष के स्वागत के साथ-साथ विवेकानन्द जयन्ती, मकर संक्रांति, गणतंत्र दिवस मनाया गया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर प्रातः 11 बजे दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। कुछ अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किये गये। विभिन्न विद्यालयों से प्राप्त रिपोर्ट संक्षिप्त में निम्नानुसार है-

अजमेर। राजकीय आदर्श बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय रामगंज, अजमेर में स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर डॉ. (श्रीमती) चेतना उपाध्याय ने कक्षा 10 की छात्राओं को स्वनिर्मित डाक्यूमेन्ट्री फिल्म के माध्यम से उच्च माध्यमिक कक्षाओं में ऐच्छिक विषय चयन के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया। इस अवसर पर विद्यालय में विभिन्न क्षेत्रों की 50 पुस्तकों एवं कैरियर संकलन की प्रदर्शनी लगायी गई। निबंध, पत्र वाचन, पोस्टर प्रतियोगिता में छात्राओं ने भाग लिया। डॉ. उपाध्याय ने छात्राओं को ऐनिमेशन पाठ्यक्रम की जानकारी भी दी।

बीकानेर। राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान बीकानेर में कैरियर डे (युवा दिवस) स्वामी विवेकानन्द जयन्ती पर मनाया गया। इस अवसर पर शैक्षिक स्टाफ एवं विद्यार्थियों ने स्वामी जी के जीवन दर्शन व आदर्श कृतत्व वृत्तान्तों की सार्थकता पर प्रकाश डाला। श्री राकेश भटनागर प्राचार्य, डॉ. सुदेश शर्मा रीडर एवं श्री मोहनलाल चांगिड़ रीडर ने युवाशक्ति को शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों की समसामयिक समाधानों हेतु भारतीय परिस्थितियों में व्यावहारिक विकल्पों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर "कैरियर डे" पर कार्यक्रम-शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से इसके महत्व एवं औचित्य पर प्रकाश डाला। डॉ. सुदेश शर्मा ने शैक्षिक एवं व्यावसायिक कृत्य विश्लेषण में व्यक्तिगत समस्या समाधान के लिए विद्यार्थियों से संवाद स्थापित किया। इसी संस्थान में दिनांक 23 जनवरी, 2015 को स्वतंत्रता सैनानी सुभाषचन्द्र बोस की जयन्ती को मनायी गई। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने उनके विचारों से प्रेरणा लेने की बात कही। कमल नारायण आचार्य, मूलचन्द, अरशाद, ब्रह्मदेव, शंकरलाल नायक के नेतृत्व में विद्यार्थी शिवांगी तिवाड़ी, गणेशाराम, श्वेता, शिल्पा, तिकमाराम आदि ने संस्थान के सौन्दर्यीकरण हेतु साफ-सफाई की। मकर संक्रांति पर्व पर संस्थान में शिक्षाविदों एवं विद्यार्थियों ने अपने विचार मन्थन में कहा कि यह खगोशास्त्रीय, ज्योतिषीय, धार्मिक एवं वैज्ञानिक पर्व है जिसमें सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण मकर राशि में प्रवेश करता है। फलस्वरूप दिन बड़े एवं रातें छोटी होती है। राजकीय महारानी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में विवेकानन्द जयन्ती कैरियर दिवस तथा राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनायी गयी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश सारस्वत संयुक्त निदेशक (प्रशासन) माध्य. शिक्षा राजस्थान बीकानेर थे। इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला तथा उनके जीवन के विभिन्न प्रेरक प्रसंगों का उल्लेख किया। श्रीमती शबनम व्याख्याता, सुश्री रेशु गुप्ता अध्यापिका, श्री अंबनि कुमार ने विभिन्न क्षेत्रों में कैरियर की संभावनाओं को बताया। मुख्य अतिथि श्री सारस्वत ने विवेकानन्द जयन्ती एवं एनएसएस शिविर समापन समारोह को सम्मिलित रूप से राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाने को एक सुखद संयोग बताते हुए युवा शक्ति के महत्व को बताया। उन्होंने स्वामी जी के जीवन में राजस्थान के योगदान के रूप में नई जानकारियां दी जिसमें खेतड़ी नरेश द्वारा उनका विवेकानंद नामकरण, उनकी माताजी को दिया गया आर्थिक सहयोग, शिकागो में आयोजित धर्म संसद में ओजस्वी भाषण शामिल है। श्रीमती रक्षा सिंह प्रधानाचार्य ने अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

छापर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आमसर में विवेकानन्द जयन्ती कैरियर डे के रूप में में आयोजित की गयी। कार्यक्रम अध्यक्ष श्री राधेश्याम मीणा ने विद्यार्थियों को जीवन वृत्ति का मार्गदर्शन करते हुए स्वामी जी के जीवन के महत्वपूर्ण प्रसंगों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विद्यालय में आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता भवानी शंकर कोलका, देवकीनन्दन पारीक प्रथम, नंमी खिलेरी द्वितीय, उर्मिला स्वामी, बसंती शर्मा तृतीय रही। निबंध प्रतियोगिता में लक्ष्मी कोलका प्रथम, सीता कालेर, द्वितीय, नारायण कोलका तृतीय रहे।

चूरू। राजकीय गोयनका उच्च माध्यमिक विद्यालय, चूरू में दिनांक 6 जनवरी, 2015 से एन.एस.एस. शिविर का आयोजन किया गया। स्वामी विवेकानंद जयन्ती पर दिनांक 12 जनवरी, 2015 को इस शिविर का समापन हुआ। श्री सांवरमल गलोनिया अति. वि.शि.अ. ने कठिन परिश्रम, कर्तव्य के प्रति समर्पण एवं सहयोग भावना से कार्य करने का आह्वान किया। श्री कासम अली प्राचार्य ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता का संदेश दिया। शिविर में डॉ. अरुण वर्मा चर्म एवं एलर्जी रोग विशेषज्ञ ने शीतकालीन रोगों से बचाव के उपाय बताए। शिविर अवधि में अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, पत्र वाचन में चन्द्रदत्त जांगिड़ कक्षा 11 प्रथम, निबंध में अर्जुन सिंह कक्षा 12-बी प्रथम, साहित्य संकलन में मुस्कान स्वामी कक्षा 11-बी प्रथम एवं चार्ट प्रतियोगिता में कोमल शर्मा कक्षा 11-बी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

झुंझुनू। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुढ़ा बावनी में स्वामी विवेकानन्द की 153 वीं जयन्ती पर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजली अर्पित कर दीप प्रज्जवलित किया। विद्यार्थियों ने स्वामी की जीवनी पर लघु भाषण, कविता एवं नाटक प्रस्तुत किये। प्रधानाचार्य ने भारतीय संस्कृति को जीवन में आत्मसात कर व्यक्तित्व विकास करने के लिये विद्यार्थियों को प्रेरित किया।

रींगस। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एन.एस.एस के सात दिवसीय शिविर का समापन विवेकानन्द जयन्ती के अवसर पर हुआ। रा.बा.उ.मा.विद्यालय रींगस में विवेकानन्द जयन्ती पर राष्ट्रीय सेवा योजना विशेष शिविर का समापन हुआ। कार्यक्रम में पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी शेरसिंह शेखावत एवं विद्युत निगम के अधिशासी अभियंता महेन्द्र शर्मा अतिथि थे। शाला प्राचार्य बनवारी यादव ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए सभी युवाओं को हिम्मत, मेहनत एवं अनुशासन को अपनाकर आगे बढ़ने का संदेश दिया।

-सुनीता चावला
सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राज. बीकानेर
मो. 9414426063

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

शेखावाटी का हृदय स्थल है सीकर

❑ भागीरथ सिंह माहिच

राजस्थान के मरुस्थल का सिंहद्वार कहा जाने वाला शेखावाटी जनपद पूरे देश में अपनी एक अलग पहचान रखता है। अरावली पर्वत माला से परिवेष्ठित इसके दक्षिण-पूर्व भाग को कुदरत ने सचल झरनों के प्रवाह और फल-फूलों की सघनता से शृंगारित किया है तो इसके उत्तर-पश्चिमी भाग को प्रकृति ने स्वर्णिम रेत के धोरों की सौगात प्रदान की है।

शेखावाटी में उत्तराखण्ड जैसी सजलता और पर्वतीय हरियाली का वैभव है तो यहाँ की पुरानी हवेलियों में कला, संस्कृति, साहित्य और नाना प्रकार की जीवन शैली को प्रतिबिम्बित करने वाले इन्द्रधनुषी भित्ति चित्रों की नयनाभिराम झांकी भी अंकित है। यहां के भव्य राजप्रासादों के दर-ओ-दीवार जहां इतिहास के उतार-चढ़ाव की गाथाओं का बखान करते प्रतीत होते हैं वहीं कलात्मक मीनारों वाले कुओं, आकर्षक छतरियों, विशालकाय बावड़ियों, नयनाभिराम जोहड़ों व तालाबों तथा ऐतिहासिक किलों और स्मारकों में छुपा हुआ यहां का गौरवशाली अतीत स्वयं अपने आप एक अविस्मरणीय दस्तावेज के समान परिलक्षित होता है।

शेखावाटी को भारतीय सेनाओं में सर्वाधिक सैनिक भागीदारी का गौरव प्राप्त है। इस धरती के लाडलों ने मातृभूमि की रक्षार्थ बलिदान और बहादुरी के कीर्तिमान स्थापित किये हैं तो यहां के बड़े-बड़े औद्योगिक घराने आज भी देश के आर्थिक जगत की धुरी बने हुये हैं। इसी शेखावाटी का एक प्रमुख जिला है- सीकर जो गौरवपूर्ण अतीत एवं प्रगतिशील वर्तमान के समन्वित सम्मोहन से अनुप्राणित है। इस जनपद में स्थित धार्मिक आस्था केन्द्र भी न था केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान रखते हैं, अपितु इनको लेकर क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन सर्किट विकसित करने का प्रस्ताव भी है।

भौगोलिक स्थिति : सीकर जिला राजस्थान के उत्तर-पूर्वी भाग में 27.21 डिग्री से 28.12 डिग्री उत्तरी अक्षांश तथा 74.44 डिग्री से 75.25 डिग्री पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 432.31 मीटर है। इसको पूर्व में झुंझुनूं, उत्तर-पश्चिम में चूरू, दक्षिण-पश्चिम में नागौर तथा दक्षिण-पूर्व में जयपुर जिले की सीमाएं छूती हैं। जिले का उत्तर-पूर्वी कोना हरियाणा राज्य की प्रादेशिक सीमा को भी स्पर्श करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : राजस्थान गठन से पूर्व सीकर क्षेत्र तत्कालीन जयपुर राज्य का सबसे बड़ा ठिकाना था। खण्डेला के राजा बहादुर सिंह ने राव दौलत सिंह को वीरभान का बास नामक गांव उपहार के रूप में दिया था।

राव शेखाजी के वंशज राव दौलत सिंह के निधन के पश्चात उनके पुत्र शिवसिंह ने वीरभान का बास गांव को सीकर नाम प्रदान किया और इस प्रकार ये सीकर के प्रथम संस्थापक शासक कहलाए। उधर राव देवीसिंह के पश्चात् उनके पुत्र रावराजा लक्ष्मणसिंह ने संवत 1862 में बेड़ गांव की पहाड़ी पर भव्य किले का निर्माण कराया और इसकी तलहटी में लक्ष्मणगढ़ बसाया। सीकर ठिकाने के अन्तिम शासक रावराजा कल्याण सिंह थे जिन्होंने 15 जून, 1954 को अपने समस्त वैधानिक अधिकार भारत सरकार को समर्पित कर दिए। वृहद राजस्थान में विलय के पश्चात् सीकर का अस्तित्व एक पृथक जिले के रूप में अंकित हुआ।

जिले का फतेहपुर कस्बा सन् 1451 में कायमखानी नवाब फतेहखान द्वारा तथा रामगढ़ कस्बा संवत 1850 में राजराजा देवी सिंह द्वारा पोद्दार सेठों के सहयोग से बसाया गया। इसी प्रकार दांतारामगढ़ का किला संवत 1733 में गुमान सिंह लाडखानी द्वारा बनवाया गया जबकि खण्डेला भी जिले का एक प्राचीन और ऐतिहासिक कस्बा है। तत्कालीन जयपुर राज्य की नीमकाथाना तहसील भी पृथक जिला बनने के बाद सीकर में शामिल की गई।

दर्शनीय स्थल

हर्ष पर्वत : सीकर से 14 किलोमीटर दक्षिण में अरावली के 3110 फीट ऊंचे पहाड़ी शिखर पर हर्षनाथ के नाम से दसवीं शताब्दी का प्राचीन शिवालय है। ऐतिहासिक एवं वास्तुकला की दृष्टि से यह एक दर्शनीय एवं पर्यटक स्थल है।

यहां का एक शिलालेख इसके निर्माण का वर्ष 973 ई. तथा निर्माता के रूप में तत्कालीन चौहान राजा द्वितीय का नाम दर्शाता है। इस मन्दिर के खण्डहर भव्य मूर्तियों की प्रमाणिकता का बखान करते हैं। मन्दिर की कुछ मूर्तियाँअजमेर के संग्रहालय में भी रखी हुई बताते हैं। दन्तकथाओं के अनुसार त्रिपुर वध के पश्चात् देवराज इन्द्र द्वारा इस स्थान पर भगवान शिव की हर्षनाथ के रूप में आराधना व स्तुति की गई थी। हर्ष के पास स्थित देवगढ़ का किला भी ऐतिहासिकता की जीती-जागती मिसाल है।

जीणमाता : जीणमाता भी जिले का एक प्राचीन धार्मिक स्थान है। जीणमाता का स्थान सीकर से 30 कि.मी. दक्षिण में अरावली की उपत्यका में स्थिति है। प्राप्त शिलालेख के अनुसार यह स्थान दसवीं सदी का भव्य मंदिर है।

यहां चैत्र एवं आश्विन नवरात्रों में मेले लगते हैं जिनमें लाखों दर्शनार्थी उपस्थित होकर श्रद्धावान प्रकट करते है।

शाकम्भरी : सीकर से 50 किलोमीटर दूर शाकम्भरी शक्ति पीठ है। वि.स. 749 में चौहान राजा दुर्लभ राज के भतीजे तथा शिव हरि के पुत्र सिद्धराज ने शक्तदेवी (शाकम्भरी) का मण्डप बनवाया था। तीन ओर पहाड़ों से घिरी

उपत्यका में आम्रकुंजों में शाकम्भरी तथा काली माता की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं। मंदिर के पीछे सात जल कुण्डों से स्वच्छ जल धारा निरन्तर प्रवाहित होती रहती है। चैत्र व आश्विन में यहां मेला लगाता है।

खाटूश्यामजी : सीकर से 45 किलोमीटर दूर खाटू ग्राम में खाटूश्यामजी का प्रसिद्ध मंदिर है। यह मंदिर सफेद संगमरमर का बना हुआ है। यहां फाल्गुन एवं कार्तिक माह में लगने वाले मेलों में लाखों दर्शनार्थी श्रद्धावनत होते है। मंदिर से जुड़ा श्याम बगीचा एवं श्याम कुण्ड भी दर्शनीय स्थल है। यात्रियों के आवास के लिए अनेकों धर्मशालायें यहा बनी हुई हैं। खाटू ग्राम मे पुरात्तव महत्व के प्राचीन महलों के अवशेष एवं पुरानी बावड़ियां भी दर्शनीय है।

गणेश्वर : नीमकाथाना से 15 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में गणेश्वर ग्राम में प्रचीन शिवालय तथा पहाड़ में उष्ण जल का एक गोमुख से निरन्तर प्रवाही स्त्रोत है जो कुण्ड में गिरता है जहां लोग पवित्र जल से स्नान कर पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं। इस स्थल पर प्राचीन शिवालय तथा अनेक मन्दिर भी है।

प्रीतमपुरी : जिले की श्रीमाधोपुर तहसील के कांवट ग्राम से 5 किलोमीटर दूर अरावली पर्वत शृंखलाओं के बीच प्रीतमपुरी की 35 वर्ग कि.मी. में फैली प्रसिद्ध झील है। 7 किलोमीटर लम्बे 5 किलोमीटर चौड़े क्षेत्र में फैली वर्षा ऋतु के पश्चात पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बन जाती है। यहां अनेकों प्रकार के पक्षी आते हैं जिन्हें आसानी से देखा जा सकता है।

रैवासा धाम : गोरियां रेल्वे स्टेशन 4 किलोमीटर दूर अरावली पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित यह स्थान मध्य युग में चन्देल शासकों, तदन्तर राजा रायसल दरबारी के अधिकार क्षेत्र में था। पहाड़ की चोटी पर प्राचीन किला बना हुआ है। ग्राम में काले पत्थर की आकर्षक मूर्ति से प्रतिष्ठित कृष्ण का मंदिर लगभग सात सौ वर्ष पुराना है। रैवासा गांव पुराने जैन मंदिरों के कारण प्रसिद्ध है, इनमें आदिनाथ जैन मंदिर में कई खम्भे व पुराना शिलालेख भी है। इन मंदिरों में पत्थर पर किया गया कार्य दर्शनीय और सराहनीय है। एक दूसरा जैन मंदिर भी है, जो नसियां के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा यहां एक वैष्णव मंदिर भी है जिसमें प्राचीन चित्रकारी व पुराने भवन दर्शनीय है।

शक्ति पीठ-ढांढण : सीकर से 70 कि.मी. दूर चूरू जिले की सीमा पर ग्राम ढांढ़ण में एक विशाल शक्ति मंदिर है पूरा मंदिर संगमरमर के सफेद पत्थर से बना हुआ है तथा मंदिर के चारो तरफ चाँदी की मंढायी की गई है। शेखावाटी के भरतीया व बजाज सेठों ने इस माँ भवानी के मंदिर का निर्माण किया है जहां अगस्त माह में प्रतिवर्ष एक भव्य और विशाल मेला लगता है। जहां पर भारत के कोने-कोने से इन के भक्त आराधना करने के लिए आते है इस मंदिर परिसर में विशाल धर्मशालाऐं है तथा 300 वातानुकूलित कमरे बने हुए हैं तथा इनके द्वारा विद्यालय भवन, विद्यालय छात्रावास व अस्पताल आदि का निर्माण किया गया है।

गाँव का राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अपने श्रेष्ठ परीक्षा परीणाम व छात्र संख्या, छात्रावास सुविधा आदि के कारण जिले में श्रेष्ठ विद्यालयों की श्रेणी में अपनी पहचान रखता है।

सीकर : ऐसा कहा जाता है कि सीकर नगर 1687 ई. में बसाया गया था। सीकर शहर में कई प्रसिद्ध मंदिर हैं, जिनमें गोपीनाथजी व रघुनाथजी का मंदिर और बड़ा जैन मंदिर प्रमुख है। इनके अतिरिक्त हजरत शाहवली मुहम्मद चिश्ती की दरगाह भी है, जहां हर वर्ष उर्स का आयोजन किया जाता है। नगर में अनेक दर्शनीय भवन भी है, जिनमें पूर्व राजा का महल, माधोनिवास कोठी, विक्टोरिया मेमोरियल हॉल आदि हैं।

महल सीकर के भूतपूर्व रावराजा की निजी सम्पत्ति थी। यहाँ पुरातत्व महत्व के कई कलात्मक संग्रह और मूर्तियां हैं। स्व. जमनालाल बजाज की स्मृति में निर्मित बजाज मेमोरियल हॉल भी देखने योग्य है। सीकर नगर से 5 किलो मीटर दूरी पर सीकर हर्ष मार्ग पर स्थित सांवली में निजी क्षेत्र का मेडिकल कॉलेज बनाया जा रहा है, जो शेखावाटी का एक मुख्य संस्थान होगा। सांवली बहुत ही सुन्दर, शान्त और आकर्षक स्थल है। जहाँ सीकर ठिकाने के पूर्व शासकों द्वारा बनवाई गई भव्य इमारतें व बाग-बगीचे हैं, जो देखने लायक हैं।

सीकर राजस्थान में शिक्षा नगरी के नाम से विख्यात है यहां का श्री राजकीय कल्याण महाविद्यालय राजस्थान का सबसे बड़ा महाविद्यालय है जिसमें 11000 से अधिक विद्यार्थी अध्ययन कर रहे है। सीकर में पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय की स्थापना के कारण यह सीकर की एक महत्वपूर्ण पहचान बन चुकी है।

सीकर में प्रतियोगी परीक्षाओं में पी.एम.टी., ए.आई.पी.एम.टी, आई.आई.टी. ए.आई.ई.ई.ई.,शिक्षक भर्ती, सैनिक भर्ती नेवी व एयरफोर्स, पुलिस भर्ती आदि की तैयारी करने हेतु राजस्थान के विभिन्न जिलों व अन्य राज्यों के लगभग 50 हजार विद्यार्थी तैयारी कर रहे हैं।

लक्ष्मणगढ़ : सीकर से लगभग 30 किलोमीटर उत्तर में राष्ट्रीय उच्च मार्ग संख्या 11 पर स्थित लक्ष्मणगढ़ कस्बे ने हाल की अपनी स्थापना का द्वि शताब्दी समारोह मनाया है। बेड़ नामक पहाड़ी पर संवत 1862 में तत्कालीन रावराजा लक्ष्मणसिंह ने एक भव्य किले का निर्माण कराकर इस नगर को बसाया था। यहां का किला, चार चौक वाली विशाल हवेली, प्राचीन रघुनाथजी का मंदिर, मुरली मनोहर मंदिर,प्रचलित नाम डाकन्यों का मंदिर, नाथजी का आश्रम, कृष्ण वाटिका, जोहड़े, मीनारों वाले कुये तथा सेठों की पुरानी हवेलियां दर्शनीय है। हाल के वर्षो में मोदी शिक्षण संस्थान ने ही लक्ष्मणगढ़ को ख्याति दिलाई है। शिक्षा की दृष्टि से यह जिले का अग्रणी कस्बा है।

फतेहपुर : सीकर से करीब 50 किलोमीटर उत्तर में राष्ट्रीय उच्च मार्ग संख्या 11 पर स्थित फतेहपुर कस्बा एक प्राचीन स्थान है। तत्कालीन नवाब फतेहखान ने सन् 1451 में इस कस्बे को बसाकर इसे अपनी राजधानी बनाया था।

नवाबी काल का किला, बावड़ी, तेलण महल आदि खण्डहर हो चुके हैं किन्तु फतेहपुर की पुरानी व विशालकाय हवेलियों का वैभव आज भी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। लक्ष्मीनाथजी का मंदिर, जैन मंदिर, अमृतनाथजी का आश्रम, बुधगिरिजी की मंढ़ी, छतरियां आदि भी दर्शनीय है। फतेहपुर का सरस्वती पुस्तकालय प्राचीन पुस्तकों का पाण्डुलिपियों की धरोहर के कारण विख्यात है।

रामगढ़ शेखावाटी : सीकर से लगभग

70 कि.मी. उत्तर में तथा चूरू जिला मुख्यालय से करीब 15 कि.मी. दक्षिण में स्थित रामगढ़ शेखावाटी को रावराजा देवीसिंह ने पोद्दार सेठों के सहयोग से संवत् 1850 में बसाया था। यहा पोद्दार छतरियां, शनिदेव मंदिर, गोयनका छतरियां, दुर्गा मंदिर तथा सेठों की प्राचीन हवेलियों का वैभव दर्शनीय है। रामगढ़ यहां के सेठ साहूकार व विशाल हवेलियों के कारण जाना जाता है।

खण्डेला : अरावली पर्वत मालाओं के बीच स्थित सीकर जिले का खण्डेला कस्बा एक प्राचीन स्थान है। यहां बड़ापाना व छोटापाना किला, मंदिर, बावड़ियों आदि देखने लायक है। खण्डेला का गोटा उद्योग किसी जमाने में एक समृद्ध कुटीर उद्योग था। आज भी यह उद्योग कुछ परिवारों की आजीविका का आधार है।

इनके अलावा जिले के दांतारामगढ़, रघुनाथगढ़, खाचरियावास, अजीतगढ़, महरौली, नेछवा, पचार, श्रीमाधोपुर, रींगस, लोसल, खूड़, बलारा आदि गांव व कस्बे भी अपनी विशिष्टता रखते हैं।

शहीद स्मारक : वीर प्रसूता शेखावाटी के सीकर शहर के मध्य से गुजर रहे आगरा-बीकानेर राष्ट्रीय राजमार्ग 11 पर अमर शहीदों की याद में शहीद स्मारक का निर्माण कराया गया है जो दर्शनीय है।

राजकीय शेखावाटी संग्रहालय : जिला मुख्यालय पर बड़ा तालाब परिसर में एक भव्य भवन में स्थित राजकीय संग्रहालय में शेखावाटी की पुरा सामग्री संग्रहित की गई है। यह पुरातात्विक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस संग्रहालय में आदिमानव के विकास क्रम को फोटोग्राफ्स के माध्यम से तथा पूर्व सिन्धु सभ्यता की क्रीड़ा स्थली गणेश्वर (ई.पू.) से उत्खनित सामग्री रखी गई है।

कला एवं संस्कृति : शेखावाटी का इतिहास न केवल यहां के रण-बांकुरो की शोर्य गाथाओं से ओत-प्रोत रहा है बल्कि कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी यहां के ओजस्वी रचनाकारों ने सोने पर सुहागा वाला कार्य किया है। शेखावाटी की माटी में पल-बढ़कर अनेक इतिहास वेताओं ने यहां के इतिहास का लेखन कर समाज को समर्पित किया है। इसी प्रकार स्व नाम धन्य यहां के साहित्यकारों, कवियों व लेखकों ने भी अपनी रचना धर्मिता के माध्यम से यहां की माटी की गंध को परवान चढ़ाया है।

शेखावाटी में होली पर आयोजित होने वाले चंग और गिन्दड़ नृत्यों ने इस जनपद की लोक संस्कृति को पंख प्रदान किये हैं। इन लोक नृत्यों की स्वर लहरियों में जहां आंचलिक जन जीवन का अमृत माधुर्य घुला हुआ है वहीं भोपा-भोपी गायन, बांसुरी व अलगोजों के स्वर तथा सामाजिक उत्सवों पर महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले गीतों में यहा की समृद्ध लोक परम्पराओं का प्रतिबिम्ब झलकता है।

सीकर जिले में ढांढ़ण, खाटूश्यामजी और जीणमाता के लक्खी मेलों के अलावा विभिन्न देवी-देवताओं के मेले भी आयोजित होते हैं जिनमें लोगों की श्रद्धा व उत्साह देखते ही बनता है। (खाटूश्यामजी मंदिर के बारे में कृपया अंतिम पृष्ठ का भी अवलोकन करें) सीकर जिले और शेखावाटी की लोक संस्कृति में लोकानुरंजन के साथ-साथ लोक परम्पराओं और जनजीवन की वास्तविकता के दर्शन होते हैं। अनेकता में एकता की नायाब मिसाल शेखावाटी की संस्कृति में हमेशा देखने को मिलता है। शेखावाटी की कला व संस्कृति आधुनिक परिवर्तन के दौर में भी अपनी पहचान कायम रखे हुए है। कला और संस्कृति से भरपूर इस अनूठी व बेजोड़ लोक संस्कृति को अक्षुण बनाये रखने की दिशा में सभी स्तरों पर सतत प्रयासों की आवश्यकता है।

-प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., ढांढण (सीकर)
मो. 9887465041

माह : फरवरी, 2015

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठक्रमांक	पाठ का नाम
2.2.2015	सोमवार	जोधपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	7	अपने रिश्ते अपनी खुशियां
3.2.2015	मंगलवार	उदयपुर	10	परीक्षामाला		गणित
4.2.2015	बुधवार	बीकानेर	4	पर्यावरण अध्ययन	17	कचरे का निपटारा
9.2.2015	सोमवार	जयपुर	8	विज्ञान	10	किशोरावस्था की ओर
10.2.2015	मंगलवार	जोधपुर	8	हिन्दी	17	वीर कुँवरसिंह
11.2.2015	बुधवार	उदयपुर	8	परीक्षामाला		अंग्रेजी
12.2.2015	गुरुवार	बीकानेर	8	सामाजिक विज्ञान	21	राष्ट्रीय आंदोलन
13.2.2015	शुक्रवार	जयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	18	पानी के अजब गजब करतब
14.2.2015	शनिवार	जोधपुर		गैर पाठ्यक्रम		स्वामी दयानन्द सरस्वती
16.2.2015	सोमवार	उदयपुर	8	परीक्षामाला		संस्कृत
18.2.2015	बुधवार	बीकानेर	5	पर्यावरण अध्ययन	21	कैसे चलाएं गाड़ी
19.2.2015	गुरुवार	जयपुर		गैर पाठ्यक्रम		आजादी के दीवाने शिवाजी
20.2.2015	शुक्रवार	जोधपुर		गैर पाठ्यक्रम		स्वच्छता और स्वास्थ्य
21.2.2015	शनिवार	उदयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	17	1857 का विप्लव
23.2.2015	सोमवार	बीकानेर	8	सामाजिक विज्ञान	21	राष्ट्रीय आंदोलन
24.2.2015	मंगलवार	जयपुर		गैर पाठ्यक्रम		साहित्य का जीवन में महत्व
25.2.2015	बुधवार	जोधपुर		गैर पाठ्यक्रम		व्यक्तित्व और सफलता
26.2.2015	गुरुवार	उदयपुर		गैर पाठ्यक्रम		हमारे महान वैज्ञानिक डॉ. सी.वी.रमन
27.2.2015	शुक्रवार	जयपुर		गैर पाठ्यक्रम		आजादी के दीवाने चन्द्रशेखर आजाद
28.2.2015	शनिवार	जयपुर		गैर पाठ्यक्रम		विज्ञान का जीवन में महत्व

प्रार्थना के स्वर

गत माह बसंत पंचमी के अवसर पर हमने विद्यालयों में माँ सरस्वती की पूजा-अर्चना कर विद्या का वर विद्या की देवी से मांगा। विद्यालयों में माँ सरस्वती के मंदिर बने, जिनमें सुशोभित माँ की प्रतिमा हम, शिक्षक-शिक्षार्थियों को प्रेरणा व आशीर्वाद प्रदान करें। आईए, एक पहल कर विद्यालयों में माँ शारदा के मंदिर स्थापित करें। स्थापित मंदिरों की सूचना हमें भिजवाएं। शिविरा में इन्हें स्थान देकर हमें प्रसन्नता होगी। —वरिष्ठ संपादक

ईश्वर तुझे हैं कहते भगवान नाम तेरा,
हर शास्त्र-शास्त्र तेरी प्रभु ओम नाम तेरा।

फूलों का तू है माली प्राणों का तू है हाली,
साथी जमीं है तेरी प्रभु आसमान तेरा,
हर शास्त्र-शास्त्र तेरी प्रभु ओम नाम तेरा।

वेदों में तू लिखा है, पुराणों में तू छिपा है,
गीता पुकारती है, प्रभु ओम नाम तेरा,
हर शास्त्र-शास्त्र तेरी प्रभु ओम नाम तेरा।

अपना तू मेरे घर ये घर-घर बनाके बोलें,
मन्दिर सा घर ये मेरा जिसमें निवास तेरा,
हर शास्त्र-शास्त्र तेरी प्रभु ओम नाम तेरा।

ईश्वर तुझे हैं कहते भगवान नाम तेरा,
हर शास्त्र-शास्त्र तेरी प्रभु ओम नाम तेरा।

सौजन्य :
डॉ. भवानी शंकर व्यास, नोहर
मो. 9413568646

पुस्तक समीक्षा

राजस्थानी लोक संस्कृति के विविध आयाम

लेखक : डॉ. बसन्ती हर्ष प्रकाशक : हर्ष प्रकाशन, सार्दुल कॉलोनी, बीकानेर संस्करण : 2014 पृष्ठ सं. : 250 मूल्य : ₹300.00

भारत भू-भाग की प्रशंसा में कहा गया है कि-'गायन्ति देवा किल गीत कानि, धन्यास्तु ये भारत भूमि भागे।' इस देश में ज्ञान और संस्कृति अपने चरमोत्कर्ष पर रही। इनका प्रसार जन-जन तक हुआ। यही कारण रहा कि जिस विधा के द्वारा व्यक्तियों में मानवीय मूल्यों का संवर्धन हो सके, उन्हें अधिकाधिक प्रचारित किया गया, जिससे व्यक्ति पूर्ण रूप से सामाजिक जीवन का आनन्द ले सके। यह प्रक्रिया अनवरत रूप से हमारे देश के प्रत्येक प्रदेशों में रही जो आज भी अपनी 'लोक संस्कृति' के रूप में पहचान बनाये हुए हैं।

इसी क्रम में 'राजस्थानी लोक संस्कृति' भी एक समृद्ध रूप से अपनी विविध विधाओं के द्वारा एक श्रेष्ठ पहिचान बनाये हुए हैं। राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले समारोह में जब राजस्थानी लोक गीतों, लोक संगीत या लोक नृत्य की प्रस्तुतियां होती है तो दर्शक व श्रोता मुग्ध हो जाते हैं। तब जिज्ञासा उत्पन्न होती है, इनके बारे में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करने की। राजस्थानी लोक संस्कृति की विभिन्न विधाओं पर अनेक पुस्तकों का लेखन हुआ है, परन्तु समीक्ष्य पुस्तक 'राजस्थान संस्कृति के विविध आयाम' की लेखिका डॉ. बसन्ती हर्ष द्वारा अपने कुशल लेखन क्षमता के द्वारा लोक संस्कृति की लगभग सभी विधाओं यथा-लोक पर्व, लोक साहित्य, लोक गीत, लोक वाद्य, लोक संगीत, लोक नृत्य, लोक गाथाएं, लोक कहावतें, लोक पहेलियां, लोक आभूषण और लोक कलाकृतियां पर सविस्तारपूर्वक लेखन किया है, वह सुधि पाठकों को 'राजस्थानी लोक संस्कृति' के बारे में पूर्णरूपेण परिचय करवाने में पर्याप्त है।

उक्त पुस्तक में डॉ. हर्ष ने 'लोक गीत' के सन्दर्भ में सर्वाधिक विस्तारपूर्वक लेखन किया है जो 'लोक गीत' के बारे में सम्पूर्ण जानकारी देने वाला है। यथा-लोक गीतों की उत्पति सम्बन्धी विभिन्न मत, लोक गीतों का जन्म, लोक गीतों के भेद, लोक गीतों में रस दृष्टि, लोक गीतों के भावपूर्ण अभिनय तथा लोक गीतों की श्रेणियां आदि प्रमुख है।

डॉ. हर्ष ने देवी-देवताओं से सम्बन्धित लोक गीतों के साथ-साथ भारतीय संस्कृति में उल्लेखित संस्कारों से सम्बन्धित गीत भी पुस्तक में वर्णित किये हैं। गीतों से सम्बन्धित क्षेत्र की संस्कृति का सहज ही में अहसास होता है। समीक्ष्य पुस्तक में सम्मिलित गीतों में एक शैक्षिक भाव निहित है, जिसके द्वारा हम जीवन का संरक्षण करने के साथ-साथ सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने में भी सक्षम बन सकते हैं, यथा-गर्भाधान संस्कार से जुड़े गीत में गर्भवती स्त्री को प्रथम माह से नवम माह तक उसके खान-पान, रहन-सहन कैसे हो को वर्णित किया गया है। इसी प्रकार अन्य संस्कारों से जुड़े गीतों का वर्णन किया गया। अत: नि:सन्देह ये गीत हमारे लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाने वाले है। यह सत्य है कि कोई भी संस्कृति स्वत: स्फूर्त नहीं होती है। समय-समय पर उसे संस्कर्ता के रूप में व्यक्तियों या साहित्य के द्वारा संस्काररूपी ऊर्जा प्राप्त होती रहनी चाहिए। शायद इसी चिन्तन के साथ डॉ. हर्ष ने जैन साहित्य, सन्त परम्परा और सन्त नारियों के बारे में विस्तृत लेखन पुस्तक में किया है, जो प्रासंगिक है।

पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में डॉ. हर्ष ने जिन विषयों का विवेचन किया है, उनमें प्रसंगवश किसी अन्य पुस्तक के अंश को उद्धृत किया है तो उसका विवरण भी अंकित किया है। अत: यह पुस्तक जहां एक ओर शोधार्थियों के लिए उपयोगी है वहीं इसमें सम्मिलित किये गये बिन्दु लोक वाद्य, लोक नृत्य और लोक आभूषण का विवरण प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले प्रतियोगियों के लिए जानकारी प्राप्त करने में सुलभ है। अत: पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। इसका मुद्रण शुद्ध व सुन्दर है। भाषा सरल व विद्वतापूर्ण है। आवरण शीर्षक के अनुरूप सुन्दर व आकर्षक है। मूल्य उचित है।

—अंशु प्रभा श्रीमाली
जस्सूसर गेट रोड, धर्मकांटे के पास, बीकानेर

मूंघी वैश्विक कहाणियां

राजस्थानी अनुवादकः पुष्पलता कश्यप **प्रकाशक :** नारवाल प्रकाशन, विष्णु वस्त्र भंडार के पास, मेन मार्केट, पिलानी **संस्करण :** 2014 **पृ. सं. :** 176 **मूल्य :** ₹ 300.00

समीक्ष्य कहानी- संकलन 'मूंघी वैश्विक कहाणियां' में कुल तीस कहानियां संग्रहित हैं। ये कहानियां भिन्न-भिन्न परिवेश एवं भौगोलिक परिस्थितियों में मानवीय स्वभाव, उसके चरित्र एवं जीवन उद्देश्य से साक्षात्कार कराती हैं। इनमें मैक्सिम गोर्की, लियो टॉल्सटाय, मोपांसा, ऑस्कर वाइल्ड, पर्ल.एस.वक, हरमन हेंस, लेजर लॉस्ट, कारेल चापेक, इतालो काल्विनो, आरहान पामुक, नूरा अलगादमी, त्वा हुसैन, हुसैन उल कबानी, फरह नाज शरीफी, रिजा जोलई, यासुनारी कावाबाती, बजोरन स्टोन, बजोरनसन, अलतोज स्टेन, जीरोम वेडमन, वॉशिगंटन इरविंग, जैक कोप, पीटर स्क्रीवन, अेच.जी. वेल्स, हेक्टर ह्यू मुनरो 'साकी', जॉन नेरूदा, लेजर लास्ट इत्यादि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

प्रस्तुत कहानी-संकलन में लेखिका का पूर्वोवाक 'साहित्य लेखन में अनुसिरजण रौ महतव' साहित्य के पाठकों और अनुवादकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस आलेख में लेखिका ने अनुवाद कर्म के दायित्व, उसके शिल्प एवं शैली आदि विषयक बहुत उपयोगी बातों का उल्लेख हुआ है। अनुवाद कर्म एक तरह से परकाया-प्रवेश है, इस तथ्यात्मक बात को लेखिका ने भली-भाँति प्रतिपादित किया है। रसूल हमजातोव 'मेरा दागिस्तान' से मातृभाषा की बात उठाते हुए पुष्पलता जी कहती हैं कि कई दफे अनुवादक मूल को इस कदर बिगाड़ देते हैं कि उसके असली चेहरे की पहचान ही खो जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि न तो विचारों और तथ्यों के साथ छेड़छाड की जानी चाहिये और न ही शैली व शिल्प में ही अनुचित घालमेल। इस प्रकार श्रीमती कश्यप अनुवाद कर्म के सबल पक्षों को हमारे सम्मुख रखती हैं।

संकलित अनूदित कहानियों में उदात्त मानवीय भावनाओं और विचारों के नानाविध रूप मिलते हैं। म. गोकी की कहानी 'कोलुशा' अभावों में बच्चे के संवेदनशील मन की पीड़ा को अभिव्यक्त करती है, जो मृत्यु के मुंह में जाकर भी अपने परिवारजनों को सुखी जीवन देने की कामना रखता है। टॉल्सटॉय की नैतिक कथा 'तीन सवाल' सेवा, करुणा और श्रम के महत्व को रेखांकित करती है। मोपांसो की कहानी 'फ्रासिस' संयोगिक घटनाओं एवं जानवरों से प्रेम करने वाले ऐसे मनुष्य की कहानी है जो अपनी कृतियों के मोह में विक्षिप्त होने की अवस्थाओं तक पहुंच जाता है। मोपासां की ही एक और कहानी 'फेरूसुबै हुयी' स्त्री-पुरुष के बीच के प्रेम और उनकी मनःस्थितियों की विवेचना करती है। हतालों काल्विनों की कहानी 'अेक नारी दो मिनख' सांकेतिक रूप में समाज के विकास में नैतिकता और भ्रष्टाचार के रूपों का दिग्दर्शन कराती है। लेजर मास्टर की कहानी 'वहम' स्त्री के अफवाही मनोविज्ञान का विश्लेषण करती है। 'संगीत-कंडक्टर री कहाणी' में लेखक कारेल चापेक का व्यक्त मन्तव्य है कि एक संगीतज्ञ जो दिन-रात संगीत की धुनों की पहचान करता है, एक स्त्री पुरुष को रात के समय झगड़ते देख एक हत्याकाण्ड का आभास पाता है, जबकि वह उनकी भाषा से अनभिज्ञ होता है। और सुबह के अखबार में हत्या की खबर पढ़ने को मिलती है। कार्ल चापेक की ही कहानी 'चढ़ाय देवौ इणनै सूली माथै' में प्रेम, सेवा और करुणा की बातें करने वाले मनुष्य को कारोबारी-संसारी मानव समाज सूली पर चढ़ाने की ताईद करता है। जान नेरूदा की 'वैंपायर' अेक चित्रकार को मरने वाले व्यक्ति का पूर्वाभास होने की कहानी है। चित्रकार ऐसे व्यक्ति का पोर्टेट बनाता है। ऑस्कर वाइल्ड की कहानियां 'बेलीपौ', 'बुलबुल अर गुलाब' तथा 'सुखी राजा' मानवीय करुणा और स्वार्थवृत्ति इन दो रूपों के द्वन्द्व को रूपायित करती है। 'साबुण री टिकिया' का लेखक 'साकी' मनुष्य की अंदरूनी वृत्तियों को उघाड़ते कहती है कि वह होशियारी बरतते हुए भी ठगा जाता है। 'माँ' पर्ल अेस बक' की ऐसी कहानी है जो चीनी क्रांति के पीछे की अमानवीय जोर-जबरदस्ती, जुल्मों और ममतामयी मां की विडंबनाओं के कारुणिक, चित्र खींचती है। अेच.जी. वेल्स की 'आंधा में काणौ राजा' एक प्रतीकात्मक कहानी है जिस में 'सूझने' से अभिप्राय ज्ञान से है। 'कठपुतलियों कदै ई बूढ़ी नीं हुवै' कहानी (पीटर स्क्रीवन) स्मृतियों एवं सपनों के बारे में पाठकों से संवाद करती चलती है। वॉशिंगटन इरविंग की कहानी 'जदै मन मिलै' इतिहास और जादुई यथार्थ की तिलिस्मी कथा है। 'म्हैर' कथाकार हरमन हेस की जीवन के बदलते स्वरूपों को उकेरती कहानी है। जीरोम वेडमन की कहानी 'जीसा' बुढ़ापे की मनःस्थिति को सामने लाती है। अलतोज स्टेन की कहानी 'नौकरी' पूंजीवादी मानसिकता के एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसके लिए संबंधों का कोई अर्थ नहीं रह गया है। बजोरन स्टेन की 'बापूसा' सांसारिक सच और सुख-दुख एवं जीवन की पीड़ा को अभिव्यक्ति देती है। या सुनारी कावा बाती की कहानी 'पुररजलम' युद्ध के मनोविज्ञान को बयान करती है। रिजा गिलाई की कहानी 'ओलयुवां रौ छेहड़ौ' प्यार की स्मृतियों की कहानी है। हुसैन उल कबानी की 'इण रमजान में' आध्यात्मिक पवित्रता की कहानी है, जिसके अन्तर्गत मनुष्य में अंदरूनी बदलाव आते हैं। नूरा अलगामदी की कहानी 'अेक फाख्ता है लुगाई' नारी जाति एवं नारी-जूण की पीड़ाओं को दस्तावेज है। त्वा हुसैन की कहानी 'दरद रो रिस्तौ' स्त्री के रिश्तों की कहानी है। इतालो काल्विनो की कहानी 'पइसौ सै कीं कर सकै' में लोक-कथानुमा चतुराई मुखर होती है। इस प्रकार सभी संकलित कहानियां मानव जीवन, उसके मनोविज्ञान, मनुष्य की भावनाओं और उसकी चिंताओं का समग्र रूप में लेखा-जोखा करती हैं।

-डॉ. आईदानसिंह भाटी
82-बी/47, तिरुपति नगर, नांदड़ी, जोधपुर

मरदजात अर दूजी कहाणियां

लेखक : बुलाकी शर्मा, **प्रकाशक :** ऋचा (इण्डिया) पब्लिशर्स, बीकानेर , **संस्करण :** 2013 **पृष्ठ सं. :** 88 **मूल्य :** ₹ 150.00

कहानी पराये दुख से उपजी सहानुभूति की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति है जहां लेखक उसका संभागी होते हुए एक दूरी रखता है, कहीं अपने दुख-दर्द को भी इसमें समेट लेता है पर एक हाथ की दूरी रखते हुए। भाषा के अमल से उसकी आपबीती भी जगबीती लगती है और जग-बीती आप बीती। यह रचनाकार के सृजनात्मक कौशल पर निर्भर करता हैं। बुलाकी शर्मा हिन्दी राजस्थानी के ऐसे ही कथाकार-व्यंग्यकार हैं जो अपने कौशल से आपबीती को जगबीती सा बना देते हैं। पाठक अचंभित होकर रह जाता है। उनका राजस्थानी का सद्यः प्रकाशित कहानी संग्रह ''मरदजात अर दूजी कहाणियां'' इसका सटीक उदाहरण है। शुरूआत तो वे अपने घर से करते हैं लेकिन कथा रचाव ऐसे करते हैं गोया वे घर-घर की कहानी

कह रहे हैं। उनकी कहानियों में वह सब है जो घर-घर में है और जो नहीं है वह किसी घर में नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि बुलाकी शर्मा की कहानियां में जो है वही संसार के हर-घर-परिवार में है। उसके बाहर कुछ भी नहीं है।

कहानीकार बुलाकी शर्मा मानव मन की तह तक पहुंचने वाले रचनाकार हैं। उन्हें भारती मध्यम, निम्न मध्यम वर्ग के सामाजिक मनोविज्ञान का काफी अनुभव है क्योंकि उनका वर्ग-चरित्र भी वहीं हैं। उन्हीं के अनुसार वे पात्रों का सृजन करते हैं। उनके पात्र वर्गच्युत भी नहीं होते हैं। वे आगे-पीछे एक समापन मोड़ पर आकर रूक जाती हैं, या किसी नये पथ की तलाश में तड़पने लगती है जैसे ''अगोतर सारू'' का नायक या ''डायरी'' की नायिका। ''मरदजात अर दूजी कहाणियां'' संग्रह मे कुल 14 कथाएं हैं और सारी कथाएं मध्य या निम्न मध्य वर्ग के परिवारों के अन्तर्विरोधों को उजागर करती है। पात्र अपनी स्थिति-परिस्थितियों से जूझते हुए अपना कोई न कोई हल निकाल लेते हैं तथा प्रचलित रीति-रिवाजों तथा धार्मिक आडम्बरों को बेपर्दा किया गया है जैसे 'खणसू बंध्योड़ों' या 'ऐब' कहानी में हैं।

बुलाकी शर्मा की सभी कहानियां 'मैं' से शुरू होती है और हम पर खत्म होते-होते फिर 'मैं' पर लौट आती है। कहानियों में कथा नायक 'मैं' के बहाने खुद ही हैं लेकिन दुख दर्द जहान का है। हां महिलाओं की बात कहते वे सचेत रहते हैं। थोड़ा सा भी खतरा देखते ही वे अपनी जोड़ायत (धर्मपत्नी) को ढाल के रूप में सामने लेकर आते हैं।

हर भारतीय पुरुष की तरह वे धर्मपत्नी से सदैव भयभीत रहते हैं और साथ ही अद्भुत प्रेम भी करते हैं। बुलाकी शर्मा का कथाकार स्त्री-जाति के प्रति ज्यादा संवेदनशील है। स्त्री के दर्द और डर को वे बखूबी पहचानते हैं जिसे 'मरदजात' कहानी से अच्छी तरह समझा जा सकता है। सुगनी बुआ एक अत्यंत ही सुन्दर होर सुशील महिला है जिसे हालात ने दबंग और बदजबान बना दिया है। वह हर अन्याय का जिस तरह विरोध करती है उसे देखकर उनके दब्बूपन की कोई उम्मीद नहीं कर सकता लेकिन अपने सामने एक नौजवान के यह कहने पर 'अबै थै चुप करो भुआ... मूंढ़ै सूं आवळ-कावळ बोलता की लाज कर्‌या करो....लुगाई रै मूंढ़ै गाळियां चोखी लागै?... जाणै थै अेक ई हो, म्हैं जाणे मरग्या... बाई सागे म्हे जास्यां। लुगाया जावंती चौखी कोनी लागै..... कथानायक के सुपुत्र त्रिभुवन की ऐसी बाणी सुन सुगनी भुआ सकपका गई। उसे लगा एक मर्द तो है जिसका डर उन्हें डराता है वह सकुचा कर घर में घुस गई। यद्यपि वह चाहती तो उस लड़की के ससुराल वालों से लड़ने ला सकती थी लेकिन मर्द का डर उसे डरा गया। उसके भीतर ही पुरानी स्त्री जाग गई। उसका संस्कारी मन जो मर्द के डर से डरा-डरा रहता था अब फिर से वैसा ही होता नजर आता है। यही कथाकार की खूबी है। सुगनी भुआ का ये आंतरिक परिवर्तन जिस कलात्मक ढंग से किया है वह पाठक को अचंभित कर देता है। उसी तरह 'घाव' कहानी की दुखयारी माँ है। अपने नवजात शिशु के सहारे पेट की आग बुझाने का प्रयास करती है लेकिन लोग उसको गलत अर्थ लगाते है। मर्द तो औरत की देह ही देखता है उसके मन की पीड़ा को नही। तभी तो वह कहती है 'माथै रो घाव तो म्हैं गरम परणी सूं धोयर रेत लगार ठीक कर लेसूँ पण पेट रो खाडो तो इण रो दूध सूंई भरीज सी (पेज 25)' फिर भी मदद करने वाले मर्द उसकी देह ही देखते रहे।

बुलाकी शर्मा के कहानीकार पर हमेशा उनका व्यंग्यकार हावी रहता है। मूलतः वे हैं तो व्यंग्यकार ही। मानवीय स्थितियों और मनोभावों का चित्रण करते करते वे मनुष्य के स्वभाव तंज करना नहीं भूलते फिर चाहे सामने 'अमोलख भाईसा' हो या 'खण सूं बंध्योड़ा' नवयुवक लेखक। वे व्यंग्य करने के 'खण' से बंधे हुए है। अतः हर कहानी में वे पात्रों के माध्यम से 'कुचरणी' करते ही रहते हैं। फिर चाहे ''अगाऊ चिंता'' के बुजुर्ग हों या 'मुगती कद' कहानी का भोला-भाला नायक जो बचपन की एक घटना से अब तक मुक्त नहीं हो पाया है। पतंग उड़ाने तथा न उड़ाने की बहस में कितने ही व्यंग्य बाण इस कहानी में छोड़े गये हैं लेकिन बावजूद इसके यह एक अत्यंत संवदेना वाली कथा है।

बुलाकी शर्मा राजस्थानी भाषा के प्रति संवेदनशील हैं। वे मिली-जुली राजस्थानी नहीं लिखते बल्कि लोक जीवन में व्यवहार में होने वाली भाषा उनकी कहानियो में मिलती है। 'मुगदी कद' तथा 'ऐब' कहानी में इसे देखा जा सकता है। इसी प्रकार बाल मनोविज्ञान को लेकर भी वे कहानियां लिखते रहे हैं। ''चिड़िया घर'' में बच्चों के मनोभावों को अच्छी तरह से प्रस्तुत करते हुए 'मनीप्लांट' के प्रति मम्मी-पापा के लगाव के पीछे उनकी अर्थलोलुप मनोवृत्ति को उजागर किया गया है। इस संग्रह ने राजस्थानी भाषा का मान ही नहीं बढ़ाया है पाठक को गौरवान्वित भी किया है। कहानीकार बुलाकी शर्मा इस हेतु बधाई के हकदार हैं।

-सरल विशारद

हमालों की बारी, बीकानेर

ऊर्मिला (उपन्यास)

लेखक : सत्यनारायण इन्दौरिया 'सत्य' **प्रकाशक :** ज्योति पब्लिकेशन्स, बीकानेर **संस्करण :** 2014 **पृ.सं. :** 106 **मूल्य :** ₹ 200.00

'ऊर्मिला' हिन्दी साहित्य का अनूठा उपन्यास है। सत्यनारायण इन्दौरिया द्वारा लिखित यह उपन्यास मानव हृदय को सन्मार्ग की ओर उत्प्रेरित करता है तथा पाठक को दिशा-बोध प्रदान करने वाला है। इसमें भारतीय सनातन आदर्श जीवन की भावाभिव्यक्ति सन्निहित तथा आर्यवाङमय के शाश्वत सत्य नैष्ठिक भाव-विचारों की सम्यक् अभिव्यक्ति समाहित है।

श्री रामानुज लक्ष्मण की धर्मपत्नी ऊर्मिला के जीवन दर्शन की प्रत्यक्ष सत्यानुभूतियों का सारगर्भित विवेचन इसमें दृष्टव्य है। श्रीराम-सीता तथा लक्ष्मण के वनवास काल की अवधि में अयोध्या के राजमहल में महारानी कौशल्या, रानी सुमित्रा व रानी कैकेयी के साथ ऊर्मिला, माण्डवी और श्रुतकीर्ति के आदर्श जीवन की झाँकी इसमें प्रतिबिम्बित होती है। उपन्यास पाठक हृदय का भावोद्रेक कर अन्तःस्थल को आह्लादित करते हुए उन्हें आदर्श जीवन जीने की कला से अवगत कराता है। भाषा शैली एवं भाव गाम्भीर्य की दृष्टि से यह उपन्यास उत्तम, पठनीय तथा प्रशंसनीय है।

-वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी

श्री आयुर्वेद भवन, रतनगढ़-331022

तात्पर्य

लेखक : कुन्दन माली **प्रकाशक :** मरुवाणी प्रकाशन, जोधपुर **संस्करण :** 2013 **पृ. सं. :** 122 **मूल्य :** ₹ 150.00

'तात्पर्य' वरिष्ठ कवि-आलोचक कुंदन माली की आलोचना विधा की नई किताब का नाम है, जो गत दिनों मरुवाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। 'सर्जन का अंतरंग' एवं वस्तुतः

के बाद आलोचना विधा में यह उनकी तीसरी पुस्तक है, जिसमें संकलित कुल सोलह आलेखों में समकालीन हिन्दी कविता के रूप-रंग का गहनता से जायजा लिया गया है।

कुंदन माली स्वयं कवि हैं और एक कवि कविता की तासीर को बेहतर जान-समझ सकता है। ज्ञातव्य है कि आज के अर्थकेन्द्रित मशीनी युग में कविता के लिए लम्बा चौड़ा 'स्पेस' नज़र नहीं आता है। सोशल नेटवर्किंग से सम्पर्कों में तो इजाफा हुआ है मगर सरोकारों का दायरा संकुचित होता जा रहा है। संक्रमण के इस दौर में कविता के समक्ष दोहरी चुनौतियां हैं- अपनी प्रासंगिकता को बचाए रखना और मानवीय संवेदना की धारा को सूखने से बचाना।

'कविता मनुष्य के आस-पास है' शीर्षक से किताब के पहले ही आलेख में माली लिखते हैं, 'वर्तमान में जो कविता आ रही है, वह आश्वस्त करने वाली इसलिए है क्योंकि उसमें संवेदना की पारदर्शिता, सहजता, सरलता और पाठक को बांध लेने वाले आत्मीयता के तत्वों का स्वाभाविक समावेश है। जीवन की जटिलता को वह अत्यन्त सीधे तरीके से व्यक्त करती है, उसे समग्रता में देखती है और अपने काव्य-कथ्य को साथ लिए चलती है।' (पृ.1)

वरिष्ठ कवि नंद चतुर्वेदी की कविताओं में सामाजिक अंतरंगता केन्द्रीय तत्व रहा है। नंद बाबू ने पांच दशकों से भी अधिक लम्बी काव्य-साधना में समय व समाज के विविध पक्षों को कविता की नजर से जांचा परखा है। इन कविताओं में हम समाज की चिंताओं, आस्थाओं एवं सरोकारों के बहुवर्णी रंग देख सकते हैं। कुंदन माली ने 'दुख की लय के बीच' एवं 'ईमानदार दुनिया के लिए' शीर्षक से दो आलेखों में नंद जी की कविताई की मूल चेतना व विन्यास की चर्चा की है। 'मानवीय चिन्ताओं से हटने वाली कृति कालजयी नहीं हो सकती' शीर्षक से नंद बाबू का साक्षात्कार इन आलेखों का पूरक है, जो कवि की काव्य दृष्टि का खुलासा करता है। 'प्रकृति परम्परा और परिवेश की काव्यात्मक पहचान' व 'परिन्दों' से छीना जा रहा है आकाश' आलेखों से शलभ श्रीराम सिंह की कविता की चर्चा व दुनिया को एक नयी थीसिस की जरूरत है' शीर्षक से उनसे आलोचक की बातचीत किताब को खास बनाती है। यह आलोचना के समक्ष चुनौती है कि 'पृथ्वी का प्रेम गीत', 'हवस का स्वर्ग' व 'उन हाथों से परिचित हूँ मैं' आदि संग्रहों के माध्यम से काव्य जगत को नवीन दृष्टि से सम्पन्न करने वाले कवि शलभ श्रीराम सिंह की कविता की पर्याप्त चर्चा नहीं हो पाई। परम्परा एवं आधुनिकता के बीच सेतु रखने वाले युयुत्सावादी चिंतनधारा के इस प्रखर किंतु मितभाषी कवि के लिए नागार्जुन ने कहा था, शलभ से हिन्दी कविता का एक नया गोत्र प्रारम्भ होता है। उन्हें किसी मठ में शरण लेने की आवश्यकता नहीं है।' संभवतया इसी कारण हिन्दी के खेमेबन्द मठाधीशों ने उन पर ध्यान देने की जरूरत नहीं समझी, ठीक वैसे जैसे हमारे समय के बड़े कवि श्री नरेश मेहता को जानबूझकर अनदेखा किया गया। कहना न होगा कि माली जी ने उनकी कविता-यात्रा का गंभीरता से मूल्यांकन करने का प्रयास किया है। उनका अभिमत है कि 'शलभ श्रीराम सिंह की कविता मानवीय गरिमा, उसकी अस्मिता, उसकी संस्कारशीलता और इतिहास बोध की परम्परा की कविता है' (पृ. 27)

कुंदन माली का आलोचक रचनाकार की बजाय रचना का ध्यान केन्द्रित करता है तथा परम्परा व परिवेश के आलोक में किसी कवि की रचनात्मकता का विवेचन करता है। इस विवेचन में हम जगह-जगह उनके विस्तृत अध्ययन व गहन समझ की झलक पाते हैं। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की काव्य चेतना पर चिन्तन करते हुए कवि का मन्तव्य है कि 'मनुष्य की गरिमा, अस्मिता और जिजीविषा को बनाए रखकर उसके जीवन संघर्ष को निरुपित करना ही कवि (तिवारी) की मुख्य चिंता है और उसका मूल रचनात्मक सरोकार भी। (पृ. 56)

वरिष्ठ कवि नंद किशोर आचार्य की कविता में गहन जीवन सम्पृक्ति, आस्था व प्रेम के स्वरों की पहचान करते हुए आलोचक ने उनकी कविताओं के कई अनछुए पहलुओं को उद्घाटित करने का जतन किया है।

किताब के अन्य आलेखों में डॉ. प्रकाश आतुर, चन्द्र प्रकाश देवल, हरिराम मीणा, श्रीकांत जोशी, कुमार अम्बुज, कात्यायनी की कविताओं की संवेदना व सरोकारों पर गंभीरतापूर्वक प्रकाश डाला गया है। इन आलेखों में काव्य-संसार की प्रवृत्तियों के सम्यक विश्लेषण के साथ आलोचक की सधी हुई भाषा ध्यान खींचती है। भाषिक स्तर पर यह सावचेती इस किताब को विशिष्ट बनाती है और माली को समकालीन आलोचकों से अलगाती है।

-डॉ. मदन गोपाल लढ़ा
144, लढ़ा-निवास, महाजन, बीकानेर

हँसो भी... हँसाओ भी...

लेखक : हलीम 'आईना', **प्रकाशक** : सुबोध पब्लिशिंग हाउस, कोटा **पृष्ठ संख्या** : 92 **मूल्य** : ₹ 150.00 **संस्करण** : 2013

समीक्ष्य पुस्तक 'हँसो भी..हँसाओ भी..' व्यंग्य शिल्पी हलील 'आईना' की रचनाओं का संकलन है जिसमें 56 रचनाएं शामिल है। व्यंग्यकार के कलम की धार का पैना होना पहली शर्त है और इन अर्थों में हलीम 'आईना' की व्यंग्य शैली में जैसे जादू भरा है । इन कविताओं की विषय-वस्तु और प्रेरक परिस्थितियों का गठन और कल्पनाओं के आधार पर नहीं वरन वास्तविकता के आधार पर होता है। इन हास्य-व्यंग्य कविताओं में कहीं भी चुटकुलों का आधार नहीं बनाया गया है, शब्दों में कहीं चुभन तो है पर यह चुभन मीठी मीठी है और मीठी चुभन किसी को बुरी नहीं लगती, बल्कि गुदगुदाती है।

इस पुस्तक की व्यंग्य कविताओं का उद्देश्य पाठकों को हँसाना और गुदगुदाना तो है ही साथ ही ऐसे धरातल पर भी ला देना है जहाँ समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने का प्रयास कर सकें। यह मात्र व्यंग्य कविताओं का संकलन नहीं अपितु एक दस्तावेज की हैसियत रखता है। जब कभी लगे आप किसी तनावमय पीड़ा से गुजर रहे हैं तो इस काव्य संग्रह को पढ़ लीजिए, बड़ा सुकून मिलेगा।

कविता 'पतंगबाजी' में पतंग की डोर और नारों का गठबन्धन बहुत खूब है। 'बुरा न मानो होली है' के माध्यम से घूसखोरों, बेरहम डॉक्टरों (जो गुर्दे उड़ा लेने से भी नहीं चूकते हैं) दहेज लोभियों, कुर्सी-प्रेमियों आदि पर कहीं तीखे तो कहीं बारीक व्यंग्य किए गए हैं। 'एडवांस' कविता तो लाजवाब है। आज का इन्सान इतना एडवांस है कि बुराई को शैतान के कन्धों पर डाल कर अपना पल्ला झाड़ लेता है। 'आनन्द कहाँ खो गया', गुड़ गोबर', बाजार-भाव, ए.पी.ओ. होने का मज़ा', 'जेब कटी सभ्यता'... आदि इस अनूठे संग्रह के ऐसे नग हैं जिन में से किसी एक का चयन कठिन कार्य है। इन कविताओं को बार-बार पढ़ने का मन होता है। कविता तो कविता है, भावनाओं की कोख से उसका जन्म होता है। इस संग्रह में भावनाएँ भी हैं और हास्य भी। कुल मिलाकर 'हँसो भी..हँसाओं भी..' हर दृष्टि से एक श्रेष्ठ काव्य संग्रह है।

-अरनी रॉबर्ट्स
पोस्ट ऑफिस रोड, भीमगंज मंडी, कोटा

प्रतिध्वनि

गांधी का रामराज्य और राम का चरित्र

पिछले महीने, 30 जनवरी 2015 के दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का बलिदान दिवस शहीद दिवस के रूप में मनाकर कृतज्ञ राष्ट्र ने बापू को श्रद्धा के भाव-सुमन अर्पित किए। प्रात: 11.00 बजे दो मिनट के मौन धारण के साथ ही जगह-जगह प्रार्थना सभाएं आयोजित कर विभिन्न धर्मों की प्रार्थनाएं एवं बापू के प्रिय भजन गाए गए। गुजरात के प्रसिद्ध भक्त नरसी मेहता रचित भजन 'वैष्णवजन तो तेने कहिए जै पीर पराई जाने रै' बापू के प्रिय भजनों में सर्वोपरी था। प्रार्थना में रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम/ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सम्मति दे भगवान/वेद पढ़ो चाहे पढ़ो कुरान, इन दोनों में तेरा नाम की समेवत प्रस्तुति दिल को छू लेने वाली होती है।

गांधीजी भारत में सामाजिक विकृतियों से मुक्त आदर्श समाज एवं पाप व ताप मुक्त रामराज्य की कल्पना करते थे। उनके द्वारा चिह्नित सात सामाजिक विकृतियों का प्रकाशन यंग इण्डिया समाचार पत्र के 22 अक्टूबर 1925 के अंक में हुआ था। गांधीजी द्वारा चिह्नित ये सात सामाजिक विकृतियां इस प्रकार हैं:- 1. चरित्रविहीन शिक्षा। 2. श्रमविहीन सम्पति। 3. नैतिकताविहीन व्यापार। 4. मानवताविहीन विज्ञान। 5. त्यागविहीन पूजन। 6. विवेकविहीन भोगविलास। 7. सिद्धान्तविहीन राजनीति।

महात्मा गांधी द्वारा कल्पित रामराज्य के दर्शन रामकथा में होते हैं जिसका अहसास श्री रामायण एवं श्री रामचरितमानस का अध्ययन करने पर होता हैं। रामराज्य को परिभाषित करते हुए श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी श्री तुलसीदास जी ने लिखा है :- **दैहिक-दैविक-भौतिक तापा।**

रामराज्य ते काहू न व्यापा।।

श्रीरामचरितमानस निसंदेह भारतीय जनमानस में लोकप्रिय एवं कदाचित सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला ग्रंथ हैं। गहराई से देखें तो यह कोई धार्मिक ग्रंथ न होकर एक सामाजिक ग्रंथ है जिसमें राम कथा के बहाने 'हमें क्या करना और क्या नहीं करना चाहिए' की व्यावहारिक शिक्षा (उपदेश नहीं) मिलती है। व्यावहारिक शिक्षा इसलिए क्योंकि मानस में जो कहा गया है, वह राम के जीवन पर व्यावहारिक रूप से घटित होने के बाद कहा गया है। इस प्रकार वह प्रयोग द्वारा प्रमाणित है; अत: वैज्ञानिक है। सम्पूर्ण राम कथा एक सामान्य सामाजिक घटना और आम आदमी के साथ गुजरने जैसा वृतान्त है। राम कब स्वयं को भगवान कहते हैं ! माता-पिता की आज्ञापालन, गुरु आज्ञा के आगे नतमस्तक, गुरु के इशारे का इन्तजार, किसी काम में विजय का श्रेय गुरु व माता-पिता के आशीर्वाद को देना, युद्ध से पूर्व रावण की समझाइश, समुद्र पार करने से पूर्व तीन अहर्निश प्रार्थनावत रहना जैसे उदाहरण राम की विनम्रता को प्रमाणित करते हैं। यदि वे स्वयं को भगवान मानते तो भला ऐसा क्यों करते? और अधिक कहें तो समय-समय पर अनुज लक्ष्मण के आक्रोश को भी समझाकर रोकना, कागभुषण्ड एवं गिलहरी जैसे प्राणियों के प्रति आदर एवं आभार भाव, शबरी को सम्मान, शरणागत की रक्षा और एपेक्स रूप में कहें तो मृत्युशैया पर पड़े रावण के पास शिष्यवत भाव के साथ लक्ष्मण को भेजकर हितोपदेश ग्रहण करने के लिए कहना राम के चरित्र की उत्कृष्ट विशेषताएं हैं। ऐसा सामान्य मानव नहीं, कोई महामानव ही कर सकता है। दैविक गुण सम्पन्न महामानव ही कदाचित कालान्तर में भगवान कहलाते हैं। इस आधार पर राम भगवान हैं। मगर स्वयं राम के द्वारा यह कहना तो रहा दूर, कहीं तिल भर ईशारा तक नहीं करते कि वे कोई भगवान है। लंका विजय एवं सीता को फिर से प्राप्त करने का सम्पूर्ण श्रेय राम सुग्रीव एवं उनकी वानर सेना को देते हैं जिसके सिरे हनुमान हैं। उनकी यह विनम्रता धैर्यपूर्वक मानस का पाठ करने पर ही जानी जा सकती है।

राम कहीं किसी को उपदेश देते नजर नहीं आते, बल्कि उनका जीवन स्वयंमेव सिखाने वाला, शिक्षा देने वाला प्रतीत होता है। शिक्षा और उपदेश में अन्तर है। शिक्षा वही व्यक्ति दे सकता है जिसने पहले उन्हें स्वयं के भीतर में उतार लिया होता है। वह शिक्षक होता है। वह महानता के पथ का अनुगामी होता है। इसलिए वह महान होता हैं। उपदेशों को लेकर कई बार कटाक्ष करते हुए कहा जाता है- उपदेश मत दो ! अपने उपदेश अपने आप रखो !! पर उपदेश कुशल बहुतेरे !!! शिक्षा को लेकर ऐसे कटाक्ष की कल्पना भी नहीं कर सकते। कारण शिक्षा जीवन से जुड़ी एवं जीवन को जोड़ने वाली तथा उसमें रंग एवं खुशबू भर उमंगित कर देने वाली होती है। शिक्षा वास्तविक जीवन का अर्थ बताकर मार्ग प्रशस्त करने वाली होती है। अत: कहा जाता है कि फलां से सीखो, फलां शिक्षा ग्रहण करो आदि-आदि। राम उपदेशक नहीं, शिक्षक हैं। अत: उनका सम्मान है। यह राम का शिक्षक रूप है। इसी प्रकार प्रत्येक शिक्षक भी अपने आदर्शों एवं सद्व्यवहार और सद्आचरण के बल पर राम बन सकता है। प्रत्येक शिक्षक में राम बनने की सम्भावना है। इस चर्चा के राम भगवान नहीं है। वे दशरथ-कौशल्या के लाल हैं। यही दशरथनन्दन बड़े होकर अपने आदर्शों एवं गुणों के कारण भगवान बन जाते हैं। कौशल्या पुत्र राम कभी हुवे होंगे, आज नहीं है। मगर दशरथ के घर जन्म लेकर अपने महान कार्यो के बल पर आदर्श बने भगवान राम हमारे चित में चिर मौजूद हैं। राम एक अहसास है। राम एक सम्बल एवं सहारा है जो गुणों एवं आदर्शों का पर्याय है।

हम शिक्षकों को राम कथा में निहित राम के चरित्र को बारीकी से समझना चाहिए। जीवन का कोई भी पहलू ऐसा नहीं मिलेगा जिसे राम जीवन में देखा नहीं जा सकता। राम-जीवन तो एक प्रयोगशाला है जिसके प्रमुख प्रयोगधर्मी राम ने जीवन के एक-एक पहलू को लेकर उसमें आदर्शों का निरूपण किया है, तथ्य व निष्कर्ष उद्घाटित किए हैं। उनके ये आदर्श हमारे लिए बिना कोई मोल चुकाए अपनाने के लिए खुले पड़े हैं-लाल पड़ी मैदान में। ये मर्यादाएं हैं, बंधन नहीं। मर्यादाएं पालन करने के लिए होती है और उनका पालन करने पर सुखद अनुभूति होती है। इन्हें अंगीकार करने पर ही राम एक सामान्य पुरुष से मर्यादा पुरुषोत्तम राम कहलाए।

गांधीजी शिक्षा का अहम् उद्देश्य विद्यार्थी के चरित्र का विकास करना मानते थे। चरित्रविहीन शिक्षा एक सामाजिक बुराई है, पाप हैं। उनके मतानुसार शिक्षा यदि चरित्र एवं सदाचरण का पाठ नहीं पढ़ा सके तो वह शिक्षा नहीं कही जा सकती। वह मर्यादाओं का मार्ग दिखाकर उस पर चलने का साहस पैदा करने वाली होती है। **शिक्षा (साधन) और जीवन निर्वाह (साध्य) दोनों महत्वपूर्ण हैं। गांधीजी के मतानुसार साधन और साध्य दोनों पवित्र होने चाहिए।** शिक्षा यदि कौशल विकास करती है तो उस कौशल से किए जाने वाले सम्प्राप्ति प्रयास भी पवित्र होने चाहिए। यह सब शिक्षकों के प्रयासों पर ही निर्भर करता हैं। आइये, हम अन्त: अवलोकन करते हुए स्वयं अपने से संवाद करें। अपना आत्म निरीक्षण व विश्लेषण करते हुए राम बनने का प्रयास करें जो उनके द्वारा बताए आदर्शों का अनुशरण करने से सम्भव हो सकता है। महात्मा बुद्ध का आत्म दीपो भव: संदेश भी तो आखिर यही कहता हैं।

-ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.
opsaraswat58@gmail.com

शिविरा पत्रिका (मासिक) : फरवरी 2015 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © कार्यकारी सम्पादक : ओमप्रकाश सारस्वत, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।